Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
6608
Price-14/-

तुलसीशब्दार्थप्रकाश

श्रीपण्डित सकलगुण मण्डित कवि
चक्रचूड़ामणि गोपालदासरचित

जिसमें

ज्योतिष सामुद्रिक वैद्यक से आदि ले
सकल पुराण और शास्त्रों का उचित
आशय संक्षेप में उक्त महाशयने बड़े
परिश्रम और प्रयत्न से सर्व्वोपकारार्थ रच
अजमेर के सदस्य दूर श्रीयुत दौलतराय
साहब बहादुर की आज्ञानुसार इसी
यन्त्रालय में मुद्रित हुई थी

MANDIR LIBRARY
No. 3118
JAMMOO

वही
अब यथा कृत और शुद्ध होय द्वितीयवार

स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालयमें मुद्रित हुई
नवम्बर सन् १८७४ ई.

1826
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6608

891.43

G 46 T

Gopal Das

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Price-14/-
6608

तुलसीशब्दार्थप्रकाश

श्रीपण्डित सकलगुण मण्डित कवि
चक्रचूड़ामणि गोपालदासरचित

जिसमें

ज्योतिष सामुद्रिक वैद्यक से आदि ले
सकल पुराण और शास्त्रों का उचित
आशय संक्षेप में उक्त महाशयने बड़े
परिश्रम और प्रयत्न से सर्वोपकारार्थ रच
अजमेर के सदस्य दूर श्रीयुत दौलतराय
साहब बहादुर की आज्ञानुसार इसी
यन्त्रालय में मुद्रित हुई थी

MANDIR LIBRARY
No. 3118
JAMMOO

वही
अब यथा कम और शुद्ध होय द्वितीयबार

स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालयमें मुद्रित हुई
नवम्बर सन् १८७४ ई.

1826

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुलसी शब्दार्थ प्रकाश लिख्यते

अथ मंगला चरण

दोहा

गणपति वासी शिव उमा भरत लषण सियराम ॥ रिपुहन हनुमत सुगुरु रवि कविहिकौं परनाम ॥ १ ॥ प्रथम जो भगवत चरणमें नमस्कार अरु ध्यान ॥ तीजो आसिर्वाद हित ग्रंथन के मत जान ॥ २ ॥ जब जान्यो भव भाव को भवन भरोसो भूर ॥ वारह वारह बानहे गणव आदिलव सूर ॥ ३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सुरन के शीस मणि गुण गणपति गिरा गरिमा कीगिरि शिवा शिव सुख धाम है ॥ भरत भरैगे मेरे भाव के भवन स्वच्छ लक्षण लषण सीताराम मनो काम है ॥ रिपुहन हनुमत रिपुहरिवे को करिवे को कृपा गुरुरवि अभिराम है ॥ ध्यान जोग एइ इनही के आसिर्वाद को चाहे यातें कीन्हो इनही को प्रथम प्रनाम है ॥ ४ ॥ संख्या हेतु निरूपण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दूजे द्वादश भक्त जे तीजे द्विज द्विजराज ॥ जिन्ह की कृपा कटाक्ष ते सिद्ध होय शुभकाज ५ ॥ संख्या शब्द गुह्यथल अरु लछमन श्रीराम ॥ वेद त्रयी त्रैगुन त्रिपुर पूरहिं गेमन काम ॥ ६ ॥ तिनमे तुलसीदास के पद पंकज सुखरास ॥ रसिक मधुप मन सुख लहत जय गुपाल जनखास ॥ ७ ॥ दास आस पूरन सही ह्वै है मन विश्वास ॥ हीकरि राम गुलाम सो कोन भयो गुनरास ॥ ८ ॥ ॥ ग्रंथ हेतु ॥ ॥ संवत श्रुति मुनि नाग ससि १८७४ मार्गशीर्ष शुभ मास ॥ विंध्याचल के दास फल पायो अधिक हुलास ९ ॥ शहर सुमि रजापुर प्रगट देत जगत उपदेस ॥ संत सुराम गुलाम वर वरनो तुलसी वेस ॥ १० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वेस वर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विप्रको सुवंस तामैं अंस पात्र सुमति प्रशंस मानो गुन गन
धाम है॥ विद्या विनै समशील सुंदर सयान पको सकलको
लिकै सवांसो सीता राम है॥ ज्ञान ध्यान धरम दया को खा
न प्रीति मान जप गुपाल जिन को तो पूरो मन काम है॥
रामके हजूर तुलसी को जाइ नाम है प्रगट गनेश गंज राम
को गुलाम है॥११॥ ।।दोहा।। ।।ललकि लह्यो तिन्हको द-
रस जयगुपाल जन दीन॥ जिनके दरस प्रभावते मूढो हो
त प्रवीन॥१२॥ उदी वृत्ति मन माहिं अति उनके दरस प्र
भाव॥ श्रीमत तुलसी दासके प्रगट ग्रंथके भाव॥१३॥ ति
नके शब्द अनेकले और अनेक प्रवीन॥ भाषामय पद्मी
य इक कीजे ग्रंथ नवीन॥१४॥ ।।ग्रंथ प्रसंग।। ।।निज बु
द्धिबल भल हो नहीं रचना रचित ललाम॥ शुभ शब्दार्थ
प्रकाश है तुलसी आदि सुनाम॥१५॥ सुथा शब्दको सरि-
त पति वसुधा विलस्यो आय॥ सो सारदकी सुधरई ली
न्हो ग्रंथ बनाय॥१६॥ तिन्हके मनके रोगको औषधि लि
ख्यो बनाय॥ मिले जोग जो और तन तनको रोग नसाय
१७॥ सुजन वेदको संग करि भेषज दृढ विस्वास॥ तीर्थ
पुराण प्रसिद्ध है श्रीकमला पति व्यास॥१८॥ आसव है
विस्वास दृढ जा शुभ भाव प्रकाश॥ विप्रवास छिति जल
पवन जोहै अनल अकाश॥१९॥ राम नाम मन काम म
द सकल सुकृत सुख धाम॥ नाम धर्म धन धाम तज भ-
जु मन आठो याम॥२०॥ प्रणाव रूप श्रीरामके तीन वर्ण
सुख रास॥ तातें मैं या ग्रंथके किये तीनि परकास॥२१॥
संख्या बहुतिक वस्तुकी प्रथम प्रकाश प्रकाश॥ कथा भा
गमे भाग वस भयो भावको भास॥२२॥ लिख्यो दुतीय प्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काशमें शब्दनको सुनि अर्थ ॥सोविपरीत सुधारि हैं तिन्ह
के सुभग समर्थ ॥२३॥गुरुस्वल समुझब कठिन निजम
ति हो तनबोध ॥तातें द्वितिय प्रकाश रुचि रच्यों सन्त सु
ख सोध ॥२४॥मैं चोंदी काहं सिंधु यह कैसोकरि पाऊं पार
मति जहाज मनगति सगन राम नाम कंडहार ॥२५॥सु
जन सुमति लखि वर विनय बहुति कृपा उर धारि ॥बिग
री सकल सुधारिकी धरियो हृदय मझारि ॥२६॥मैंन च
तुर गुन गुन रहित सहित अर्थ मर्याद ॥ऐसम अनुचर
को समझ दीजो आशिर्वाद ॥२७॥तमुझि सुधाई रीझि
हैं सज्जन सन्त समाज ॥भाषा पदको रसिकजे तिन्हहि
भयो सुख साज ॥२८॥तुलसी शब्दार्थ एहि ये चितहै दे
खे बोद्ध ॥तुलसी कानको अर्थ को वाहन जोग सो होद्ध
२९॥N॥कविवर्नन॥N॥अब कवि कुल वर्नन करौं बाल
मीक मुनिराज ॥मरा मरा जपि मूढ़ए भए सुकवि सिर
ताज ॥३०॥सो महिमा रघुवीर की समुझि परी निरधार।
याते उनहीं को बहुरि वरनि वारहि वार ॥३१॥N॥सिद्धान्त
प्रार्थना॥N॥व्याध निषाद सुगीध पति हो सेवरी के नाथ॥
चरन सरन आरत हरन कारन चहौं गुनगाथ ॥३२॥मोस
मान लिहु काल मे अधमा धम कोउ नाहि ॥अब दीजे मेरे
गरे अधम उधारन वांहि ॥३३॥मतिको हीन मलीन मे वि
ये कठिन अघ पीन ॥षटको वस भटकत फिरौं हटको हू
है खीन ॥३४॥ अधम उधारन नाम जो सचो तो इत हेर
नाहित तेरे विरदमें परिहै अलिही फेर ॥३५॥फेर परेगो
विरदमें रद परि जैहै नाम ॥दीना नाथ अनाथ हित नि
र्धन के धन राम ॥३६॥तन मन धनकी प्रीति की रीति रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ति शुभ कारि॥सरस सुधारन हार जिहि फासि नरी ऋषि
नारि॥३७॥ विश्राम स्थान ॥लहर वहर हर की पुरी क
शी सहर निवास॥ देवन को हरा नगरा वृद्ध कालके पास
३८॥तिहि वरणौ वृन्दा विपिन राधा कृष्ण विहार॥गो
रस को वट पार हूं ह्यांतो मोला भार॥३९॥ तनय तासु
सुख वासजन जयगुपाल आधीन॥जिन्ह की ह्वी यह
ग्रंथकी रचना सुरुचि नवीन॥४०॥त्रिजग त्रिगुन चैका
लको जीव जाल हरमाल॥पद वंदन करिकै वाहन जय
जय जय गोपाल॥४१इति॥

॥अथ प्रथम प्रकाश प्रारंभः॥

अब सियराम हि सुमिरि हिय उमा महेश मनाय॥वर-
णन आदि प्रकाश कौं वाणी होहु सहाय॥१॥यहि प्रका
शमे भेद नव देखि परहि सज्ञान अष्टादश लौं दंतु व
हु प्रथमहि कहत वखान॥२॥दुतिय भेद अस्तुदिवा म
य त्रितिये आन्हिक होइ॥चौथे सामुद्रिक समुझि पं
चम वैद्यक सोइ॥३॥षष्ठ सुकाल ज्ञान है सप्तम सारी॥
त विशेषि॥ज्योतिष अष्टम कहत पुनि पिंगल नवम स
लेषि॥४॥गनती जगत विशेष है वस्तु अनेक प्रकार॥
इहां प्रयोजन समुझिकै छिन मै कियो निरधार॥५॥इ
ति

अथ एकादि वस्तु गणना॥१॥

एकहि श्री गणपति दशन रूप भूमि अस चंद॥ छत्रादि
ष्टि पुनि चक्र रवि एक सच्चिदानंद॥६

अथ द्वै वस्तु ॥२॥

द्वैक पक्ष अरु मूल परि मान गचर दलेष निडंवावि
निर्गुन सगुन॥२॥ द्वैही रूप अनादि प्रभु निर्गुन सगुन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख धाम॥ थरिहि न सगुन चरव रस नामजे सियराम ७
क्षर अक्षर। लोक मांझ है पुरुष हैं क्षर अक्षर बहु भाय॥
क्षर शरीर कौं कहत हैं अक्षर जीव गनाय॥८॥ मूरत अ
क्षत॥२॥ मूरत और अमूरत नहि व्यक्ता व्यक्तानु जानु॥ ॥
यथा॥ पृथ्वी जल अरु तेज ए मूरत व्यक्त प्रमानु॥९॥ ।
जो अमूर्त अंबर पवन दोउ अव्यक्तहि लेखि॥ पांचहु
मूरत ब्रह्म को समुझहु बुद्ध विशेषि॥१०॥ ज्ञान विज्ञान
रचि दश जानत ब्रह्म कौ तौलौं कहिये ज्ञान॥ ब्रह्म आपु
हीकौं लखैं सो विज्ञान निधान॥११॥ विद्या अविद्या॥
ईश्वर की संबंधता सोई विद्या जानु॥ जीवन की अल
यग्यता ताहि अविद्या जानु॥ १२॥ व्यष्टि समष्टि॥२
एकहि लिंग स्वरूप जो व्यष्टि मकार अनेक॥ व्यष्टि
लिंग से होत है होत समष्टि सुरेख॥१३॥ कूटको ।
स्वामी॥ माया पाश्चिक दूसजो अंतर्यामी सोइ॥ स म
ष्टिलिंग अभिमानको हिरन्य गर्भ भयो जोइ॥१४॥ तैजस
स्वामी व्यष्टिके विचै थूलसरीर॥ देह समष्टी को जुप
ति है विराट सुनु धीर॥१५॥ देवासुर के दिन रैन॥ ३॥
उत्तर दक्षिन रैन है मकार वार्वाते जानि॥ देवन के दिन
रैन ए असुरनि उलटे मानि॥१६॥ बुद्धि॥ ३॥ स्मृति
अनुभव बुद्धि है संस्कार जन्यादि॥ तेहि विनु दूजी जा
निये कहैं तर्क मतवादि १७॥ शब्द॥ ३॥ ध्वन्यात्मक वर्णा
त्मक दोय शब्द प्रकार॥ प्रथम शब्द बाजा गनौ पुनि वा
णी विस्तार॥१८॥ ६१॥

अथ तीन वस्तु

३॥ अंग त्रयामय इक रमि रह्यो दशरथ नंदन राम॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परस राम बलिराम हित तिनहि कारौं परनाम॥१॥०॥
ब्रह्म माया जीव॥०॥ब्रह्म माया जीव त्रय लघु अना
दि पर बीन॥ मायाहू प्राधीन जेहि जीव चराचर कीन
२॥०॥त्रिदेव ३॥०॥ब्रह्मा विष्णु महेश ए तीन देव हैं
सोइ॥उत्पति पालन संहरन रूप त्रिविधि इक होइ॥
३॥०॥त्रिपुटी॥०॥३॥कर्त्ता क्रिया सुकर्म ये ज्ञाता ज्ञा
न सुज्ञेय॥भोग्य भोगता भोग यह ध्याता ध्यानसुध्येय
॥४॥अध्यात्म अधिभूत पुनि तीजे हैं अधिदेव॥
इंद्रइंद्रियनके विषय देव चतुर्दश भेव॥५॥त्रिगुन॥३
सत रज तम ए तीन गुन जानहु चतुर प्रमान॥अवस
भाव वृत्तिहि कछू इनकी कौं बषान॥६॥त्रिगुन सभा
ववृत्ति॥३॥सवालवालु को ज्ञान अरु बुद्धि विमल ज
व होइ॥तबै सतोगुन जानिये कहत सयानेलोइ॥७
लोभलिये व्योहार जो सो रज गुनि पहिचानि॥आल
स निद्रा विकलमनमोहतमो गुन जानि॥८॥०॥त्रिगु
न प्रकार १०॥०॥देशकाल परजा करम जन्म ध्यान
जल मंत्र॥संस्कार मंत्र जप दशत्रय गुन के पंथ॥९
॥यथा चक्रं त्रिगुणा हारः ३॥०॥सुंदर थिर अति चीं
कनो सोकप्रिय आहार॥आयु सत्य अरोग्य बल प्री
ति बढावन हार॥१०॥दाहक रूखो उष्ण वाहु तीक्ष्ण
खाटो खार॥सोग रोग दुख देत है राजस प्रिय आहार
११॥जेहि राधे पहरा गयो अरु जो बसी बसाय॥जूठो और
पवित्र नहिं भोजन तामस खाय॥१२॥०॥यज्ञ ०॥ल
रिवविधान जाको जिये छांड़ि फलनकी आस॥समा
धान थिर होयमे सात्विक यज्ञ विलास॥१३॥वारि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देस	सात्विक	राजस	तामस
काल	एकांत	बाजार	द्यूतादि
पूजा	ब्रह्ममुहूर्त	अर्द्धरात्रि	प्रदोष
कर्म	नृवृत्ति	प्रवृत्ति	दुराचारी
जन्म	नित्य	कामिक	हिंसादि
ध्यान	वैष्णवादि	शाक्ति	हठयोगी
जल	विष्णु	कामिनी	पशु
तंत्र	गंगाजल	गुलाबादि	मदिरादि
संस्कार	निर्वृत्ति	प्रवृत्ति	पाखंड
मंत्रजाप	ज्वालाशोधन	देहशोधन	गृहशोधन
	प्रणवादि	काम्य	फल

कै फलकी कामना और दंभ को भाव॥ऐसे जे यज्ञ हि
करैं तेहैं राजस दाव॥१४॥ बिन दामहिं बिन दक्षिणा
बिना मंत्र विधि हीन॥ बिनु श्रद्धा यज्ञहि करैं तेहैं तामस
लीन॥तप स्थान॥ ॥श्रद्धासों नर तप करै ताकी तीनि
सुभांति॥पाल इच्छा त्यागी करै सोई सात्विक कांति॥१६॥
पूजा आदर मान पुनि और दंभ को काज॥सो तप राजस
वाहन है चंचल छनक समाज॥१७॥ देहहि दुःख दारि
मूढ़ता हठसों जो तप होइ॥परको कष्ट दियावपुं तामस
तप है सोइ॥१८॥ ॥दान॥३॥ ॥दान देइ उपकार
बिनु पात्र विप्रको देषि॥देस काल को जानि वो सात्विक दा
न विशेषि॥१९॥की जै जो उपकारसों फलकी इच्छा मा
नि॥दीजै जो अनिकष्टसों तासो राजस जानि॥२०॥वि
[illegible] चाहैं दान॥बिनु आदर सेवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रके तामस ताहि बखाम॥१॥ ज्ञान॥ ३॥ जो करि देखे जीव
मैं अविनासी यहि भाय॥ न्यारे मैं न्यारो नहीं सात्विक
ज्ञान बताय॥ २२॥ नाना भाव न मेलखे न्यारो न्यारो ज्ञा
न॥ भिन्न लखे सब जीव कौं राजस ज्ञान सुमान॥ २३॥ पू
रन जानै एक मैं बिनु कारन ऐसीत॥ तत्व अर्थ बिनु अ
ल्प अति तामस ज्ञान सुनीत॥ २४॥ कर्म ३॥ संग राग अ
रु द्वेष बिनु नियत कर्म जो होय॥ तजि फल इच्छा की
जिये सात्विक कर्म सुजोय॥ २५॥ जो कीजे करि काम
ना कीथों करि अहंकार॥ जामैं भ्रमहै अति घनो सोरा
जस निर्धार॥ २६॥ पौरुष हिंसा शुभ अशुभ ज्ञानन व
चन विचार॥ जो कीजे अज्ञान तें तामस कर्म निहार
२७॥ कर्तार॥ धरि धीरज उत्साह सों संग तजे अहंका
र॥ निर्विकार सिधि असिधि सम सत्व कर्म कर्तार॥
२८॥ रागी चाहत कर्म फल लुब्धक हिंसक होइ॥ ह
र्ष सोक संयुत अशुचि राजस कर्ता सोइ॥ २९॥ सब दि
न रहै विवेक बिनु सब आरंभ सी नित्त॥ हीरण्य सासन
वेनही अरु विषादतज चित्त॥ ३०॥ थोरे दिन को काम
को बहुत लगावे वार॥ ताही सों सब कहत हैं यह ताम
स निर्धार॥ ३१॥ बुद्धि॥ ३॥ कार्ज अकारज भय अभ
य और प्रवृत्ति निवृत्ति॥ जानै बंधन मुक्ति जो सात्वि
क बुद्धि की वृत्ति॥ ३२॥ धर्म अधर्म नि को लखे कार्ज
अकारज जानि॥ जैसी है तैसी नहीं बुद्धि राजसी मानि
३३॥ जानै पापहि पुण्य करि दोनों अज्ञानी होइ॥ ल
खे अर्थ विपरीत सब बुद्धि तामसी सोइ॥ ३४॥ धीरजई
जासो इंद्रिय रोकि कै ऐंचि क्रिया अरु प्रान॥ जोग जु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्रि निहचे महा धीरज सात्विक जान॥३५॥धर्म अ
र्थ अरु काम को जो धारत है आय॥चाहे फलहि प्रसं
ग सों धीरज राजस भाय॥३६॥जो भय सोक विषाद
मद स्वप्न मांहि ठहराय॥दुष्ट बुद्धि छांडे नहीं धृति ज ता
मस कहाय॥३७॥सुख ३॥पहिले तो विष सो लगे बहुरि
अमृत सो जोय॥जो सुख सात्विक है कहो बुद्धि प्रसा
द ते होय॥३८॥इंद्रिय विष संयोग सुख पहिले अमृ
त समान॥पावे जो विष सो लगे सो राजस सुख मान
३९॥पहिले अरु पाछे जु दुख मो हित कारजु देह॥१
आलस निद्रा तें उठें ता मस सुख है एह॥४०॥वास
३॥वसै विरक्त इकांत सों सात्विक राजस गेह॥द्यूत स
मदिरालय वसे तामस वास गनेह॥४१॥पुनः॥३॥उ
द्दे जात्य है सात्वि की राजस मध्य निवास॥अध गद्दे
ति तामसा इहि विधि तिहुं के वास॥४२॥मरण॥सात्वि
क में मरि स्वर्ग लहि राजस जोनि नरादि॥तामस थावर
नर्क में भ्रमैं सुजीव अनादि॥४३॥त्रिगुण वृत्ति॥३॥१
जागत वृत्ति जु सात्वि की स्वप्न राजसी जानि॥जो सु
षुप्ति तामस तहां तुरिया ब्रह्म निधान॥४४॥पुनः सा
त्विक गुणतें बढ़त है धर्म रु होइ निवृत्ति॥अर्थ बढ़
त राजस विषें काम जु तामस वृत्ति॥४५॥इति गीता श्री
भागवते उपासना॥३॥निज सुख लहि दुख देहि परते
तामस दशसी स॥अपनो सुख राजस चहै पर वर१
जित तेतीस॥४६॥सब हित सुख दै लहहि सुख ते सा१
त्विक शिव ब्रह्मादि॥इहि विधि तीन उपासना समुझहु नि
त्य अनादि॥४७॥भक्ति॥भक्ति तीन विधि कहत हैं न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वथा इक विधिमानि॥ प्रेम लछना प्रीति पुनि सवते परेव
खानि॥४८॥ त्रिगंगा॥ मंदा किनि भागा रथी भोगावति सु
ख रासि॥ लोग॥ ३॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल पुनि तीनहु लो
ग निवास॥४९॥ गंगाके मुख्यस्थान॥ ३॥ दुर्लभ सब
हीं गंगलाभ मुख्य तीन अस्थान॥ हरि हर अह प्राग पु
नि गंगा सागर जान॥५०॥ ईश्वरको स्वरूप॥ ३॥ ऐ
श्वर्य रूप माधुर्य पुनि सौंदर्यता सुजानि॥ त्रिकांड॥ ३॥ क
र्म उपासन ज्ञान कहि वेद त्रिकांड बखानि॥५१॥ त्रिसं
ध्या॥ ३॥ प्रान्ह प्रभातहि को कहत मध्य दिवस मध्यान्ह
तीजी संध्या कहतहै सायंको अपरान्ह॥५२॥ त्रिरात्रि।
महा रात्रि शिव रात्रि है कृष्ण जन्म कहि मोहि॥ काल रा
त्रि कार्तिक दरस प्रति संवत इमि होहि॥५३॥ त्रिमत॥ ३
कहि हैं ए अद्वैत मत दुतिय द्वैत मत मान॥ तृतिय विशि
ष्टा द्वैतहै तामधि तीन प्रमान॥५४॥ पुनः॥ ३॥ प्रगट लो
क मत लोक में दुतिय वेद मन जान॥ तृतिय संत मत क
रत जेहि हरिजन अधिक प्रमान॥५५॥ त्रिकाल॥ ३॥
बीत गयो सो भूतहै कहे भविष्य जु होइ॥ वर्त्त मान जो व
र्तही तीन काल इमि जोइ॥५६॥ त्रिविधि कर्म ३॥ सं
चित अरु प्रारब्ध पुनि क्रीयमान त्रय जानि॥ यथा॥ ३॥
जन्म जन्म के कर्म जे तिनको संचित मानि॥५७॥ जिन
तें उपजी देह यह प्रारब्ध सो होइ॥ अब उपजैगे देहते
क्रिया मानहै सोइ॥५८॥ ज्ञान हृदयको होतही संचि
त कर्म विलात॥ क्रीयमान होते नहीं प्रारब्ध रहि जात
॥५९॥ प्रारब्धको स्वरूप॥ ३॥ एक सुइच्छित होतहै प
र इच्छित अरु जानि॥ अन इच्छित पुनि कहतहै प्रार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्याहि त्रय मानि॥६०॥ जीवकी देह॥ प्रथम देह कारन क
ही नाहि अविद्या जानि॥ दूजे अन्तःकरनकी सूक्ष्म दे
ह पहि चानि॥६१॥ इन दोउन मिलि सो भयो जीवना
म परकास पंच भूत को स्थूल तन पाइ कियो तहं वास॥६२
त्रिप्रीतम ३॥ उत्तम मध्यम अधम गनि पाहन रिकाता यानि
प्रीति अनुक्रम जानियै वैर व्यति क्रम मानि॥६३॥ त्रिमित्र॥
एकमित्रही मित्र पुनि मित्र मित्र को होइ॥ तीनिये शत्रु
शत्रु को तीन मित्र दुम जोइ॥६४॥ त्रिशत्रु॥ ३॥ एकमात्रुही
शत्रु पुनि शत्रु मित्र को जानि॥ तीजे मित्रनु शत्रु को ती
नि शत्रु परिमानि॥६५॥ त्रिताप॥ ३॥ दैहिक दैविक भौति
कहि तीनि ताप दुमि जान॥६६॥ त्रिदोष॥ ३॥ काम क्रोध
अरु लोभ ए तीनि दोष परिमान॥६७॥ पुनः नरकद्वार ३॥
नरकद्वार त्रय क्रोध है लोभ काम अरु क्रोध॥ देत दोष दु
ख आन महि पर आतमा विरोध॥६८॥ त्रिएषना॥ ३॥ लो
कसुत वित्तकी चहनि तीन एषना जानु॥ त्रिरोग॥ वात
पित्त कफ रोग त्रय दैहिक होत समानु॥६९॥ त्रय मादक
३॥ सुरा पान मादक प्रथम पुनि कुपात्र गृह वित्त॥ तीजे
महतियको लखै चंचल स्त्रीको चित्त॥७०॥ त्रिसूतक॥ ३
जन्म मरन अरु गहन पुनि सूतक तीन प्रकार॥ पूर्व तीन
पर सात दिन जानु गहन निर्धार॥७१॥ त्रिविधि समीर ३
सीतल मंद सुगंध ए त्रिविध समीर बखान॥ चंद्र कला ना
स॥ ३॥ जोति षया अरु कौमुदी चंद्रिकाहि पहि चानि॥
७२॥ त्रिनायक॥ ३॥ स्वकिया व्याही नाय का परकीया पर
वाम॥ सेसामान्या नायका जाके धनसो काम॥७३॥ धीरा
दि भेद॥ ३॥ गोप कोप धीरा कौरे प्रकट अधिक ए कोपा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लहुन धीरा धीरवो प्रकट कोप अरु गोपा॥७५॥त्रिविध
मान॥३॥सहजें हांसी खेलमें विनयवचन सुनि कान ॥
पाय परे पियको मिटै लघु मध्यम गुरु मान॥७५॥त्रिना
यक॥३॥स्वकिया परिसों पति कहै परकीया उप पति॥
वैशिक नायक की सदा गनिका हीसों रति॥७६॥अशेष
कारनव्य॥३॥ऋतु अरु रिपु पुनि व्याधिको शेष रखो म
ति भाय॥फेरि बढेते कपट बहु अरु काज विन साय ॥
७७॥तीनकीगति॥३॥गति स्वामी है त्रियनको नदि गति
सागर आहि॥शत्रुनते पीड़ित जु नर तिनकी गति नरना
ह॥७८॥तिनको दुर्द्दमा॥३॥नित रोगिन को सुख कहां
कहुँ भोजन बहु भोजि॥जाकी त्रियनहिं दुष्ट तेहि क
ह यह उत्सव ओजि॥७९॥तत्वम् असि तीनो पदको
अर्थ॥३॥तत्वत ईश्वर सों कहत त्वंपद जीव बखानि॥
असि पद ब्रह्म अलिप्त है जामें दोऊ मानि॥८०॥तत्पद
मानो सिंधु है त्वंपद बुंद स मानि॥असि पद मानो दु
हुन मैं तारि एक करि जान॥८१॥तजो ईश की ईशता
जीवनको अविवेक॥तीनो पदको अर्थ जहं तत्व मशी
है एक॥८२॥त्रिविधि कवि॥३॥उत्तम मध्यम अधम क
वि उत्तम हरि रस लीन॥मध्यम मानत मानुजनि दोषहि
अधम प्रवीन॥८३॥त्रिविधि श्रोता॥३॥उत्तम मध्यम
लघु कहत ज्ञानी उत्तम जानि॥मध्यम कहिये उभयकी
कर मदिलघु करि मानि॥८४॥पुनः॥३॥सार ग्रहहैं स
पसम चलनी गही असार॥नलकी सम दोऊ रहित ※
श्रोता तीनि प्रकार॥८५॥पुनः॥३॥श्रोता मनसों जो सुनै
श्रोताकेरि सुवान॥श्रोता सोई रहै सुनत तीविहु स विख्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न॥८६॥जेहि सुनि होइ विराग नहिं लोभ प्रसङ्ग सुखचि
त॥ वृथा पाठ सो जानिये कोवेकी सी वृत्त॥८७॥श्रोता
जानत धर्म अरु श्रोता तजत कुबुद्धि॥श्रोताही को होत
है ज्ञान मुक्ति अरु सुद्धि॥८८॥वक्ता कवहुन हूजि
ये श्रोता रहिये नित्त॥सारा सारा विचारिकै निश्चल
कीजे चित्त॥८९॥जीभ दई है एक प्रभु दोय दिये हैं
कान॥एक कहै अरु दो सुनै कहिये ताहि सुजान॥९०
॥२५१॥इति॥

अथ साढ़े तीन वस्तु॥ ३॥

शास्त्र जन्यलौ विवेक सहित सुज्ञान अलौ विवेक सार।
तीनलोक त्रयकाल पर साढ़े तीन विचार॥१॥विना प्र
ङ्ग काया भरे मिलत न श्री भगवान॥यातें पंच प्रधान
है साढे तीन महान॥२॥स्नान ३॥सावस मौनी मवार
पुनि मधुकी परिवा जानि॥नवी चौदशी तीसरी तुला
कृष्ण की मानि॥३॥श्रावण यूती रक्षिका आधी तावी
हानि॥या क्रम तें दन चारिमें साढे तीनि प्रमानि॥४॥
ॐप्रणव मात्रा॥३॥सुचि ह्वै सुमिरो प्रणवको रूप अनूप
उपाय॥प्रथम अकार मकार पुनि उर उकार उद्गीय॥
५॥आधोविंदु विसर्गहै साढ़े तीन समेत॥प्रणव रूप र
घुवंस मणि विये वने गो हेत॥६॥पुनः॥माये साढे
नकार पुरुष प्रणव को रूप॥जगत प्रणव मय देखि
यत व्यापि रह्यो हरि रूप॥७॥पुनः॥तिलक त्रिरेख
सुदेखियत पुंड कहावत जोइ॥तिर्यग जुई अरु भेद
सब प्रणव मानिये सोइ॥८॥रामा दिकके यंत्र जे तेऊस
ढ़ेतीनि॥एक हि तीन त्रिकोणते जानत सकल प्रवीन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एकौ पुनः मात्रा॥३॥ जननी जाहर जगत में साढ़े तीन सु
जान॥ ध्रुव की मातु सुनीति इक दुतिय सुमित्रा मान॥१०॥
तीजी मा मंदालसा अलर एक पूरज साथ॥ जननी गोपी
चंद की मैनावती सु आथ॥११॥ पुनः॥३॥ तुला थार भार
थ प्रगट श्रवण भगीरथ तीन॥ जगत जनक जग कहत
है आथे राम प्रवीन॥१२॥ क्रिया कियो जेहि तातके ता
ते आथी बात॥ गोद्विज सुरहित मिलि भयो पूरो पूर ल
खात॥१३॥ वज्र॥३॥ चक्र सुदर्शन वज्र इक इंद्र वज्र
विख्यात॥ हनूमान वज्रांग पुनि अर्द्ध भीम को थात॥
१४॥ धनुष॥३॥ सारंग श्री भगवान धनु पुनि पिनाक
शिवजानि॥ गांडीव अर्जुन धनुष अर्द्ध इंद्र धनु मानि
१५॥ हल॥३॥ चींटी हूंटीड़ी काहू पुनि जल थर जल पी
ना॥ मनुष अर्थ मिलि हल प्रबल बाढ़े साढ़े तीन॥१६॥
गुद पवित्र॥ सुरभी मधु माखी बहुरि पाट कीट सुनु
मित्र॥ अर्थ संख गुद जानिये साढ़े तीन पवित्र॥१७॥
मर्द ३॥ एक मर्द ही मर्द है दूजो स्वार जानि॥ तीजो
सर्पहि कहत है अर्थ व्याघ्र की मानि॥१८॥ १६६ दूति।

अथ चार वस्तु॥४॥

चतुर्व्यूह ४॥ प्रद्युम्नो श्रीवास अरु संकर षण अनिरु
द्ध॥ चतुर्व्यूह मिलि ब्रह्म एक रूप चारि सम प्रसिद्ध॥१॥ च
तुर्वेद ४॥ ऋग्यजुर्वेद ऋग दूसरो भए अथर्वण तीन॥ साममू
लमिलि वेद ए चार विचार नवीन॥२॥ उप वेद ४ सामवे
द को जानिये गांधर्व उप वेद॥ आयुर्वेद वैद्यक समुझि
ऋग्वेद हि साम भेद॥३॥ धनुर्वेद उपवेद है यजुर वेद
को जानि॥ वास्तु अथर्वण वेद सो मिलि शास्त्र तेहि मानि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्विधि वाणी ४ परा पश्यन्ती मध्यमा और वैखरी हो
इ॥ एवाणीहैं चतुर्विधि भाषत पंडित लोइ॥५॥ इनको
स्थान ४ परा उठति है नाभि सों पश्यति हृदये जानि।
कंठ मध्य सों मध्यमा वैखरि बाहिर मानि॥६॥ सनकादि
४॥ सनक सनंदन जानि पुनि सनत कुमार विचार॥ और
सनातन एक है प्रथम वृद्ध सुत चार॥७॥ मुक्ति ४॥
प्रथम कहत सालोक को अरु सा रूप बखान॥ पुनि
सामीप विचारियें सायो जाहि परि मान॥८॥ मुक्ति पुरी
के द्वारपाल ४॥ मुक्ति पुरी द्वार बारके चारि चतुर प्रति-
हार॥ साधनको सत संग अरु सम संतोष विचार॥९॥
फल ४ अर्थ धर्म अरु काम कहि बहुरो मोक्ष समु-
द्धि॥ विनु हरि दिये न पाइये ये चारो फल सिद्धि॥१०
फलन की क्रिया ४॥ अर्थ चातुरी सों मिले धर्म सुभ
द्धा जानु॥ काम मित्र जाते मिले मोक्ष भक्ति सो मानु
११॥ श्रद्धा भांति ४॥ श्रद्धा सत रज तामसी और निर्गु
णी जान॥ वृथा॥ ब्रह्मरु कर्म जु पाप मय पर मेश्वर
पर ध्यान॥१२॥ पुनः किं श्रद्धा॥ ४॥ गुरु अरु शास्त्र व
चन विषै आस्तिक बुद्धि जो होइ॥ जातें पुनि रति
को उदय श्रद्धा कहिये सोइ॥१३॥ धर्मको पद॥ ३॥ प्र
गट चारि पद धर्मको सत्य सौच अरु दान॥ दया चतु
र्थहि हृदय धरि भजो सदा भगवान॥१४॥ वपु एक
नाम॥ ४॥ भक्ति भगत भगवंत गुरु चतुर नाम वपु
एक॥ इनके पद वंदन किये नासे विघ्न अनेक॥१५॥
जयंति व्रत॥ ३॥ राम कृष्ण नर हरि जनम वामन घोस
विशेष॥ चारि जयंती व्रत किये नासें विघ्न अशेष॥१६।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

भक्त प्रकार॥४॥ आरत गज द्रुत्यादि को परी हिता
हि जिग्यासु॥ अर्थार्थी ध्रुवको गनो सुक विज्ञान नि
वासु॥१७॥ ज्ञानको साधन॥४॥ साधन चारि सुज्ञा
न को प्रथम एक वैराग॥ पुनि विवेक सम दमहिए
नि सुन मुमुक्षु बड़ भाग॥१८॥ यथा वैराग चतुष्टय
लक्षन॥ हेतु रूप फल अवधि कहि विषय त्याग
विधि चार॥ यथा॥ विषय दोष जब लखि परै कहै हे
तु निर्धार॥१९॥ विषयनु को परि त्याग जो रूप वि
राग सुजानु॥ कबहुन दीना धीन है फल वैराग सुम
नु॥२०॥ ब्रह्मा इंद्रहि आदि दै भोग देह धरि जोइ॥ का
क बीट वत जो गनैं अवधि विराग सुहोइ॥२१॥ विवे
क॥ देह प्रपंच अनित्य है आतम नित्य बखानि॥
सारासारहि जानिबो यह विवेक नृमानि॥२२॥ है चूहे
नित जड़ काटै ऊपर अजगर वास॥ रसिक प्रान तहं द
सगहि मूढ़ रखै मधु आस॥२३॥ सम दमादि षड़ंग
लक्षण॥ सोरठा॥ सम दम अरु उप राम तितिक्षा पु
नि श्रद्धा गनौ॥ अरु समादि षटनाम सम दमादि सं
पत्तिए॥२४॥ मुमुक्षल दोहा॥ जन्म मृत्यु संसारतें कैसे
छूटिय मित्त॥ सो मुमुक्षु कहिये सदा यहै विचारत चि
त्त॥२५॥ ज्ञान भलौ अभ्यासतें ताते ध्यान विशेष॥ पा
लनि त्याग ताते भलौ ताते संतिहि लेष॥२६॥ चित्तकी
संति॥ बाह्य विषयतें चित्तकी उपरति जोतें आहि॥
अन्तर चिंतन हरि चरन संति कहत बुध ताहि २७
संतरहनि विधि॥४॥ रहनि विभीषन प्रभु निकट
जनन माहि हनु मान॥ जनक सुगुरु ढिग सुक सु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुनि लंकजानकीजानि॥२८॥अवस्था॥४॥जागत स्वप्न सुखुप्ति पुनि और तुरीया होइ॥चारि अवस्था जानिये भासत पंडित लोइ॥२९॥अवस्थाबकोस्वा मी॥४॥तैजस प्राग बाहाइ पुनि अंतर यामी सोइ। वासुदेव तुरिया विषैं चारिहु को विभु जोइ ३०॥स रीरावस्था ४॥बाजुवना अरु मध्य पुनि वृद्ध अवस्था जानि॥कौमार पौगंड किशोरहु बालांतर गत मानि॥ ३१॥प्रथम वैस विद्या नहीं दूजे धन नहिं भूरि॥तीजेमें जोभप नहीं चौथे में वाहि धूरि॥३२॥बालादि अव स्था का व्यौरा॥४॥बालकुमार पौगंड एतीनि पांच दश जानि॥षोडश लौ जु किशोर है इहि विधि वर्ष प्र मान॥३३॥सृष्टिखानि॥४॥प्रथम जरायुज जेर सोंन र अथवा पसु देह॥पक्षि आदि जो अंडते अंडजता हि गनेह॥३४॥चिलगादिका जो स्वेदतें स्वेदज ताहि बखानि॥वृक्षादिहि उद्भिज कहत चारि खानिजग॥ जानि॥३५॥चौरासी लाख जोनि का व्यौरा॥लखचौ रासी जोनिमें जलचर नौ लख जानि॥थावर सत्ताइस २७ कहे स्वामि एकादश ११ मानि॥२६॥पक्षीदश १० पुनि कहत है चौपद २३ तेइस गोत॥मनुष चारि लख ४ जानिये मिलिचौरासी ८४ होत॥३७॥तैंती स कोटिदेव॥तद्द एका दश जानि पुनि रवि द्वादश व सु अष्ट॥हैं अश्वनी कुमार मिलि तेतिश कोटि सप ष्ट॥३८॥चतुर्युग॥सत युग अरु त्रेता कहत द्वापर कलियुग जानि॥अब इनको समुदाय जो वर्षहि क रो बखानि॥३९॥चौकरी वर्ष समुदाय॥लाख नि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

नालि सहस्र वर्ष ए अरु बीते बीस हजार ॥ एक चौकरी युग
न की नाको कह्यो विचार ॥ ४० ॥ ऐसी ऐसी चौकरी यु
ग जब जाहि हजार ॥ ० ॥ ब्रह्मा युग को एक दिन तब
कहिये निरधार ॥ ४१ ॥ कल्पार्थ ॥ ब्रह्माही के दिवस को
कल्प कहैं सब तात ॥ जामें चौदह इंद्र मनु राज करत म
हिजात ४२ ॥ प्रलय विधि ४ ॥ नित्य निमित्तक प्रलय
पुनि महा प्रलय चहु जानि ॥ यथा ॥ उपजि नसत जो
जीव नित नित्य प्रलय ते मानि ॥ ४३ ॥ मार्कंड हित प्र
लय जो निमित्त कहावै सोइ ॥ ब्रह्मा जू की रैनि को प्रलय
तीसरी होइ ॥ ४४ ॥ आयु दिव्य निज शत वरष ब्रह्मा
जब भुगताय ॥ महा प्रलय है मरन ते कहत सबै सुनि
राय ॥ ४५ ॥ ब्रह्मांड के सर्वस ॥ ४ ॥ निगमा गम पुनि स्मृति
कहि चौथो जानि पुरान ॥ ए सर्वस ब्रह्मांड को मुनिवर
करत बखान ॥ ४६ ॥ चार को प्रिय ॥ ४ ॥ नमस्कार प्रिय
सूर्य को जल धारा शिव जान ॥ श्री विस्नुहि उपकार
प्रिय विप्रन भोजन मान ॥ ४७ ॥ पाक विधि ॥ ४ ॥ भ
क्ष भोज्य अरु लेह्य कहि चोष्य पाक विधि चार ॥ इन
के नामन तें समुझ लहत पाक प्रकार ॥ ४८ ॥ जल को
गुन ॥ ४ ॥ निर्मलता इक जानिये पुनि सीतलता मानि
मधुर सुवा सित चारि गुन जल के प्रगट बखानि ॥ ४९
अमृत वत ॥ ४ ॥ सीत काल में अग्नि पुनि बाल वचन
सुख देन ॥ गुनवति तिय पंडित तनय चारि अमृत को
देन ॥ ५० ॥ पुनः ॥ बुध जन बानी अमृतवत भोजन
हार सुजान ॥ प्रिय दरशन पुनि अमृत है बहुरि रा
ज सन मान ॥ ५१ ॥ विषवत ॥ लीजै विषहू ते अमृत अ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसचिन तैं तपनीय॥नीचहु ते विद्या विमल दुष्कुल को
वरनीय॥५३॥त्याग नीच दुर्जन सठ की मित्र ता रूपव
ती परनारि॥जीर्ण गाय अरु वस्त्रकों दूरहि तजो सहार
रि॥५४॥चारकी परिक्षा दोइ॥४॥परखे भृत्यहि काजमें
कष्ट समय में भाय॥दारिद में तिय विपत में मित्रजु
कोरे सहाय॥५५॥चारि के भूषन॥४॥तिय भूषन ल
ज्जा पुरुष भूषन ज्ञानि सुदत्त॥क्षमा भूप भूषन सदा
ल सील सु भूषन चित्त॥५६॥चारको नासक ४॥परु
झूठ सों नासई तप विस्मय सो हानि॥आयु विप्र अ
प वाद तें दान कहे तें जानि॥५७॥पुनः ४॥विद्या विनु
अभ्यास तें नित्य हांस ते नारि॥अल्प बीज तें कृषिन
सें नृप लघु कोप प्रचारि॥५८॥पुनः॥नदी तीर के रूख
अरु नारी आश्रय हीन॥मंत्री विनु राजानसे कामी दू
तिविहीन॥५९॥चार विनु शून्य ४॥जीवन शून्य अ
विद्य को बंधुहीन दिसि शून्य॥असु तन को सूनो सदन
दारिद को सब शून्य॥६०॥चारविनुहत ४॥हतो स्वादजोवी
र्यहत हतो लाजहत काजहतो काजजो अर्थहत ह
तो धर्म हत राजा॥६१॥पुनः॥वसन हीन भूषन वहुरि
भोजन घृत विनुहीन॥तिय विहीन गुनहीन द्विज वि
द्याविनय विहीन॥६२॥चार विनु व्यर्थ ४॥गुन विनु
सुंदरता गई विद्या विना विवेक॥भोग धर्म विनु धन
गयो शील विना कुलटेक॥६३॥पुनः ४॥क्रियाहीन
को ज्ञान गत गयो क्रिया विनु ज्ञान॥विनु सरदार गई
चमू विन पति तिय गत जान॥६४॥पुनः ४॥दारिद्री
कों सुख कहां दुर्जन सुजन नहि पास॥मित्रजु कामी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को कहां असंतोषि धृतनास॥६५॥पुनः ४॥क्षुधा तु
रा कछि पक्व नहिं कामातुर भय लाज॥सज्जन संगे अर्थी
रथिहि विद्यातुर सुख राज॥६६॥चार विनु अफाल ४
गव्य हीन भोजन अफाल कृपिन अफाल धनुज्ञान॥
धन विनजोवन अफाल है नेह अफाल विनुज्ञान ६७
चारको ज्वर॥४॥मैथुन ज्वरहय कों कहौ चिन्ता नर
को जान॥पिय कुमवा ज्वर वामको अवरन को ज्वर भा
नु॥६८॥चारने दुर्लभ॥४॥चोर धर्म दुर जन क्षमा वे
श्या नेहन होइ॥कामी को सत बोलनो चार चारि नहिं
सोइ॥६९॥चारने नष्ट॥असंतुष्ट द्विज नष्टहै नृप संतु
ष्ट विचारि॥वार वधू लज्जा सहित निर्लज्जा कुल ना
रि॥७०॥स्वर्ग चिन्ह॥पान पुरानो घीनयो अरु कुलव
ती नारि॥चौथे पीठ तुरंगकी स्वर्ग निशानी चारि॥७१
नर्क चिन्ह ४॥बुत्त सित भोजन छोरि धन औ काल हा
रि नारि॥चौथे वसन मलीन तन नरक चिन्ह ए चारि
७२॥चार वी अवधि ४॥विद्या सम नहिं मित्र जग
तु मूर्खता जाना स्नेह पात्र नहिं पुत्र सम दैवी धनव
लवान॥७३॥पुनः ४॥क्षमा तुल्य तप नहिं नहीं सुख
संतोष समान॥व्याधिन हरना सो दया समन धर्म यह
ज्ञान॥७४॥पुनः ४॥नहिं विद्या सम चक्षुवर नहिं स
त सम तप कोय॥नहिन रोग सम दुख जगत सुख न
याग सम होइ॥७५॥चारके फाल॥४॥अग्नि होत्र है
द फाल श्रुति फाल शील सुज्ञान॥संतत रति तिय
फाल लखो धन फाल भोग सुदान॥७६॥पुन्य विनु
धर्म ४॥संपति और शरीर सुख विद्या अरु वरनारि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूरब पूरे पुन्य विनु मांगे मिले न चारि॥७७॥पुनः४
पालब्धनें पाइये चारों वस्तु पुनीत॥राज रसायन स
त सुभग मिलन निपुन निज मीत॥७८॥पुनः॥४॥
पिता राज सुख विरुज तन मन अनुरंजनि नारि॥
मन इच्छित धन गृह विषें जग जीवन फल चारि
मध्य गमन वर्जित ४॥हल गरदभ अरु दंपती गुरु
शिष्य तिमि जानि॥इनके मध्यि नहिं जाइ ये वामे
न्य की हानि॥८०॥चारवस्तु शुद्ध होय॥४॥वृन्दावन ही
मधुवारि नीलपाट मैं बुद्ध॥गोशाला घरजलमूलों
हामें जल शुद्ध॥८१॥अदूषित तैल ४॥सरसों औष
गन्ध अरु वासित पुष्प सुमानि॥सर्व्वकाल निर्दो
ये चारि तैल जिय जानि॥८२॥रोगी उपचार ४॥वै
औषधी टहलुवा और रोग पहिचानि॥चारि मांहि
जो एक नहिं तो रोगी की हानि॥८३॥सुजस सहाय
वस्तु ४॥कविता हरि अरु सुरता पुनि अजीर्ण उथा
संतत दुख दुख न्यून गति ये वह जस दातार॥८४
सार वस्तु ४॥*॥चौथे पन राज पथ्य कर वेद
षधी चार॥*॥नारायण गंगा उरध श्रीमत तत
विचार॥८५॥पुनः॥४॥यह संसार असार में चार
र जिय जानि॥काशी वसि सत संग शिव पूजन गंग
ना॥८६॥अवश्य वर्जन्ये ४॥सो वादन तजि खाइये
न्हाहु सहस तजि काम॥लाख काज तजि दान धो
दिन्यागि जपु राम॥८७॥एक नमस्कार वर्जनीय
सभा यज्ञ अरु देव गुरु इनको एक प्रणाम॥कोइ
र अभिमान ते नाहि नर्क मे थाम॥८८॥आनंद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कार ४॥ विषया नंद संसार है भजनानंद हरि दास॥ ब्रह्मा
नंद जीवन मुकति भई वासना नास॥ ८८ चौथो सह
जा नंद है को करि सकै बखान॥ जाके चित्तमें नित
रहै सगुन रूप को ध्यान॥ ८९॥ मास मान ४॥ सौर चां
द्र नक्षत्र पुनि सायन मास जु चारि॥ यथा॥ संक्राम तें
गनि सौर को तिथि ते चांद्र विचारि॥ ९२॥ नखत नख
त तें जानिये सायन पुनि दिन तीस॥ मंगल पितृसु दे
व व्रत स्नानादि वाहि ईस॥ ९२॥ नर्मदा नदी को नाम
रेवा बहुरि सुनर्मदा मे काल कन्या जानि॥ सो मो
क्षवाजु कहत है चारिहु नाम प्रमानि॥ ९३॥ वर्ण ४
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पुनि शूद्र बहुरि गनि लोइ॥ चा
रिवर्ण सोई बडो हरिचरननि रति होइ॥ ९४॥ चारों
वर्णो की उत्पत्ति ४॥ उत्पत्ति इनकी जानिये मुखरु बाहु
वादि चर्ण॥ ब्रह्मा जीके अंगतें प्रकट भए चहुं वर्ण
९५॥ ब्राह्मण धर्म षट कर्म ४॥ पढ़त पढ़ावत शास्त्र
सब करत करावत यज्ञ॥ दाता पुनि ग्राही भनत ए बा
ह्मण क्रम छज्ञ॥ ९६॥ पुनः नव धर्म ४॥ समता दमता
सौचतप क्षंता ऋजुता ज्ञान॥ आस्तिक मति विज्ञान
दृति विप्र धर्म नवजान॥ ९७॥ क्षत्री धर्म॥ पढ़ै करै मख
दान मद ईश धीरता ज्ञान॥ तेज सूरता युद्ध तिथि ए
क्षत्री धर्म प्रधान॥ ९८॥ वैश्य धर्म॥ * ॥ * ॥ खेती
गोपालन करन वानिज स्वारथ कार॥ एते धर्म जु वै
श्य के बुधजन कहै विचार॥ ९९॥ शूद्र धर्म॥ ब्राह्मण
क्षत्री वैश्य के सेव विनय की बात॥ एते धर्म जु शूद्र को
अग जगमें विख्यात॥ १००॥ चारोंवर्णके त्योहार ४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एरवीहै त्योहार द्विज क्षत्रि दुपहरा होइ॥ दीपमालि
का वैश्यकी शूद्र होलिका जोइ॥१॥ चारो वर्ण वडाई
४॥ विप्र वड़ाई तेजतप क्षत्रि तेज बल जानि॥ वैश्य
अधिकता द्रव्यकी शूद्र वृद्ध वय मानि॥२॥ चारो वर्ण
को वर्णांग ४॥ स्वेत रक्त अरु पीतकहि श्याम वर्ण
पुनि होइ॥ क्रम सों चारों वर्णको वर्ण क हत बुध्य लोइ
३॥ चारों वर्ण की संज्ञा ४॥ सरमा विप्र कहावई वरमा
क्षत्री जानु॥ गुप्त वैश्य कों कहत हैं शूद्र दास पर मानु॥
४॥ आश्रम ४ ब्रह्मचर्य गृहचर्य कहि वान प्रस्थ वखा
नि॥ अरु संन्यासिहि समुझिये चारो आश्रम जानि
५॥ ब्रह्मचारी धर्म ४॥ गुरु सेवा विद्या पढन इन्द्री जीति
शुचि कर्म॥ अथवा ब्रह्म पदर्श नहिं ब्रह्मचारि को ध
र्म॥६॥ गृहस्थ धर्म॥ कुलाचार कुल धर्म क्षत अति
थागम सनमान॥ एते धर्म गृहस्थ को कहे मुनीश वखा
न॥ वान प्रस्थ धर्म॥ जित इन्द्री जोषित सहित वनव-
सि पावक सेव॥ आतम तत्व विचार नित वान प्रस्थ ध
र्मेव॥८॥ सन्यासी धर्म॥ त्रिविधि दूषना दून मन दंड
त्रहण तजि कर्मा ब्रह्म ज्ञान वैराग थित ए संन्यासी ध
र्म॥९॥ और ते धर्म॥ परम हंस जोगीस कवि पंडित गु
रु सिष ज्ञान॥ अरु नास्तिक दूं को कहों लखन बुद्धि अ
नुमान॥१०॥ परम हंस धर्म॥ पर आपन कछु ज्ञान न
हिं ब्रह्ममई जग जोइ॥ अजपा जप आनंद मन परम हं
स धर्मोइ॥११॥ जोगी धर्म॥ लघु भोजन इंद्री दमन मं
जु एकांति हि वास॥ पद्मा सन मन पवन जित जोगी ध
र्म प्रकास॥१२॥ कविलक्षण॥ वच रच नावाचाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

अखिल धुगुरु गुरु लघु जोइ ॥ निर अंकुश श्रुति श्रवण
नी गुन वंता कवि होइ ॥१३॥ कवित्त ॥ सुन्दर अनूप
उक्ति अक्षर सुजुक्ति भरे नौरस सरस बानी श्रवण
र सावते ॥ जान रीत रीत अलंकार छंद वो प्रबंध
नीके नायका सुनायका सुनीतसो बतावते ॥ काव्य
दोष पद पुन रुक्त अना गन ज्ञाता बहु चतुराय भोज
हरि गुन गावते ॥ एते सब लक्षण सलक्षित विवे
क अरु ईश्वर सहाय ते कवीश्वर कहावते ॥१४॥ पं
डित लक्षन दोहा ॥ सकल शास्त्र में निपुन अति श
स्त्र उक्त व्योहार ॥ पंडित लक्षन लहउर आगम निग
म विचार ॥१५॥ पंडित सों गुण निधि कहे मूरख २
अवगुन खानि ॥ मूरख सों बोलत कुजस पंडित
सो जस जानि ॥१६॥ बहु पुस्तक धारन किये पंडि
त होइ न सोइ ॥ जो कर डर परलोक को पंडित जान
हु सोइ ॥१७॥ गुरु लक्षन ॥ सर्व शास्त्र वेत्ता विमल
सम दरसी सो जन्य ॥ वेद विहित आचार युत ए गुरु
लक्षण मन्य ॥१८॥ पावक है गुरु द्विजनिकों द्विज व
र्णनि गुरु आहि ॥ पतिही गुरु है तियन कों सब गुरु अति
थ सराहि ॥१९॥ गुरु अंधियारो जानिये गुरु काहि
ये परकासु ॥ मेटि अज्ञान हि ज्ञान दे गुरु नाम है
तासु ॥२०॥ शिष्य लक्षण ॥ गुरु सेवा तत्पर सदा सकल
व्यसन तजि मानि ॥ गुरु को वचन विश्वास दृढ़ ए१
शिष लक्षन जान ॥२१॥ नास्तिक लक्षण ॥ वेद वाक्य मुनि
युक्ति पर करे कुतर्क अनेक ॥ स्वमति अल्प पथ प
र चलै यह नास्तिक की टेक ॥२२॥ असुर कोटि ४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुष्टाति मूढ़ा अधम नर असुर जानिये एव॥ दून चारों
को एक सम असुर कोटि गनलेव॥२३॥पुनः ६॥ दं
भ दर्प अज्ञान रिस अरु अभिमान कठोर॥जामें दो
गुन तीनलहि असुर संपदा घोर॥२४॥चारि भांतिक
वि॥प्रथम महाकविजानिये दुतिय कविन के पूत॥
तृतिय कविनको जोय गनि चौथो कवि अवधूत॥
२५॥यथा॥युक्तिलगावे कविन सोइ अर्थ कहे सोइ
पूत॥काट कहे सो जोयहै उक्ति कहे अवधूत॥२६॥
विद्या ४॥प्रथम पढन विद्या कही दुतिय चलावन
तीर॥तीजे विद्या नाद की चौथे तरिवो नीर॥२७॥च
तुर्विधि नायक॥एक नारिसो हित करे सो अनकूल
बखानि॥बहु नारी सो प्रीत सम तावो दक्षिन जानि
२८॥मीठी बातें सठ कहे वारिके महा विगार॥आवति
लाजन धूर्त को दिये कोटि धिक्कार॥२९॥द्रव्य तीनि
४॥द्रव्य संग्रहन न्यायकरि द्रव्य पढ़ावन जान॥द्रव्य
विरक्षा यत्न करि द्रव्य संग्रह नहिं दान॥चतुरंग सेना
४॥हय गय रथ पदचर सहित सेनावो चतुरंग॥नृ
पगुन ४॥साम दाम अरु दंडवाहि पुनि विभेद तिहि
संग॥३०॥राजनीति महिपाल नाहरपाखारि वर्ण म
हि पालको तापर अद्भुत नीति॥बहु श्रम कवि कों स
मु झिमैं दूहां धरे करि प्रीति॥३१॥कवित्त॥मंत्री
मंत्र माने मंत्र दोष गुन जाने मन मंत्र कों पढावे म
न सो वेइल वैसकी॥मालश्री मुलक मजलिस की
खबरि लेइ मीठो मुखबोले मनि राखे पशो पेशको॥
सुगावा मैनमद मदमैन माचिजाई मित्रा मित्र मानै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

माथी आंने महि देसकी॥ भानिनी सो मोहि मन देखे
लेत ताको हाथ सो चेर है अंतगति अवध नरेसकी
३३॥ हांस॥ हांस रस हेतु हर काहू सोंन हाहा हरि हा
थी औ हथ्यार की नहोस हटे हियते॥*॥*॥ हो
सिला विलंदहका नाहक निवेरि जान हो सियार आ
हो जाम देह गेह जियते॥ हिम्मतु हुकुम हलुकाइ
कीन भाउवात हिंसा औहराम हाकि काढे देस सि
यते॥ होल औ हरष पाइ हाल हीन हालिजाइ हृद
य की बात गोपि राखे रहे तियते॥३४॥५३॥ पुन्य
पेज पूरो औ प्रवीन पोढ़ो बाह बोल पाव धरे पाछ
ले मही पनिको पावपे॥ पंडित सो मीत आपु पंडित
गात पोरि आये पामरकी पीरहरे हानदो॥ पथिक प्र
जाकों प्रान पूतहूं ते प्यारो गाने पालन को पाले पर
मेश्वर सो प्रेमले॥ पाप सो पराय पाप औरसे प्रया
स धीर पौरुष निधान पर खंडन प्रमान मे ३५॥ ले॰
४॥ लेखे मे निपुन लाष लेखेकी नजान देत लाख
न बकासि लेख थारन को आदरे॥ लंपटलवार पैठि
द्वार मैं नपावैमान लोभ कोश भूमि गढवनको सदा
करे॥ लोकलाज पालवा औ लजीन न को गाहक है
रीझ मन जाक गुन ताप रीझिकै धरे॥ लोगन की चा
हलथु दीरघ विचार जाहि लाखदे निवाजे रगाला
जकारज जेलरे॥३६॥ सुभग सुलक्षन सल हलक्ष
लक्षन के अक्षान विलोकी गौन ऐसो और होत है
राम के नगर जोति जगर वगर रही अगर सो सोरम
सगर कोसो गोतहै॥ थलर हो अचल अच अमल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख जल कुल कमल सो महीप नरायन कोपोतहै
रामलीला ललित रंगीला परमदन को आनद को
वन उदया चल उदोत है ३७॥ दोहा॥ राजनीत सिंगा
र सों श्रुति पुराण शुभ युक्ति॥ ललित रामलीला
वलित समुझै यह वर युक्ति॥ ३८॥ जो महिपाल प
ढै सुनै सदा चलै इहि रीत॥ ताको देस सुवस दसै व्या
पै एकान इति ३९॥ संपदाय ४॥ रमा पथति रामा
नुजहि विस्नु स्वामि त्रिपुरारि॥ निंबा दित सनका
दि का माध्व गुरु सुख चारि॥ ४०॥ चतुष्टय अंतः
करन ५॥ मन बुध्यि चित अहंकार ये चारि चतुष्टय
जानि॥ इन को देव॥ शशि ब्रह्मा हे चत्र अरु रुद्र देव र
पहि चान॥ ४१॥ चित्त॥ १॥ जब चाहत है वस्तु कछु
चित्त कहत है ताहि॥ मन॥ २॥ यत्र वाल्पना जबका
रै मन वहियत है वाहि॥ ४२॥ अहंकार॥ ३॥ मैं यह
लीनो लेत हों अहंकार यह होय॥ बुद्धि॥ ४॥ सबकी
जब निश्चय करै बुद्धि कहावै सोय॥ सुख दुख इच्छा
राग रु सबै बुद्धि को धर्म॥ सुख पति मैं एसब मिटै र
हत आतमा पर्म॥ ४४॥ इंद्री परहै देह ते मन इन्द्रि
नते जोइ बुद्धि वाही मनते परै बुध्यि ते आतम सोइ
४५॥ आतम है आकास मय प्राण वायु मय जान॥
अहंकार है तेजमय मन जल मय पहिचानि॥ ४६
अवनी मय तन कहत है तन मन इंद्री होइ॥ मन
लगाय हरि भजन कर भव के दुख सब खोइ॥ ४७॥ क
र्म धर्म तज प्रभु भजै धर्म धुरंधर राम॥ जय गुपा
ल हर हाल में यहै ख्याल मन काम॥ ४८॥ इति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ पंच वस्तु ५

पंच भूत पु॥ क्षिति जल पावक पवन कहि और गगन व
खान॥ पंच भूत पे जानिये इनते जगत बखान॥१॥ पं
च भूत नते पचीस पकृति २५ रोम रुधिर नाडी त्वचा अ
स्थि मांस मज्जा॥ मज्जा शोणित सुक्र मल लार मूत्र
जल जान॥२॥ ॥ कांति क्षुधा निद्रा तृषा आलस
अग्नि उपाय दौर चलन पसरन सिकुर कूदन पवन
प्रभाय ३॥ हृदय उदर शिर कंठ कटि जानि अंग आर
काश पंच भूत पंची करन यहै कहै बुधि रास॥४॥ पं
च भूतन के गुन पु॥ एक शब्द गुन गगन गत शब्द स्प
रस समीर॥ शब्द स्प रस सरूप त्रय अग्नि माहिं सुनु थी
र॥५॥ शब्द स्प रस सरूप रस आप माहिं गुण चार॥ गं
ध सहित गुन पांचहू भूमि माहिं निर धार है॥ पंच भू
तन को रंग॥ पीत श्वेत और रक्त कहि नील स्याम रंग जा
नि॥ पंच भूत तन कर्म सो एहु सब रंग बखानि॥७॥ पं
च भूतन को देव पु॥ विधि छिति को हरि वारि को रुद्र हु
ताशन देव॥ पवन देव ईश्वर सदा सदा शिवो नभ एव॥
८॥ पंच भूतन की जोनि॥ वायु योनि आकाश है तेज
जोनि नभ वायु॥ एतीनो जल जानि है चारों छिति की
माय॥९॥ पंच भूतन की लय पु॥ छिति को लय जल
माहिं जल मगन अग्नि में होय॥ अनल प्रलय लहि
अनिल मै मारुत लय नभ सोय॥१०॥ तब लो नभ सं
काल्पे है जब लों धुनि सुनि जाय॥ धुनि जाहिं मैं होय
लय सो पर ब्रह्म कहाय॥११॥ ज्ञान इन्द्री पु॥ श्रवन
त्वचा अरु चक्षु कहि जिह्वा घ्रान जु मानि इनको वि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

षय पु॥ शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध विषय इहि जानि
१२॥ कर्मइन्द्री पु॥ वाक हस्त पद अरु गुदा पंचमसिं
ष जुहोय॥ इनको विषय पु॥ वाहन ग्रहन गति विस
र्गन पुनि आनन्द क्रमसोय॥ १३॥ दसो इन्द्रिनको दे
व॥ दिग अरु वरुन अर्क वहि वरुन अस्वनी कुमार
अग्नि इन्द्र मय विस्नु पुनि प्रजापति हि जु विचार॥
१४ अहंकार तत्व॥ पंच भूत इन्द्री दशो तनमात्रा म
नहोय॥ प्रकृति पुरुष महतत्व मिलि अहंकार गु
णसोय॥ पुन सत्ताईस॥ पंच भूत दश इन्द्रिये तन्मा
त्रा सहवीस॥ मन बुधि चित अहंकार मिलि भएस
कल चौवीस॥ १६॥ पंच विंश माया सहित गनि षट
विंश सजीय॥ ब्रह्म सच्चिदानन्द सह सप्त विंश धरि
होय॥ १७॥ महतत्व॥ सत्य पढ़े जब प्रकृति मे बुद्धि
तत्व है जाइ॥ महतत्व सोई वाहन बुद्धि तत्व प्रति
भाइ॥ १८॥ महत तत्वते होत है त्रिगुन अहंकार रूप
अहंकार सो तीनि विधि सात्त मसत्व सरूप॥ १९॥
पंच वायु॥ पु॥ प्राण समानु जु व्यान कहि और उदान
अपान॥ इनको स्थान पु॥ हृदय नाभि सब अंगमें वां
टगुदा स्थान॥ २०॥ पंच सूक्षम वायु॥ नाग कूर्म्म अरु
कृकल पुनि देव दत्त लखु चित्त॥ और धनंजय जा
निये सूक्षम वायु निमित्त॥ २१॥ इनको स्थान पु॥ उ
का उपासन पलवा को छुधा जम्हाई जानि॥ मूए हु
तनमें रहे पांचहु क्रमसों जानि॥ २२॥ पंचकोश पु
देह स्थूल तनु अन्नमय प्राण प्राण मय जानि॥ पं
च कर्मइन्द्री समन मनो मई पहि चानि॥ २३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्ञान दुन्दी अहबुद्धि मिलि सो विज्ञान मयहोय॥हेतु
अविद्या जाहि को है अनंद मय सोय॥२६॥अविद्याप्र
कार॥५॥ जानु अविद्या पांचविधि कहों प्रगट करि
सोइ॥आत्मा देह हि को लखै प्रथम अविद्या होइ॥२
२५॥ इच्छा ति दूषित वस्तु की राग कहतु है ताहि॥
वामै कर्ता विष्णु जो सोई द्वेष कहाहि॥२६॥ कोरय२
त्न पुनि प्राप्ति को अवि निवशक्ति हि जानु॥कहै अ
समता पांचवीं यहि विधि पंच प्रमानु॥ ॥पर ब्र
ह्मावरण ५॥ आर्च ब्रह्मकक्षा बहुरि व्यूह विभौ पु
नि जानि॥परकक्षा है पांचवी सबको मध्य बखानि
२८॥पंच प्रकार जीव ५॥ नित्य प्राप्त अरु मुक्ति पुनि
मुमुक्षु ये जानि॥पांच भांति के जीव सब कहत मुनी
श वखानि॥२९॥ वधा॥पार्षद श्री भगवान के षोड
श है सो निन्द॥विधि शंकर हरि अंसजे तेहैं प्राप्त नि
मित्य॥३०॥सब का दिक एक मुक्त हैं बद्ध जीव ज
ग जाल॥लहै ज्ञान दृढ भक्ति करि यह मुमुक्षु गोपा
ल॥३१॥पंचदेव॥गण पति गौरी भानु है हरि जुत पा
चों देव॥इनमें नहिं वाछु भेद है एक ज्ञान हित से
वा॥३२॥पांचों देवनकी प्रदक्षिण प्रणाम ५॥त्रय२
गणपति को गौरि इक सप्त सूर्य को जान॥हरि हि२
चारि अरु अर्द्ध शिव प्रदक्षिण परमान॥३३॥सर्व
देव पंचांग ५॥ प्रथम पटल पद्मनि गनों नाम सहस
पुनि जानु॥स्तोत्र कवच शुभ देव को पंच अंग परिमा
नु॥३४॥श्री विष्णु जी के आयुध ५॥ चक्र सुदर्शन
नाम है संख पंचजन जानि॥कौमोदकी गदा बहुरि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बङ्गहि नंदकमानि॥२५॥सांप्रा धनु येपांचहै हीखो
आयुध्य जान॥चारिहस्तमेंलसतहै धनुष कंध पर र
मान॥२६॥पंचगौड़ ब्राह्मण पू॥कानकुब्ज अरु गौ
ड़ पुनि उत्कल मैथिलजानि॥सार स्वत मिलि विप्र
ए पंच गौड़ परमानि॥२७॥पंचद्राविड़ पू॥गुजरा
ती महाराष्ट्र पुनि कारनाटक तैलंग॥द्राविड़ मि र
लि द्राविड़ वाहै एपांचौ इकसंग॥२८॥वैष्णवी सं
स्कार॥ऊर्ध्व पुंड मुद्रा वहुरि माला मंत्र विचार॥सं
स्कारए वैष्णवी धर्म कर्म कोसार॥२९॥पंचरत्न र
पाठ पू॥गीता नाम सहस्र हरि अनुस्मृति पुनिजा र
नि॥भीषम स्तव राज कहि गजेंद्र मोक्ष उरआनि॥
५०॥पंचगव्य पू॥गोमय मूत्र सुदूध दधि पंचग
व्य घृत जानि॥पंचामृत पू॥पंचा मृत मधु सक
रा गोमल मूत्र की हानि॥५१॥पंच पांडव पू॥नृपति
युधिष्ठिर भीम अरु अर्जुन कुन्ती जाय॥नकुल
और सहदेव द्वै माद्री तनय वाहाय॥५२॥पंचग
ंगा पू॥ध्रुव पापा किरणा यमुन गंगा सरस्वतिजान॥
पंच गंगा के घाट में नितकीजे स्नान॥५३॥स्नान वि
धि पू॥जल स्नान वारुन वरुनि आगनेय सवि भूत।
गोधूली वाहुव्य जल मीच मंत्र श्रुति पूत॥५४॥दि
व्य नाम जल जलद शुतधाम अरु आना पंचस्नान प्रधा
न है एई पंच विधान॥५५॥पंचकन्या॥पू॥श्रीकु
न्ती पुनि द्रौपदी और अहिल्या जानि॥तारा मंदो
दरि सहित पंच कन्यका मानि॥५६॥पंचक्षेत्र पू॥
नीमषार मिश्रिक गया हरिद्वार कुरु क्षेत्र॥तीरथरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तपधाग शुभसंगम सुर मैरिनेत्र॥४७॥पंचयज्ञ पू॥
अग्निदेव अरु पित्रपुनि अतिथ भूतमयजानि॥
पंच यज्ञ नितको किये होइ सर्व कल्यान॥४८॥
पंचदोष पू॥चक्की चूल्ही मार्जनी ऊखल जल अस्था
न॥पंचदोष गृह को सुवलि वैस्य देवतें हान ४९
पंचकला पू॥पंचकला नृवृत्ति इक्क पर तिष्ठा पुनि
जानि॥विद्या सांति हि सम्भु भाको सांति अतीतामानि
पू०॥पंच पर्व॥कृष्ण पक्षकी अष्टमी अरु चौदसि
कुहु जानि॥संक्रांती अरु पूर्णिमा पंच पर्व पहि
चानि॥पू१॥पंचदान॥धर्म भीत आनंद लखि ज
स सनेह जियजान॥कोविद वाहन विचारकै पांच
भांतिको दान॥पू२॥पांचअंगुरी पू॥अंगुष्ठा तर्जनी
वाहन और मध्यमा होइ॥चौथी कहत अनामिका
पंचइ कनिष्ठा होय॥पू३॥पुराण लक्षण पू॥सर्ग औ
र प्रति सर्ग पुनि मन्वंतर अरु वंस॥वंस चरित अंग पां
च पुराण लक्ष पुराण प्रसंस॥पू४॥तिथि पत्र पंचांग पू॥
तिथि अरु वारनछत्र पुनि योग कर्न अंग पांचा॥प्रा
तसुनेते होइ फल गंग न्हान सम सांच॥पू५॥देव वृ
क्ष॥पू॥हरिचंदन संतान पुनि कल्प वृक्ष मंदार॥पा
रिजात एदेव तरु पंच सुरवन को सार॥पू६॥वृक्ष पं
चांग पू॥मूल त्वचा अरु पत्र पुनि पुहुप अंत फलहो
इ॥पंच अंग इ वृक्ष को सुनहु सयाने लोय॥पू७॥पंच
पल्लव॥वट अरु पाकर आम्र पुनि गूलर पीपरजान
इ पांचो पल्लव अवस यज्ञ कार्यमें मान पू८॥पंचमे
वा पू॥गिरीचिरौंजी दाख पुनि खुरमा और वदाम॥मे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वा एई पंच जे आवैजग में काम॥ पु॰॥ पंचरत्न पु
जलज पिरोजा नीलमणि विद्रुम वज्र वखान॥ पंच
रत्न कांचन सहित संचन नाहि सुजान॥ ६०॥ पुनः सं
सार रत्न पु॥ प्रभु विवेक गुन सील तिय अश्व रहे र
ण आंच॥ दाता धनी विराग गुन पंडित रत्न सु पांच
६१॥ मदनसर॥ पु॥ वसीकरण मोहन कहत आकर्ष
ण कवि लोग॥ उच्चाटन मारन समुझि पंच वाराये
जोग॥ ६२॥ पुनः॥ करना केतकि केवरा फटम आम
की बौर॥ ए पांचो सर कामके वेशव दासन और ६३
पंच शब्द वाजा॥ तंत्री ताल सुझांझ पुनि जानु न
गारा चार॥ पंचम फूकें सोंखजे पंच शब्द पर वार॥
६४॥ विवाहमें पांचकी चाह पु॥ रूपहि हंपति मातु
धन पिता नाम विख्यात॥ उत्तम कुल वांधव चहे भो
जन लोग वरात॥ ६५॥ त्रिनतोन॥ सुखभापन सांग
हवन शशि उपरना जौन॥ आपहैन भिक्षा लैन ए पां
चो त्रिनतोन॥ ६६॥ पंचानन॥ पु॥ शिव जीहु तपसि
हहि चतुर विचार॥ सुख अन्न चार उचंग ते कारत चो
ठइ कवार॥ ६७॥ प्रजाते राजा के गुण अधिक पु॥ हमा
धैर्य आज्ञा वहुरि दान पराक्रम मोद॥ अधिक प्रजा
ते भूप में होहि पांच गुन लोद॥ ६८॥ पंचमकार शा
क्तको पु॥ मद्य मांस अन्न मान पुनि मुद्रा मैथुन ज्ञान॥
पंचमकार प्रचार है शक्ति भक्ति के प्रान॥ ६९॥ चं
चल वस्तु॥ पु॥ लक्ष्मी जोवन नायका काल चाल र
खल हेत॥ ए पांचो चंचल सदा यथा पवन वसको
ल॥ ७०॥ दिशा नाम पु॥ दिशि आसा काष्ठ कुंभ ह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रित समेत जु होइ ॥ सकल दिसावो कहत हैं पांचना
मवुध लोइ ॥ ७१ ॥ समय नाम पू ॥ काल अथिर अ
नीह पुनि वेला समय विचार ॥ भजन बनै जब रा
मको सो सुसमय को सार ॥ ७२ ॥ पांच की शोभा पू ॥
शशि को निशि सर कमल को चमू भूप को अंस ॥ दि
नकर को दिन सोभिये ज्यों सरु को वंस ॥ ७३ ॥ लज्जा
दोष वर्जनीय पू ॥ धन अरु धाम प्रयोग में विद्या गम
में जोय ॥ अहार और व्योहार में तजि लज्जा सुख हो
य ॥ ७४ ॥ वास दोष वर्जनीय पू ॥ भय लज्जा अरु च
तुरता दान मिलन कीरति ॥ जहां पांच रहोय नहिं
वासन कीजे मीत ॥ ७५ ॥ पुनः पू ॥ श्रोत्रिय द्विज राजा
नदी धनिक वैद्य ये पांच ॥ होहिं जहां सुख छाड़िये दे
शमीत सुनु सांच ॥ ७६ ॥ विश्वास वर्जनीय पू ॥ सर्प वि
लाई भगिनि सुत पुत्र सहित जो वाम ॥ जामाता रु
पांच हैं अविश्वास के धाम ॥ ७७ ॥ पुनः पू ॥ सरिता प
शु नख शृंग जुत शस्त्र पाणि नृप नारि ॥ इनको न
हिं विश्वास कछु आपुहि रह्यो सम्हारि ॥ ७८ ॥ त्या
गनीय पू ॥ वांझ नारि सुत खल गुनी शापिन भूप र
सह देश ॥ मीत प्रपंची पांच ये त्यागे मिटहि कलेश
पू ॥ ७९ ॥ गर्भ रचित वस्तु पू ॥ आयु कर्म विद्या वि
भौ मरन पदारथ पांच ॥ गर्भहि में विधि नारचे मा
नुष को सुनु सांच ॥ ८० ॥ गौरव वस्तु ॥ पू ॥ विद्या वपु
वाचा विभौ वस्त्र सो पांच वकार ॥ पाइ पाये हैं सर्व
ठां नर गौरव अधिकार ॥ ८१ ॥ विना पढ़े प्रलाप व
र्जनीय पू ॥ * ॥ प्रायश्चित वैदिक सकुन ज्योतिष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीत बखान ॥ बिना पढ़े जो कहत है ताको मूरख जा
न ॥८२॥ चतुरई मूल पा ॥ है शाटन वृथ मित्रता वेस्या
राज मिलाप ॥ बहुत शास्त्र अवलोकिवो चतुरई
पांच प्रताप ॥४३॥४००॥ इति ॥ ॥

अथ षट वस्तु ॥ है ॥

षट विधि सरणागत ॥ है ॥ प्रभुके अनकूलत्व को
करै विचार सदाई ॥ पुनि त्यागे प्रतिकाल को मनव
च कर्म सुभाय ॥१॥ अपनी रक्षा पै रखे सर्व काल वि
श्वास ॥ एई मम रक्षा सदा एहि विधि दृढ़ मन आ
स ॥२॥ सर्व कर्म परित्याग पुनि निज कुपनाई जा
नि ॥ प्रभुकी कृपा अमोघ को रक्षन षट विधि भा
नि ॥३॥ वेद षडंग नाम है ॥ शिक्षा कल्पहि जानि
ये औव्याकरण निरुक्ति ॥ छन्द नाम वर्णत सुकवि
पुनि जोतिष संयुक्ति ॥४॥ यथा ॥ वेद पढ़नकी वि
धि सबै सिक्षा देहु लखाय ॥ सब कारमनकी रीतिजो
कल्पहिते दरसाय ॥५॥ शब्द अशुद्ध शुद्धको ज्ञा
न व्याकरण जानि ॥ कठिन पढ़नके अर्थको कहै नि
रुक्ति बखानि ॥६॥ अक्षर मात्रा वृत्तिको ज्ञान छंदसों
होय ॥ ज्योतिष काल ज्ञान इमि वेद षडंग गनोय ॥
७॥ षट चक्र है ॥ आधारजु स्वाधिष्ठान पुनि म
नि पूरक कहु जानि ॥ अनहत और विशुद्ध कहि
आज्ञा षष्ठ प्रमानि ॥८॥ इति ॥ केशस्थान ॥ है ॥ गु
दा शिश्न नाभी हृदय कंठ भृकुटि गनि लेव ॥ इन
को देवता है गणपति ब्रह्मा विष्णु शिव जीव अ
नि षट देव ॥९॥ कमल दल प्रमान है ॥ चारि ष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

मृदपा द्वादशांग षोडश द्वै दल मानि॥ इनकोतत्व॥ ६॥
पृथ्वी जल अग्नी पवन पुनि आकाश मनजानि १०।
जोग षटकर्म है॥ धोती वस्त्री नेति अरु प्राटक नौ
ली जानि॥ पुनि कपाल भाती छटी ये षट कर्म बखा
नि॥ ११॥ यथा धोती॥ मृदुलमिही सित वस्त्र मितिवि
स्तर आंगुर चार॥ यह पन रह वो तूलहै तूल नाहवो
फारि॥ १२॥ ताहि भिजै जलसो गसै गुरु उपदेशहि
पाइ॥ पुनि काढ़ै तेहि उदर तें हरे हरे करि चाइ॥ १३॥
कास स्वास पिलही अवर कोढ़ मिटै कफ रोग॥ १
धोती कर्म प्रभाव इन सबते होय वियोग॥ १४॥ वस्ति
॥ नाभिमान जलमाहि मग निहुरि अकुंचि अथा
ह॥ खैंचै पवन अपान सो वस्ति कर्म निर्धार॥ १५॥ वात
पित्त कफ उदर अरु पिलही आदि अनेक॥ ना
सै जठर जल वंधै मुद दुति सहित विवेक॥ १६॥ ने
ती॥ मृदुल नेह जुत सूतकी वाती डेढ़ विलस्ताना १
का आंखि मुख मग काढ़ै नेति सिद्धकी अस्त॥ १७॥ १
अर्द्ध जात रोगनि हरै सोधै शुद्ध कपाल॥ नैन जोति
वर्द्धन करै हरै मोलि मल जाल॥ १८॥ प्राटक ४ अन
मिलि निह चल दीठ करि चितवै सूक्ष्म लक्ष॥ सो
इसका अंपूरुवा गिरै नोली सिंचन अक्ष॥ १९॥ दूरि
होइ दृग रोग सब सिद्ध होय जब कर्म॥ ताहि छिपा
वै विज्ञलो कहैन कोऊ मर्म॥ २०॥ नोली॥ उदरहि
वाम सदाहिने वेगि वेगि बहु वार॥ चालन अमनका
एव यह नोलि कर्म व्योहार॥ २१॥ पांचा गिनि दीप
न करै मंदागिनि मिटि जाय॥ उदर दोष सोखन स

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रस संतोषन सुखदाय॥२२॥कपाल भस्त्री॥६॥जो
लुहार भस्त्री थवै बाम वारि वारं वारत्यौरवि अग्नि
मग खैंचि तजि पवन कर्म व्योहार॥२३॥सिद्ध हो
य सोधन कोरे सब कपाल कफ जाल॥याहीको यो
गीश्र सब भाषत भस्त्रिका पाल॥२४॥पुनः नित्य ष
ट कर्म है॥स्नान२ संध्या३तिय तप चौथो पूजन दे
व॥तर्पन पंचम जानिये वैश्व देव षट भेव॥२५॥ष
डगिन है॥व्यासाग्नि विद्युलसना चौहाराग्नि हिजा
नु॥लौकिक जठराग्नि बहुरि वडवाग्नि षट मानु।
२६॥षट सास्त्र है॥मीमांसा पातंजलि सांख्य न्या
य पुनि होइ॥वैसेषिक वेदांत षट काहो विलग क
रि सोय॥२७॥मीमांसा है॥यज्ञादिक कर्मनि करे दे
वलोक फल भोग॥येह मुक्ति मीमांस कहि दुख को
भयो वियोग॥२८॥पातंजली है॥जीव ईश न्यारो र
कहे पातंजलि तेहि जान॥इहै कलेशनि योग क
रिलहै मुक्ति निर्वान॥२९॥सांख्य॥३॥प्रकृति पुरु
ष असतत्व को जा को होइ विवेक॥येहै मुक्ति सांख्य
का कही ज्ञान भये सब एक॥३०॥न्याय॥४॥कारन
कारन कारन जिमि माटी पात्र कुलाल॥जिमि ईश्व
र सब जगत पर वरनै न्याय गुपाल॥३१॥वैशेषिक
५॥वैसेषिक सब जगत को काला अंन बताय॥दो
ऊ तार्किक शास्त्र हैं यथा नाम असन्याय॥३२॥वे
दान्त है॥यहै कहै वेदान्त को सब सिद्धान्त विचार।
सबै समुझिये आपुमें सबमें आपु निहार॥३३॥
भीतर बाहिर जगत के ब्रह्म रह्यो भरि पूर॥ज्ञानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को अति निकट सो मूरख को अति दूर॥३४॥षड्
भग भगवान है॥श्री ऐश्वर्य विराग अरु मोक्ष धर्म
जस जान॥एष्ड भग को खान जो तेहि कहिये भग
वान॥३५॥षट ऋतु है॥ग्रीष्म पावस सरद कहि
शिशिर हेमंत वसंत॥एषट ऋतु को अंत है विनाभ
क्ति भगवन्त॥३६॥षट रस स्वाद है॥कटु तिक्ता लव
ण खाय अरु मधुर लवण षट जानि॥यथा कूट सुं
ठि चिंचा भया गुड़ सैंधादि बखानि ३७॥षट विका
र॥है॥जन्म अस्ति परिनाम त्रय उदराग्नर गत मा
न॥हृद्रि हय सह नाम त्रय बाहिर जानु सुजानु॥
३८॥षट उर्मी है॥क्षुधा पिपासा प्राण को जन्म मर
ण तन जानि॥शोक मोह मन को दोऊ षट उर्मी प
हिचानि॥३९॥वन नाम है वन कानन अटवी वि
पिनि गहन अरन्य बखानु॥पंक्ति नाम है॥पंक्ति
अलीअवली विथी श्रेणि राजि षट जानु॥४०॥
कपट नाम है॥कपट छद्म वौलव प्रपंच व्याज दंभ
षट जोइ॥तेहि तजि भजि सियराम पद जेहिते त
व भल होइ॥४१॥वर्ष नाम है॥संवत्सर वत्सर मर
त हायन अब्द बखानि॥वर्ष सहित षट नाम ये रा
मकृपा सब जानि॥४२॥प्रयत्नीय है॥गो द्विज ति
य विद्यातनय ऐश्वर राज दरबार जान आपने हाथ
ते छनजु करवे सम्हार॥४३॥मन दाहक वस्तु है
तिय क्रोधी सेवन अधम कुव्य सन वसन कुदाह॥
मूरख सुत विधवा सुता विना अग्नि मन दाह॥४४
लघुता देन हार है॥कूर भजन तिय वादरवर जान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हंस विनु देत ॥ बालमित्त बोलनि विलग छह लघु ना फल देत ॥ ४५ ॥ ब्योहार वर्जनीय भकार ६ ॥ भाइ भतीजा भानजा भाट भिखारि भुइहार ॥ षट भकार कोत्यागिवौ तुलसी कत ब्योहार ४६ ॥ आनतादुनर ६ ॥ आगिलगावै जहर दै हथियारी थ्यनलेइ ॥ राज्य सतीव हरै सु छह आनतादू सुनु रहा ॥ ४७ ॥ षटरागहा भैरव मेघ मलार पुनि कविवरनाम श्रीराग ॥ पुनि वसंत कारनाट अरु ये हिंडोल षटराग ॥ ४८ इति ॥

अथ सप्त वस्तु ॥ ७ ॥

सप्त स्वर ७ ॥ षड्ज ऋषभ गांधार अरु मध्यम पंचमजानि ॥ धैवत बहुनि निषाद पुनि ये स्वर सातवखानि ॥ १ ॥ राग रागनी ताल स्वर बिनहू लहौ न पार ॥ नाम कान्ति लिखे राग स्वर निनिर्थार ॥ २ ॥ परब्रह्म प्रकार ७ ॥ रुद्र अरु साखीहू भयो अस्ती भानी सोइ ॥ प्रिये नाम अरु रूपये ब्रह्म सप्त विधि जोइ ॥ ३ ॥ स्वर्ग ७ ॥ प्रथम कहत भूलोक को भुवर्लोक स्वर्लोक ॥ महर्लोक जनलोक पुनि तप अरु सत्य सुलोक ॥ ४ ॥ देव पुरी ॥ * ॥ ७ ॥ * ॥ विष्णु शिव पुरि ब्रह्म पुर अमरावती विचित्र ॥ अलकावति वरुणावती और जम पुरी मित्र ॥ ५ ॥ मुक्ति पुरी ७ ॥ मथुरा माया अवध पुर काशी कांची जानि ॥ द्वारावती अवंति का सप्त मुक्ति की खानि ॥ ६ ॥ दीप ७ ॥ जंबू और पलक्ष कुश क्रौंच कहत पुनि शाक ॥ सालमलि पुष्कर दीपये भाषे वेद सुवाक ॥ ७ ॥ समुद्र सप्त ७ ॥ लवण सिंधु रस इक्षु को सिंधु सुरा को खान ॥ घृत दधि क्षीर सुनीर को सिंधु शुद्ध उर आन ॥ ८ ॥ महा प

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

वंत जंबूद्वीपके ७॥ कहत हिमालय निषद पुनि विं
ध्याचल कवि लोय॥ मल्लि मान को जानिये पारि या
त्र कहि जोय ८॥ गंध माद नहि भनत सब हेम कूट
है और॥ सप्त महा पर्वत भले पूजत ठौरही ठौर॥ १०॥
सप्त पर्वत भरत खंडके ७॥ माहेंद्र पुनि मलय र
ऋक्षिक पुनि परि जात॥ गुह्य विंध्य गिरि सप्त ये भा
रत मे विख्यात॥ ११॥ सुमेर नाम ७॥ कंचन सैल सु
रालया रत्न खानु जु सुमेरु॥ हेमाद्री अरु देव गृह
सप्त नाम कहि मेरु॥ १२॥ सप्त पाताल ७॥ अतल वि
तल पुनि सुतल कहि और तला तल जानि॥ महत
ल और रसातलै भनि पताल गुन खानि॥ १३॥ अ
थ शिवोक्त मुहूर्त:॥ वार जोग नक्षत्र तिथि कर्क चंद्र
बल काल॥ फल योग एसकाल गहि त्यागु सबल जंजा
ल॥ शिवा लिखित अब लोकिकै निश्चय मनमें रा
खि॥ किये कार्य सब होहि सिध पंडित जनकी साखि
८०॥ आश्विन कार्तिक मार्ग शीर्ष पौष एक क्रम जा
नि॥ ज्येष्ठ अषाढ़ सु एक पुनि पौष तृतीय बखानि॥
८१॥ माहेंद्र अरु अमृत कहत वक्र शून्य पुनि होइ
विजय अरु सोभन विलंब कहि चौथे मरन गनोइ॥
८२॥ ४८॥ ६॥ १५॥ १७॥

अथ सप्तावर्ण

छिति जल पावक पवन पुनि पंचम गगन बखानि
अहंकार षट सातवों महात्तत्व पहिचानि॥ १४॥ इ
कते इक्कदश रुद्र महत इहिविधि को वृत्तन्त॥ तेहि
पर माया जानिये ब्रह्म जु सबको अन्त॥ १५॥ सप्तवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७॥ सूर्य चन्द्र अरु भौम बुध गुरु शुक्र शनि होइ॥ सप्त वार ये कर्म सो कहत सकल जग लोइ॥ १६॥ अश्विनी जिह्वा॥ ७॥ हरिन्या गगना रक्तिका कृष्ण सुप्रभा जानु बहु रूपा अरु रक्तिका जिह्वा सप्त कृसानु॥ ५॥ सप्त अप्सरा॥ १७॥ तिलोत्तमा अरु भानु उरवसी सुकेशी होइ॥ मंजु घोष अरु मेनका सप्त घृताची सोइ॥ १८॥ सप्त ऋषि ७॥ कश्यप अत्रि वशिष्ठ गुरु विश्वामित्र वखानि॥ भरद्वाज गौतम सहित यामदग्नि उर आन॥ १९॥ पुनः ७॥ पुलह अत्रि भृगु अंगिरा पुनि पुलस्त जग जान॥ नारद त्रेय वशिष्ठ ऋषि सप्त दुलिय विधि मान॥ २०॥ पुनः चिरंजीव ७॥ कृप आचार्य बलि व्यास हित हनूमान द्वि जरामा अश्वत्थामा विभीषण चिरंजीव जपि नाम॥ २१॥ सप्त धातु स्वा

आश्विन		कार्तिक		मार्गशिर		पौषाएकाम	
रविहि	श्र॰अव॰अश्र॰पू		रात्रौ	वश्रं॰अश्र॰व॰म			
वा	२९ ८८ २४			२४ ४२ ६२			
चं	अश्र॰ अवु		रा	वअव॰अव			
	५४ ६ १६			६ ८८ २८			
मं	अश्र॰अव मश्र॰अ		रा	अवश्र॰अव म अश्र॰			
	८२ ४२ ४४			२४ २८ ४४ ४४			
बु	अव अश्र॰व मश्र॰अ		रा	श्र॰अमवश्र॰अ			
	६६ ४२ ४२ ४४			२८ ५४ ४ १०			
बृ	मश्र॰अव अ व श्र॰		रा	श्र॰मवअश्र॰अश्र॰			
	२८ ८८ २९ २			४४८ ४२ ४२			
शु	अव अव अश्र॰अ		रा	अव अश्र॰ अश्र॰अ			
	२२ ८८ २४			२४ ८ ५८ २४			
शा	मश्र॰अश्र॰वश्र॰अश्र॰		रा	वश्र॰अव अ मअ			
	२८ ८२ ५४२			४२ ९४ ८२ ४			

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

	ज्येष्ठ आषाढ योर्वार्म २		
रविदिवे	[illegible]	रात्रौ	[illegible]
चं	[illegible]	रा	[illegible]
मं	[illegible]	रा	[illegible]
बु	[illegible]	रा	[illegible]
बृ	[illegible]	रा	[illegible]
शु	[illegible]	रा	[illegible]
शा	[illegible]	रा	[illegible]
माघ	फाल्गुन चैत्र	वैशाख	श्रावण भाद्रपदस्यवर्मर्द
रविदिवा	[illegible]	रात्रौ	[illegible]
चं	[illegible]	रा	[illegible]
मं	[illegible]	रा	[illegible]
बु	[illegible]	रा	[illegible]
बृ	[illegible]	रा	[illegible]
शु	[illegible]	रा	[illegible]
शा	[illegible]	रा	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मी सहितः॥७ कंचन रुपा ताम्र अरु पीपरा रांगा
जानु॥पारा लोहा स्वामि इनको करम सुग्रह ऋ१
षि मानु॥२२॥सप्त उपधातु॥७॥अभ्रक सोंबल मै
नशिल गंधक अरु हरताल॥सुवरण माखी गेरु मि
लि सप्त उप धातु विचार॥२३॥सप्त मृत्तिका॥मू
लसान्तिकी ७॥बार पारगो सुंग अरु दीमक चक्र
कुलाल॥अरुवरु गजको थानकी मृत्तिका द्वार नृ
पाल॥७॥सप्त धान्य॥जव गेहूं तिल कोंकुनी उरद
मूंग अरु धान॥सप्त धान्य को नाम ये धर्म शास्त्र
सोजान॥२५॥सप्त त्वचा ७॥रस अरु स्त्री रोमतमे
दकहि अस्थि गुदा पुनि वीर्य॥त्वचा सहित त्वच१
सातए वरणात है गुण धीर्य॥२६॥सप्त ईति ७॥ अ
नावृष्टि अरु वृष्टिकहि टीडी मूसवका जानु॥सत्रु१
आपनि सैनभनि औपर सैन वखानु॥२७॥सप्तवि
धि युद्ध ७॥धनुष चक्र अरु वुन्तकहि खड्ग युद्ध
भनियंत॥छुरिका गदा समेतहूं मल्ल युद्धको मंत॥
॥२८॥जगाइवे जोग्य ७॥कार्जिक भूषा भामिनी
द्वारिवरक्षक भंडारि॥विद्यार्थी गुरु सप्त को जगावो
सप्त विचारि॥२९॥नजगाइवे जोग॥७॥अहिरा१
जा अरु सिंह शिशु मधु माखी परस्वान॥अरु मू
रख ए सप्तको जगावे नहीं सुजान ३०॥खालीहाथ१
नजाइये होर ७॥राजा कन्या ज्योतिषी वैद्य गुरु सुग
सिद्ध॥भरे हाथ इनपै गये होय कार्य सब सिद्ध ३१
दंडनीय ७॥खर चेरी मूषक पुजा पारु दुंदुभी पाखा
न॥दंड दिये सुख पाइये दुःख किये सनमान॥३२।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सात के भूषन॥७॥रैनजु भूषण चंद्रमा दिवसा भू
षण भानु॥दाशाभूषन भक्तहै भक्ता भूषन ज्ञान॥
३३॥ज्ञानाभूषण ध्यानहै ध्याना भूषण त्याग॥त्या
गा भूषण शांति पद तुलसी अमल अदाग॥३४॥
सप्तज्ञान भूमिका॥७॥शुभइच्छा रु विचारणा त
न मानसाक्षिसुहोइ॥सत्वा पत्तिही जानु पुनि असंशा
क्ति कहु जोइ॥३५॥षष्टि पदार्थ अभावनी सप्तम
तुरिया जानि॥न्यारे न्यारे भेद अब इनको कहो व
खानि॥३६॥पथः शुभइच्छा लक्षण॥१॥विषय
विषे भइ दीनता गुरु तीरथ अनुराग॥तातेशुभइ
च्छा कही कथा श्रवण मनलाग॥३७॥विचार भा
ल॥२॥दूजी वाही विचारना उपजी तत्व विचार॥ए
कांत होइ शोधन लग्यो कोंहो को संसार॥३८॥
तन मान सास॥३॥तन मनसा हिसु तीसरी मनको
प्रत्याहार थिर है शुद्ध स्वरूप में राखे सदा स
म्हार॥३९॥सत्वा पत्तिल॥४॥चतुर्थजु सत्वा
पत्तिहि यह अनुभव उदय अभंग॥आतम ज
गादरस्यों भलें ज्यों मथि सिंधु तरंग॥४०॥अ
सं सक्तिल॥५॥वूढ्यो तन अभिमान ज्ञान नि
श्चय कियो स्वरूप॥असंसक्ति यह भूमिका
पंचम महा अनूप॥४१॥पदार्थ अभाव नील
७॥कहे पदारथ बुद्धिलों सबको होइ अभाव
यहे पदार्थ अभावनी षष्टिसु भूमि लखाव॥
४२॥तुरिया लक्षन॥७॥भावा भाव जहान कछु स
प्तम तुरिया माहिं॥मैंतू तहांन संभवे कहां आहि कहं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाहिं॥४३॥मन सहित चंचल॥७॥छल दल पत्र पला
क पटु रामिनि कट्टप माया॥मूल दीप दीपक सिखा
योमन हति अनाथ॥४४॥इति विचार माला रामाय
ण कांड॥७॥बाल अयोध्या कांड पुनि तृतिय जानि
आरण्य॥किष्कांधा सुंदर कहत लंका उत्तर गाय॥
४५॥विनय पत्रिकाके विषे सप्त भूमिका॥७॥विनय पत्रि
काके विषे सप्त भूमिका ज्ञान॥ईश्वर ऊपर है वाही जीव
नु पंच प्रमान॥४६॥प्रथम वाहन सो दीनता मान मूर्खता
आन॥भय भक्त सदर्शन कहत आश्वासन हि बखान ४७
मनोराज वर्नन कहत बहुरि विचारहि ज्ञान॥सप्त भूमिका ज्ञा
न यह क्रम सो लक्षन मान॥४८॥यथा दीनता॥किहि
विधि देउ नाथहि खोरि १ मान मर्षता॥*॥काहेते
हरि मोहि विसारो॥२॥भय दर्शन॥*॥राम कहत
चलु २ भाई रे २ भक्तना॥*॥ऐसी मूढता या मनकी
४ आश्वासन॥*॥ऐसे राम दीन हित कारी॥५॥मर
नोराज॥*॥कबहु वाहुं इहि राहनि रहों गों यथा वि
चारना॥*॥केशव कहि न जाइ का कहिये॥७॥४॥
॥४६॥इति॥*॥*॥

अथ अष्ट वस्तु ८॥

श्री विष्णु जीकी स्वयं व्यक्त भूर्ति॥८॥बदरी
पुष्कर मुक्त अक्षरमा नाथ रंग नाथ॥मुष्ट केश वार
लाननों अष्टम ठाकुर नाथ॥१॥श्री महा देव स्वयं
व्यक्त॥८॥नीलेश्वर कालेश्वर अरु वैजनाथ रामेर
श॥डमरु नाथ केदार पुनि गोकर्ण रु विश्वेश॥२
श्री भगवान की पूजनीय प्रतिमा ८॥काष्ठ मूर्ति र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिल मूर्ति कहि चंदन लेपन युक्त॥ चित्र जु कागद पर-
लिख्यो प्रतिमा सुकरणयुक्त॥ ३॥ और मनोमय जानिये
पुनि मृत्तिका कीगंत॥ रत्न मनिन की सहित हरि प्र
तिमा पूजित संत॥ ४॥ पूर्व द्वारके पार्षद चंड और पर
चंड॥ दक्षिन के द्वै जानिये भद्र शुभद्र अखंड॥ ५॥ प
श्चिम द्वारे जय विजय कहत मुनीश वखानि॥ उत्तर
थाता रहत है और विधाता जानि॥ ६॥ देव योनि॥ ८॥
किन्नर चारन यक्ष अरु विद्या धर गंधर्व॥ सिद्ध जोगि
मुनि आठ इति देव समीपक सर्व॥ ७॥ श्री कृष्णजी
की पटरानी॥ ८॥ पटरानिनमे कृष्ण की प्रथम रु
क्मिणी जानि॥ द्वितिय जामवंती कही सत्यभामा पुनि
मानि॥ ८॥ कालिंदी रविकी सुता बहुरि मित्र विंदाजु॥
सत्या भद्रा लक्ष्मणा सुमिर होय सिद्ध काजु॥ ८॥ अष्ट
मात्रिका॥ ८॥ ब्राह्मी अरु माहेश्वरी कौमारी कहु जानि
वैष्णवी वाराही कहत इंद्राणी पुनि मानि॥ १०॥ चा
मुंडा है सातवीं मालक्ष्मी हैं अष्ट॥ माता थाता जगत
की भगवत किये हर कष्ट॥ ११॥ अष्ट सिद्धि॥ ८॥ अ
णिमा महिमा जानि पुनि लघिमा प्राप्ति जुहोइ॥ और
प्रकाशी ईशता अवसित वसिता सोइ॥ १२॥ मायाभे
द॥ ८॥ भूमि नीर पावक पवन अंबर मन बुधि जाना
अहंकार है आठवों माया भेद निदान॥ १३॥ अष्टव्या
करण॥ ८॥ इंद्र चंद्र काशिकृष्ण कहि अरु पिशलीक्ष
कर्ण॥ शाकटायन पाणिनी अमर और जैनेन्द्र सुवर्ण॥ १४
पूर्व अग्नि दक्षिण निरित पश्चिम वायु प्रमानि॥ उत्त
र अरु ईशान पुनि अष्ट दिशा सुजानि॥ १५॥ दिशान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के गनह॥८॥रवि भार्गव कुज राहु शनि शशि बुध जीव
क्रमात॥पूर्व आदि दै सूर्य को दिस दिस गनह विख्यात॥
॥१६॥दिग्पाल॥८॥इंद्र अग्नि यम निरित पुनि वरुण
वायु सुजान॥पुनि कुबेर ईशान कहि दिग पालनि प
रमान॥१७॥अष्टवसू॥८॥द्रोण प्राण ध्रुव अर्क पुनि
अग्नि दोष वसु जानि॥अरु विभाय वसु कहत हैं अ
ष्टवसू परमानि॥१८॥दिग्गज॥८॥ऐरावत अरु अभ्र
कहि वामन कुमुद सुहीक॥अंजन पुष्पो दन्त गज
सर्व भौम जु प्रतीक॥१९॥अष्टकुली नाग॥८॥प्रथ
म अनंत कहत है वासु कि तक्षक लेखि॥कर्कोटक
को जानिये संख पुलकि सविशेखि॥२०॥पद्मक मह
पद्मक गनत एला पत्र कामित॥अष्टकुली ये नाग ग
नि चतुर आपने चित॥२१॥अष्ट भैरव॥८॥असित
अंग अरु कहत है चंड और उन्मत्त॥क्रोध कपाली
भीषनरु संहारक भनि तत्त॥२२॥अष्टांग योग॥८॥
यमरु नेम आसन कहत प्राणायाम सुजान॥प्रत्या
हार सुधारणा ध्यान समाधि बखान॥२३॥आसन
सब रोगिनि हरै पापिनि प्राणायाम॥प्रत्याहार सुप्रति
हरै मन विकार के काम॥२४॥धारन फल मन धीर
ता अद्भुत प्रभुता ध्यान॥पावै दुख समाधि जे पुन्य
पाप तजि जान॥२५॥यथा॥१०॥यम॥१॥सत्य अहिं
सा आर्जव अरु आस्तेय सम्हार॥ब्रह्मचर्य धृति क्षम
दया औवि सुमित आहार॥२६॥नेम॥२॥तप संतोष
अरु आस्तिक दानरु पूजन प्रेम॥सिद्धान्त श्रवन अरु
लाज मति जाप होम दश नेम॥२७॥योगासन॥३॥२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लख चौरासी आसनहि जीव योन मित जान॥तहं चौ
रासी मुख्यहै तिनमें है इमि तानि॥२८॥सिद्धासन॥ए-
डी वांए पांवकी योनि थान दृढ राषि॥त्योहीं एडी दा२
हिनी मेढर ऊपर नाखि॥२९॥सम विम्नह करि डी
हिसों उभय भौंह विच होइ॥उघरे मोख कपाट अ
सिद्धासन यह होय॥३०॥पद्मासन॥वाम जंघ पर द
क्ष पग दक्ष जंघ पर वाम॥फेर दुहूं कर पीठ पर पक
रि अंगूठ तमान॥३१॥चिबुक वक्षथल लाइ पुनि ना
क अनी पर डीठ॥रोगहरन सुख सिद्ध करन यह प
द्मासन पीठ॥३२॥प्राणायाम त्रिविधि॥संस रेचि
पूरे उदर सोई पूरक जानि॥एक राषि वो वायु को सो
कुंभक पहिचानि॥३३॥तजि वो नाही पवन को रेच
क ज्ञान सुजान॥प्राणायाम विधान त्रय एही कहे
उ वखान॥३४॥प्रत्याहार॥५॥मनको दूवादां कीजि
ये प्रत्याहार सुहोइ॥धारणा॥६॥एक ठोर चित लाइ
के इहे धारणा जोइ॥३५॥ध्यान॥७॥चित लागे ला
ग्यो रहे ध्यान कहत है ताहि॥समाधि॥८॥ध्येय वस्तु पू
रण भासई यहै समाधि कहाहि॥३६॥इति॥मुमु
क्षू को त्याग वस्तु॥८॥माया ममता मोह मद राग द्वेष
अरु काम॥दंभ सहित ए आठ तजि कहै मुक्ति अ
भिराम॥३७॥रविवार कों वर्जनीय॥८॥तैल तक्र तां
बूल फल स्नान कर्म वारि वारि॥दन्तवन निसि भोज
न लवन रविको त्याग विचारि॥३८॥गंध नाम॥८॥
परिमल गंधा मोद कहि सुरभी जानु सुगंध॥आमो
दी दुर्गंध पुनि विस्र अरु कहि गंध॥३९॥यथा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रगरें सो उत्पन्न होइ जन मन हरन विचार पहुंचे अति
हीदूरिलौं ध्यान तृप्त करतार॥४०॥ भावे जो जावो म
नहिं वास कोरे मुख सोइ॥ बुरी गंध पल गंध पुनि अ
इहु कर्म तो होइ॥४१॥ गोकुलस्थ अष्ट छाप के नाम
८॥ श्रीवल्लभ आचार्य के चारि शिष्य सुख रास॥ प
रमानंद अरु सूर पुनि कृष्ण रु कुंभन दास॥४२॥ वि
ट्ठल नाथ गुसांइ के प्रथम चतुर्भुज दास॥ छीत स्वामि
गोविंद पुनि नंददास सुख रास॥४३॥ दुषनाहार॥
८॥ हडपचन थरवस आठ रु अक्षर अरीन दिषेष॥
नरकवि नामे प्रथम पद थरिवो विघ्न दुषेष॥४४॥
स्त्रीदूषण॥८॥ मिथ्याभाषण पीपुला लोभ असोच
विलोल॥ माया निर्दै अ रुखा तिय दूषन अनमोल
४५॥ मैथुन अंग॥८॥ सर्वत्याग संकल्प करि तन्मय
गुप्त विचार॥ कीर्तन सुमिरन देखिवो मैथुन अष्ट प्रका
र॥४६॥ त्यागनीय॥ लोभी व्यसनी राट मय निर्गुण
क्रूर कठोर॥ महा मूढ़ अन्याय रत तजो इन्हे मति भो
र॥४७॥ लाज वर्जनीय॥ गीत कवित नाचत पढत
युद्ध वाद संसार॥ अरु अहार व्योहार में लज्जा आ
ठ निवार॥४८॥ कन्या देन वर्जनीय॥८॥ निपट दूरिही
निकट अति महा धनी धनहीन॥ कन्या देहुन अ
ष्ट को दीन हीन मठ पीन॥४९॥ ५४५॥ इति॥

अथ नव वस्तु॥८॥

नवधा भक्ति॥९॥ श्रवण कीरतन सुमिरनो पाद से
व अनिषेद॥ अर्चन वंदन दासता सख्यसु आत्म नि
वेद॥१॥ सो नवधा त्रिविधि॥ आरमा रमन सियरम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न पुनि रुक्मिनि रमन सभाग॥ नवधा को नव गुण सर
सबरने संत विभाग॥२॥ प्रथम श्रीनारायणी॥ वैसम्पा
यन श्रवन में व्यास कीरतन जानि॥ नारद सुमिरन है
व पद श्री अर्चन पृथु मानि॥३॥ वंदन ब्रह्मा जानिये
विष्वकसेन सुदास॥ सखा भावहै शंभु को वलि अर
पो सब आस॥४॥ दुतिय श्रीरामा॥ वैदेही सुत सुनत
है वाल्मीकि विख्यान॥ कुंभज शिष्य जु सुमिर पुनि
भरत चरण रति मान॥५॥ अर्चन सेवरी नेकरो वंधु
विभीषण जान॥ हनूमान निजदास्य कपि पति र
मुख्य सुजान॥६॥ गीधराज सरबस दियो एनवधा
परमान॥ नंद नंदन के भक्त जे तिनको सुनो वखान॥
७॥ तृतिय श्रीकृष्णी॥ श्रवन परीक्षित करत है की
र्तन श्री सुकदेव॥ व्रजनारी अस्मरण पुनि उद्धव प
द रज सेव॥८॥ अर्चन द्विज पत्नी सुभग पृथुपाल
कपुत्र प्रनाम॥ भीष्मक कियो सुदास्य अति अर्जुन
सख अभिराम॥९॥ कुंती सरबस अर्पिकौ लीनो प
द निर्वाण॥ इहि विधि सब औतार की नवधा भक्ति
प्रमाण॥१०॥ नवधा ते दशधा भई दशधा ते जु अ
नन्य॥ सो अनन्य ते परं परा जिन्हे मिलैते धन्य ११
दशधा प्रेमलक्षण॥ नवधा भे इक प्रेम मिलि दश
धा भक्ति सुजान॥ प्रेमलक्षण॥ लक्ष को राह संत प
रमान॥१२॥ हसि रोवे गावे नचे देखे सुने सुनाय॥
निज प्रीतम को रहस में रहे सुदास सनाय॥१३॥
अनन्य॥ पंच भूत चर अचर में देखे अपनो नाथ।
निज सेवक की वांछा सो अनन्य प्रभु साथ॥१४॥ पण॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबतें परे जु ब्रह्म है सत चित आनंद मूल॥ परतें प
रे सुज्ञानि वौ हरे सकल भव शूल ॥१५॥इति
अथ नव रस निरूपणं॥॥
भूमि काहू दुख दूर जहां पढतु सुमन सुख होइ॥
विभावादि पोषैं जु तेहि रस कहियत है सोइ॥१६
सोरस नव सिंगार पुनि हास्यरस अद्भुत वीर॥ रुद्र
रुभय वीभत्स अरु करुणा शांत जु धीर॥ १७॥ रस
उपजतहै भावतें भाव पंच विधि धारि॥ भनि सि
भाव अनुभाव अरु थिर सात्विक संचारि॥१८॥ भाव
लक्षण॥ शुद्ध चित्त में विरति जो प्रथम उठ सो भाव
सोई रस अनकूल है लक्षन किय कवि राव॥१९॥
विभाव॥१॥ रसको जो कारण कहत सो विभाव है भा
इ॥ आलंबन दुक कहत है उद्दीपन पुनि गाइ॥२०॥
पुगटे जेहि अवलंबि रस सो आलंबन जानि॥ जिन
ते दीपत ह्वै बढै ते उद्दीपन मानि २१ आलंबन॥ ल
खैचु नायक नायका मनमें रस सरसाय॥ आलंबन
कवि कहत है ग्रंथन को मत पाय॥२२॥ उद्दीपन।
षटऋतु राग सुहाग अरु चित्त आनि रति भास॥
वास वास जल वास पुनि उद्दीपन कहि तास॥२३॥
अनुभाव॥२॥ विना कहे आकार लखि हिये हेतु
दर साय॥ ताही सो अनुभाव कहि वरणत है कविरा
य॥२४॥ स्थाई भाव॥३॥ बीज रूप सब रसनि मे थि
रसो थाही नाम॥ जैसे जल हिम माहि वर वरणत क
वि अभिराम॥२५॥ यथा॥ रति हांसी विस्मय कहत
अरु उछाह रिस जानि॥ भय ग्लानि औ शोक पुनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरु निर्वेद बखानि ॥२६॥ सात्विक भाव ॥४॥ अंग
चेष्टा वृत्ति चित्त सुप्रासक करि देइ ॥ सात्विक ता
सो कहत ते जो जानत रस भेइ ॥ २७ ॥ ॥ यथा
॥ स्तंभ स्वेद रोमांच अरु स्वरभंग कंप गनाव ॥ वि
वरन आंसू प्रलय स आठों सात्विक भाव ॥ २८ ॥
संचारी भाव ॥ छप्पै ॥ प्रथम कहत निर्वेद ग्लानसं
का सुइया धृति दैन्य मोह व्रीडा जु चपलता श्रम
मद स्मृति गर्व हर्ष आवेग कोह चिंता जडता पुनि
निंदा नीद विषाद स्व प्रउत्कंठाभय सुनि ॥ उन्माद
व्याधि रति उग्रता त्रास तर्क सु प्रबोध लहि ॥ पुनि
अपस्मार मृत वादस विविचारी तेतीस कहि ॥ २९
सिंगार रस ॥ १ ॥ दोहा ॥ बुधि विलास जुत जहं रहै
रति को पूरन अंग ॥ ताहि कहत सिंगार रस कोव
ल मदन प्रसंग ॥ ३० ॥ सो सिंगार द्वै भांति है इक सं
योग वियोग ॥ रस ग्रंथनि ते समुझि हैं सकल स
याने लोग ॥ ३१ ॥ हास्य रस २ ॥ स्वेत वरण है हास्य
रस नारद देव विचारि ॥ थाई तेहि हासी कहत का
वि पंडित निर्धारि ॥ ३२ ॥ अद्भुत रस ॥ ३ ॥ अद्भुत र
सहे पीत रंग ब्रह्मा देव बषान ॥ विस्मय थाई तासु
को वर्णत है बुधिवान ॥ ३३ ॥ वीर रस ४ ॥ गौर रंग है
वीर रस इंद्र देव मन आनि ॥ है उछाह थाई वहां
जो कवि करै बखानि ॥ ३४ ॥ वीभत्स रस ॥ स्याम रंग
वीभत्स है काल देव पहिचानि ॥ है गिलानि थाई
तहां कोविद कहत सुजानि ॥ ३५ ॥ करुणा रस ॥ ५
करुणा रस रंग धूमरो धर्मराज है देव ॥ शोक को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है थाई तहां सो विचारि मनलेव॥३६॥शांत रस॥८॥स्वेत वर्णहै शांतरस थाई है निर्वेद॥संत देवताकहत हैं जोग विकरत सुभेद॥३७॥नवरस त्रिगुण॥अरुण॥अद्भुत शांतएसात्विक वीर सिंहार॥हास्य तीन राजस तमु मिलतामस शेषविचार॥३८॥इति रस ग्रंथे नव रस भेदः अथ हाव लक्षन॥नारिनके सिंगार की आभा कहियत हाव॥याहूको अनुभावको अंतर भूत गनाव॥३९॥ जहां वचन क्रम चेष्टनें वरणत है कविलोय॥सो अनुभाव कहावहै तहां भेद यह जोय॥४०॥जोरति भाव प्रगट करे सो अनुभाव बखानि॥प्रगट भए अनुभाव केहाव होतहै जानि॥४१॥यह अनुभावत हाव विधि दूजो भेद उदोत॥ये शोभादिक होत नहिं ये शोभादिक होत॥४२॥इति रसबोध ग्रंथे॥*

शोभा अंग॥८॥दुति लावन्य स्वरूप पुनि सुंदरता मनीय॥कांति मधुर मृदुता वहुरि सुकुमारता गनीय॥४३॥यथा दुति॥सरद चंदकी झलक सम दुति तन माहिं लखाइ॥लावन्यता॥२॥मुक्ता जानिये सम गनो लावन्यता सुभाइ॥४४॥रूप॥३॥विनु भूषन भूषित जुतनु रूप अनूपम गोर॥सुंदरता॥४॥सब अंग सुभग सुहोन शुचि सुंदरता शिर मोर॥४५॥रमनीयता ५॥देखी अन देखी मनो रमनी अवनी सोइ॥कांति॥६॥कांति अंगकी जोतिसो भूमि खर्न सी होइ॥४६॥ मधुरता॥देखत तृप्त नमानिये तेहि माधुरी बखानि॥ मृदुता॥८॥परसे परसन जानिये सोई मृदुता जानि॥ ४७॥सुकुमारता॥९॥कमल दलनि सों सेज रचि २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोमल वसन उसाइ ॥ नाक चढत वैठत तहां सुकुमा
रता सुभाइ ॥४८॥ इति नव दुर्गा ॥८॥ सुभग सैलपु
त्री वहुरि वृह्म चारिनी जानि ॥ चरन चंद्र घंटा सुमि
र कूष्मांडा उर आनि ॥४९॥ स्कंद मातु कात्यायिनी
कालरात्रि को ध्यान ॥ महा गौरि गुन गाइए सिधि
दात्री उर आनि ॥५०॥ नव निधि ॥८॥ महा पद्म अ
रु पद्म काहि वाहप वहुरि मकुंद ॥ खर्व शंख अरु म
कर पुनि नीला जानहु कुंद ॥५१॥ नव नाडी ॥ इडा
पिंगला सुषमना पय स्वनी भनि यंत ॥ कुहूं गंधारी
जानिए अरु संखिनी भनंत ॥५२॥ पुरुषा अंवर अलं
वुका नव नाडी गिनलेव ॥ वर्णत है सवको हृदय योगी
जानत भेव ॥५३॥ इडा पिंगला प्रगट है चंद्र सूर्य को
होइ ॥ वांए अरु दहिने गनो मध्य जु सुषमन होइ ॥
५४॥ प्राण आपनो रूप जिय इडा पिंगला माहिं ॥
अर्थ ऊर्द्ध धावत रहे गहे और मग नाहिं ॥५५॥ सो
हं शब्द विचार ॥ है सकार वाहिर काढै वैठै होइ हकार
अजापा जप यह जपत जिय निशदिन विना विचार
५६॥ देह रूप देवालया प्रत्य गात मत देव ॥ निर्मान अ
विद्या वार्ज सह त्यागि पूजि अह मेव ॥५७॥ जो पूरन
पर वृह्म है सो प्रत्य गात मजान ॥ सोहं सोहं शब्द करि
निशदिन पूजन मान ॥५८॥ सोई ईश्वर को जानिये अ
हं शब्द लघु जीव ॥ सोहं तजि रहे एक रस वृह्म जीव
नहिं सीव ॥५९॥ स्वासा षट मान ॥ स्वासवान वै कोटि
को आयु जान नरलोय ॥ वीत जाइ स्वासा तवै तवही
मृत्तक होय ॥६०॥ ऋषिको त्रिगुन हजार गनि षट स

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न स्वास प्रकर्ष॥ अह निशा वर्ते दत्ति यह अनथ जियै
शत वर्ष॥६१॥ अकाल मृत्यु कोई मरे ह्वैवो भुगतें भू
त॥ स्वास जहै वीते सबै नव आवें यम दूत॥६२॥ नव
द्वार शरीर॥८॥ मुख दृग नासा कर्ण मिल सप्त शिष्ण
गुद दोइ॥ ए नव द्वार शरीर को जानत बुध जन सो
इ॥६३॥ जगत कर्तार ब्रह्मा को मान सिका पुत्र॥८॥
अत्रि मरीची अंगिरा पुनि पुलस्ति कहं जानि॥ पुल
ह और क्रतु जानिये वहुर प्रचेता मानि॥६४॥ पुनि
वशिष्ठ भृगु मान सिका नव सृजग करतार॥ नारद वि
नु संतान है ब्रह्म पुत्र निर्धार॥६५॥ पुनः सागरिका॥
८॥ भस्म दाहिने अंगुष्ठ सों दक्ष प्रजापत नाम अस
न दहिने सों धरम भयो हृदय तें काम॥६६॥ क्रोध
जान भ्रूमध्य तें तरे ओंठ सों लोभ। मोह बुद्धि सें वहुर
मद अहंकार सो शोभ॥६७॥ हरष कंठ अरु मृत्यु दृग
नव शारीरिक होइ॥ कन्या अंग जानाहि को कहै स
रस्वती जोय॥६८॥ नव महा जोगी श्वर॥८॥ कवि क
हियत हारीत पुनि अंत रिक्ष पर बुद्धि॥ पिप्पलायन
हिं जानिये आवि होत्र मति शुद्ध॥६९॥ सप्तम द्रुमि
ल भनत है अष्टम चमस वखानि॥ कर भाजन जुत
परम जन नव योगी श्वर जानि॥७०॥ नव नंद॥८॥
वला नंद उप नंद भनि सुखानंद मह नंद॥ परमानंदहि
जानि पुनि धरानंद गोविंद॥७१॥ नंद सुर सुर समुद्र
को नित्या नंदहि जानि॥ वडा नंद ए नव भए गोपवंश
सुखखानि॥७२॥ नव खंड॥ भरत कुला दत्त किंपुरुष
भद्रखंड हिरु माल॥ कहताहिरन्य और म्यहर पुनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुश खंड विशाल॥७३॥भरत खंड को खंड॥८०॥पहि
ले ऐंद्र कसेरु कहि ताम्र पर्न पुनि मानि॥चौथो खंड ग
भस्ति मत इह कुमारिका जानि॥७४॥नाग सौम्य वारु
न गनहु गंधर्व मिलि नव खंड॥भरत खंड को मध्य
जो नामे धरम प्रचंड॥७५॥नवद्रव्य॥८१॥पंच भूत-
अरु काल पुनि दिग आतम मन जाना॥हैमे यादू का
को मत एनव द्रव्य प्रमान॥७६॥नवरत्न॥माणिक मु
क्ता विद्रुम हु पन्ना पुनि पुखराज॥हीरा नीलम लहसु
नी पिरोजादि नव साज॥७७॥इनको स्वामी॥८२॥ह
रज ससि अरु भूमि सुत रजनी पति सुत जानि॥देवा
चार्य को गुरु दुहू शनि उपग्रह विय मानि॥७८॥नव
ग्रह कीलकरी॥८३॥आक पलास खैर पुनि चि-
चिरा पीपर जानि॥गूलर समी दुर्वा कुशा रवि ने काष्ठ
बखानि॥७९॥नवग्रह की औषध्य॥८४॥लाजालू अ
रु कूट वरियारा माल कांगुनी जान॥मोथा सरसोंपी
त पुनि दारु हलद पहिचान॥८०॥तर्पोका अरु लो
ह पुनि नवग्रह औषद होइ॥जलमें औटि नहाइ औ
वाथ करैने कोइ॥८१॥नव कीडे दाइ सो वडाई॥८२॥ग
ढ रचना वरनी अलका चितवन भौह कमान॥आ
युव कारण यहि वेद तसन तुरंग मलान॥८३॥वटोही
को विश्रामोत्तर शोधन वस्तु॥८४॥हिव द्रव्य अरु वस्त्र
पुनि जल को पात्र उपान॥लाही पुस्तक मालिका भूमि
सोध कुर जान॥८५॥६३०॥इति॥

अथ दश वस्तु॥१०॥

औतार॥१०॥मछ कछ वाराह भनि औ नृसिंह अरु

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हर्न॥वावन विपति हरन गनो परसराम सुख कर्न॥१
राम चंद्र कोशल धनी वासुदेव भगवंत॥दोष रहु
लाकी सहित एक दश औतार भनंत॥२॥औतारन
को जन्म घोस॥चैत्र कृष्ण तिथि पंचमी भए मच्छ
औतार॥ज्येष्ठ कृष्ण तिथि जानु सो कूर्म प्रगट सु
ख सार॥३॥चैत्र त्रयोदशि कृष्ण में श्रीवराह
शुभकार॥माधव शुक्ल चतुर्दशी नर हरि विप
ति विदार॥४॥भादो शुक्ल द्वादशी वावन प्रगटे
आइ॥शुक्ल तीज वैशाख को परसराम सुखदाइ
॥५॥चैत्र शुक्ल नवमी विषे प्रगट भए श्रीराम॥
भादो आठे कृष्ण को कृष्ण सु पूरण काम॥६॥
मार्ग शीर्ष वदि तीजको भए बौद्ध अवतार॥चौ
विस एकादशि सहित कलंक बुद्ध सुख सार॥७॥इ
ष्टको नाम॥१०॥शिव ईश्वर साक्षी पुरुष चेतन स्वा
मी मानि॥जीव आत्म सेवत पुनि दृष्टा द्रू मन मा
नि॥८॥ताही कुमसो माया को नाम॥९॥शक्ति इ
छामाया प्रकृति जग प्रधान सुख खान॥कर्म अ
विद्या जगत ये जोग यथोचित मान॥१०॥महावि
द्या॥१०॥काली तारा मानिये श्री विद्या परिमान॥
भुवनेश्वरी सु भैरवी छिन्न मस्त का जानि॥१०॥
धूमा ही बगला सुखी सुमिरो अपने चित्त॥
मातंगी लक्ष्मी महा एकादश विद्या नित्य॥११॥
अग्नि काला॥१०॥धूमाथी उषा ज्वलनि वाह
न ज्वालिनी नाम॥विस्फुलिंगिनी जानिये सु
भ्रि सरूपा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाम॥१२॥कपिला हव्य महा वहुरि काव्य वहा कहि
अंत॥दशों कला स अग्नि के वरणत हैं सब संत ॥
१३॥ महा नदी॥१०॥श्रीगंगा गोदावरी पुन पुन रेवा
जानु॥कावेरी औ गोमती कृष्णा सिंधु बखानु ॥
॥१४॥ताप्ती और सरस्वती दशा नदी पुनीत॥वि
षाणु चरनते प्रगट हैं भाषत वेद सुगीत॥पु॰॥अर्जु
नको नाम १०॥अर्जुन फाल्गुन पार्थ वाहि वहुरि१
किरीटी जानि॥श्वेतवाह नर विभव मनि विजय१
कृष्ण सुखदानि॥१६॥नवम सव्यसाची कहे दश
मे धनंजय मान॥कृष्ण सखावको नाम दश लिये हो
य कल्यान॥१७॥ ज्ञान लक्षण॥१०॥अक्रोधता वि
राग युत जित इंद्री क्षमवंत॥दया सर्व जन्तुको हित
निरौ भता भनंत॥पु॰॥दाता पूरण भव रहित शो१
कन व्यापे एक॥दश लक्षन ज्ञानको भाखैं सहित
विवेक॥पु॰॥दशमो वर्जनीय कर्म॥कांस तैल अरु
मांस पुनि सुरा सहत दिन सैन॥वैगन और मसूर पु
नि अंजन दूहो वैन॥२०॥प्रातकाल दर्शनीय॥१०॥
रोचन चंदन स्वर्ण मणि दर्पन धेनु मृदंग॥गुरु अ
ग्नि रवि प्रातउदि कुरु दर्शन दुख भंग॥२१॥ दंडदो
ष॥१०॥जड़ काष्ठ दस्य विकार जुत परिनामी परि
छिन्न॥सावयव जाति सरूप जुत प्रति छिन्न
प्रति खिन्न॥२२॥विरह दशा दश॥ चिंता उद्वे
ग प्रलाप अभिलाख गुनका धन मानि॥उन्मा
द व्याध जड़ता स्मृति मरन दशा दश जानि॥२
३॥दारिद्र कर्ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्म २०॥ पग अंगुठासों भूवने पहिरे वस्त्र मलीन॥ दुत
पूजा रह शोधलघु हास रनाम मैं जानि॥ २४॥ हेउ संध्या
दिनमें करे सैन बजावे अंग॥ सौर वृद्धि त्रिनतोषिबो द
ए दारिद्र प्रसंग॥ २५॥ इच्छानाम॥ इच्छा वांच्छा र
अस्पृहा वांछा तृष्णा अभिलाष॥ काम मनोरथ दूस
दूह ए नाम प्रभाष॥ २६॥ सुवर्णनाम २६॥ स्वर्ण हे
म हाटका कनक रुक्म सुवर्न हिरण्य॥ जातरूप पु
निजांबुनद चामीकार दश गण्य॥ २७॥ भागवतल
क्षन २०॥ पंच भूत महदादिकी उत्पति वे सब सर्ग॥
पुनि विराटकी देहते प्रगट्यो जगत विसर्ग॥ २८॥
यथा योग ब्रह्मादिको स्थापन कहि अस्थान॥ भ
क्तानुग्रह को बहुरि पोषन कहे सुजान॥ २९॥ कर्म
वासना उत्तिहै मन्वंतर दस धर्म॥ हरि हरि भक्तान
को चरित ईशकथा शुभ धर्म ३०॥ प्रलय निरोधहि
जानिये छुटन अविद्या मुक्ति॥ आश्रय है ब्रह्मदश
भगवत लक्षन युक्ति॥ ३१॥ दश प्रकार ब्राह्मण॥ १०॥
देव ऋषी अरु विप्र कहि छत्री वैश्य बखानि॥ शूद्र
विडाल मलेछ पशु पुनि चांडाल दश जानि॥ ३२॥
यथा देव॥ १॥ सकल धर्म निधि अर्थ विद पढे पढा
वे सोइ॥ भिक्षासों करि जीविका देव विप्र सो होइ॥ ३३
ऋषी॥ २॥ षटकर्मी तप सत्य मय ऋषी विप्र सो जान
विप्र विप्र॥ ३॥ शूद्र विडाला मूलसो विप्र विप्र गुज
रान॥ ३४॥ छत्री॥ ४॥ अस्त्र चढे आयुध गहे द्विज
छत्री नय सूर॥ वैश्य ५॥ खेती गोरक्षा वनिज विप्र वैश्य
सोइ पूर॥ ३५॥ शूद्र॥ ६॥ तेल तेंदुल घृत दूध दधि तिल

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुनिलाव सुनील॥ अरु मधु बेचै विपहै परद्विपदुः
शील॥२६॥ मंजार॥ ७॥ भूत द्रोह मठकर्म रत पर छि
द्रहि निन देखु॥ हिंसा में तत्पर सदा द्विज मंजार सुले
खु॥ ३७॥ म्लेछ॥ ८॥ भैरजु पापी कूप सर वागादि
का कारिनास॥ संध्या अरु स्नान नहिं म्लेछ विप्र अघ
रास॥ ३८॥ पशु॥ ९॥ भक्षा भक्षवातघ्न अति गम्या गम्य
निसंक॥ पशु ब्राह्मण सो जानिवो सदा कारो तेहि संक
३९॥ चंडाल॥ १०॥ निंदकलोभी पिशुन अति निर्दय
पर धनहारि॥ विप्र जानि चांडाल सो द्विज दश विधि
निर्धारि॥ ४०॥

इति महाभारते राजधर्मे॥ * ॥

वादवर्जनीय १०॥ कवि गुरु आश्रित प्रेमि जन बंधु
वीर हित कारि॥ मूरख वधू सम्बंधि सो नहिं कारु वाद
विचारि॥ ४१॥ दश दश वर्ष लों दश वस्तुकी अवधि
१०॥ बाल वृद्धि रवि मेथुनच दृष्टि शस्त्र जिय जानु
विक्रम बुधि क्रम इंद्रिय रुदश दश वर्ष प्रमानु॥ *
४२॥ इति॥ ७॥ ७२॥ इति॥ *

अथ एकादश वस्तु॥ ११॥

नात पूजनीय ११॥ पंच भूत रवि सुरभिद्वि अरु २
आपा पर होय॥ भक्त भेष ये एकादश पूजो हरि सम
लोय॥ १॥ यथा विधि वेद मंत्र सों सूर्यको अग्नि सो
होम विधान॥ अतिथ भाव सों विप्रको त्रिनजला
दि गोजानु॥ २॥ भक्त भेष हरि बंधु सम हृदया का
सजु ध्यान॥ सर्वाधार सु पवन लखि जलको जल
फल पान॥ ३॥ धरणी को मंत्रादि सो भोगनि कारि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निज देह॥ सब भूतनि मय जानि प्रभु पूजो सहित
सनेह॥४॥इति भागवत एकादशो॥१०॥हर
बहुरूप बखानिये अंबक वृष कापिलेश॥ शंभु कु
पर्दी जानिये रैवत गनहु विशेष॥१॥मृग सुव्या
ध सर्पहि भनत और कपाली मान॥एकादश
ये रुद्र हैं मुनिजन करत बखान॥६॥शीघ्र नाम॥
११॥शीघ्र तुरित लघु क्षिप्र अरु द्रुत सम्बर सदृ
ण॥चपल आशु अविलंबित नाम एकादश पूर्ण
॥गोपनीय॥१२॥मैथुन मंत्र औषधि धरम पूंग
च छिद्र धन कोष॥निज अपमान कुदान गुन
कुश्रुति कीजिये गोप॥८॥विश्वास वर्जनीय॥१२
पावक पशु जल वृध नृपति शत्रु मूर्ख अहि दा
स॥लोभि पिशुन इक दश हि को कीजे नहिं वि-
श्वास॥८॥६॥८॥इति॥ ✻

अथ द्वादश वस्तु १२

मार्ग शीर्षते द्वादश साधिपति॥१२॥केशव ना
रायण मधुसूदन माधव गोविंद जानि॥विष्णु मधु
सूदन बहुरि त्रिविक्रम वामन मान॥१॥श्रीध
र ऋषि केशव पुनि पद्म नाभ है सोइ॥दामोदर मृ
ग शीर्षते अधिक पुरुषोत्तम होइ॥२॥द्वादश भा
नु॥१२॥विष्णु शक्र औ अर्जमा धाता त्वष्टा जानु
पूषा बहुरो कहत है विवस्वान परिमानु॥३॥स
विता भग मित्रा बहुरि वरुण अंशु अति तेजु॥ए
द्वादश रवि जानिये वर्णत कवि वृथ वेजु॥४॥
सूर्य वाला॥१२॥तपिनि तापिनी जानिये धूम्र म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रीची होइ॥ज्वलनि रची रुचिमा कही भोगद वेश्या र
मोद॥४॥कहत वेश्यनीधारिनी क्षमा और कविलोइ
द्वादश कलए सूर्जकी वर्णत बुध्यजन मोद॥६॥श्री
मत्ते परंपरा गुरु॥१८॥नारायणाने आदिले रामानु
ज परजंत॥परंपरा द्वादश भये श्रीमत्त के भगवंत॥
७॥नारायण लक्ष्मी सहित विष्वकसेन उदार॥सट
कोप छत्र ध्वजके भए वोप देव अवतार॥८॥पुंड
रीकाक्ष मुनि नाथ मुनि भेव॥राम मिश्र है चक्रके
मुकुट पराकुश देव॥९॥यामुनाचारी शंख है महा पू
र्ण पुनि जानि॥सिंहासन रामानुजहि शेष नाग पहि
चानि॥१०॥द्वादश वर्जनीय कर्म॥१२॥मद्य मांसम
धु तेल रति दिन निद्रा पर अन्न॥क्रोध कांस तांबूल
पुनि हिंसा लोभहि गन्न॥११॥द्वादश आभरण॥१२
नूपुर किंकान हार उर चूरी मुद्री होइ॥कंकन बाजू
बंद पुनि कंठसिरीफल जोइ॥१२॥वेसरि विरिया जा-
निये टीका अरु सिर फूल॥अम्बारह आभरन कहे सो
भा गनि अनुकूल॥१३॥सरयु नदीके तट विषे वन॥
१४॥कहि अशोक परमोद पुनि संतानक मंदार॥पा
रिजात चंदन बहुरि चंपक रमन कचारु॥१४॥आम्र
पलास कदंब पुनि हैतमाल सब अंत॥सरयूजी के
तट विषे द्वादश वन कहु संत॥१५॥कल्यान नाम॥१२
भावुक भव्यक कुशल शिव शुभ मंगल कल्यान॥भ
व्यजु श्रेयस भद्र पुनि क्षेम सत्त रवि जाना॥१६॥श्री
जगन्नाथजीकी यात्रा॥१२॥ज्येष्ठ पूर्णिमा श्रेष्ठ जग
देव देव अस्नान॥द्वितिया शुक्ल आषाढ़ तब रथ चढ़ि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करत पयान॥१७॥सोई पक्ष एकादशी हरिसेनी हरिसे
ना॥सावनकी सक्रांति शुभनाम कहावत ऐन १८॥भा
दो शुक्ल एकादशी पार्श्व पर्वतन चित्त॥कार्तिक पक्ष
अतिथिजया सैन कृष्णापन तीन॥१९॥मार्गशीर्ष
तिष असन रस वादत षष्ठी टेक॥पौष पूर्णिमा पूर्ण
सुख कहि पुष्या अभिषेक॥२०॥संक्रांनी वेदा मकर
माघ मास मह होइ॥फूलडोल फाल्गुन गनो फा
ग पुर्निमा सोइ॥२१॥होला सौरी चैत्रकी शुक्ल चतुर्द
शि स्वह॥पक्ष नथा वैशाख महं अक्षय तृतिया लक्ष
॥२२॥यात्रा द्वादश मुख्य है श्रीसुख कियो प्रसिद्ध॥
इंद्रद्युम्न को भाग की सोई सिद्धि समृद्ध॥२३॥७०॥
॥४॥इति॥ *

अथ त्रयोदशवस्तु॥१३॥

परम भागवत॥१॥नारद प्रह्लादहि भणत बहुरि प
रासर जानु॥पुंडरीक अरु व्यास कहि अंबरीक शुभ
मानु॥२॥शौनक भीषम कहत है रुक्मांगद कविलो
य॥अर्जुन पुनि जु वशिष्ट कहि और विभीषन होय
॥किंकरा नाम॥३॥कर्णी गभिस्तजु अंशुवार हो
थी तब शुनु गो भानु॥घृणि मयूष रश्मी मरिचि थि
षिणा त्रयोदश जानु॥१॥नदी नाम॥१३॥नदी तरंगि
नि निम्नगा अपगा तटनी होइ॥सैवलिका हृदनी
धुनी दीपवती पुनि सोइ॥५॥सरित भवति श्रोतस्व
नी सरी त्रिदशा जु वखानु॥नाही नाम गोपद सरिस
जो हरिपद रतिमान॥५॥७०८॥इति॥ *

अथ चतुर्दशवस्तु॥१४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

अनंत चतुर्दश ग्रंथि नाम १४॥ द्वादश लाज मास प्रति प्रय
महि कहौ अनंत॥ चौदह ग्रंथि अनंत की वनमा
ली सब अंत॥१॥ चौदह रत्न॥१४॥ अमृत चंद्र ल
क्ष्मी कहत धनुष धन्वंतरि जान॥ कौस्तुभ मनिउ
च्चै श्रवा ऐरावत परिमान॥२॥ कामधेनु मनि क
ल्पतरु सुरा गरल कहि यंत॥ संखसु अपरा सहित
ए चौदह रत्न भनंत॥३॥ चौदह विद्या॥१४॥ वृह्म
ज्ञान सुर साइनी सुरनिधि वैद्य विचार॥ ज्योतिष
औ व्याकरण कहि धनुष धर न जलपार॥४॥ ना
डी जानिबो कोक कहि वाहन फोरन और॥ नट
निर्तन संबोधना चारु चतुर्दश मोर॥५॥ चौदह इं
द्र नाम॥१४॥ वृद्ध श्रवा रोचन समुझि शांत चित
त्रिशिष वरवानु॥ विभु मंत्र दुम जानिये वहुर पुरं
दर मानु॥६॥ वलि अरु श्रुति पुनि शंभु धृति ऋतु
धामा फिरि होइ॥ दिवस पती सुचि मिलि भए चौ
दह इंद्र जु सोइ॥७॥ चौदह मन्वंतर॥१४॥ स्वायं
भू स्वारोचिष उत्तम तामस जानु॥ रैवत चक्षु
ष वैवस्वत सावर्णी परिमानु॥८॥ चाक्षुष धर्म सा
वर्णी ब्रह्म सावर्णी होइ॥ रुद्र देव सावर्णी इंद्र सा
वर्णी पुनि सोइ॥९॥ नमस्कार वर्जनीय॥१४॥ सौ
च हौर धावन वमन दतिवन करत अन्हाइ॥ भोज
न अचमन शीस मैं तैल लगाय जम्हाइ॥१०॥ नम
स्कार के पात्र हू कौरे जे इतने कर्म॥ नमस्कार नहिं
कीजिये कौरे तो होइ अधर्म॥११॥ पतित नपुंसक
प्रमत्त पुनि अपने ते लघु सोइ॥ चारि अपात्र ए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानिये सब मिलि चौदह होइ॥१२॥१२१॥ इति॥

॥अथ पंच दश वस्तु॥१५॥

तिथिनके स्वामी॥१५॥ वन्हि विरंचिहि समुझिये गौरी गण पति और॥ नाग स्वामकार्तिक गनिय सह रज शिव गण गौर॥१॥ दुर्गा पितर अंतक कहत विश्वेदेव प्रमानु पुनि हरि जानिय कामको शिव शशि कहत बखानु॥२॥ अमावस दिन पितृको वह सब कहत विशेष॥ प्रति पदादि सुर स्वामि ये लिखे ग्रंथ मतिदेष॥३॥ तिथिन को व्यानी य॥१५॥ कूंष मांड मतीरा लवन पुनि मूली अल्म सुनेमोतेल आमला नारियर लौवा चिंचिरा सेम॥४॥ अरु मसूर भाटा सहत कांकी ननुवा जानि॥ प्रति पदादि अभक्षए कुहुलो कर्म सों मानि॥५॥ द्यूत पूर्निमा रति अमा क्षौर चतुर्दशि जानि॥ मांस अष्टमी को तजो मुनि जन वचन प्रमानि॥६॥ अनर्थ॥१५॥ चोरी हिंसा द्रूह पुनि दंभ क्रोध अरु काम॥ वैर गर्भ मद भय कहि अप्रतीत पुनि साम॥७॥ बहुरि सपर्द्धा चित्त भय खेद पंच दश जोइ॥ अर्थ साध्य षट आदि को तेहि पारए नव होइ॥८॥ मेघ नाम॥१५॥ अभ्र मेघ जीमूत घन वारि वाह तडित्वान॥ मुदिर वलाहक वारिधर धारा धर पुनि जान॥९॥ जल मुच वारिद अंबु भृत धूम जोनि जुपयोद॥ बुधजन पंद्रह नाम घन जेहि सम तन लखि मोद॥१०॥ पवन नाम॥१५॥ वायु वात मारुत मरुत स्वसन सदा गति जान॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पवन समीर जु अस्यरस पर भंजन पवमान॥११॥
मातरिस्व अरु गन्धवह गंधवाह जग प्रान॥नाम
पंचदश पवनको समुझहु चतुर सुजान॥१२॥*
॥७३३॥दूति॥*॥
॥अथ षोडश वस्तु॥ १६॥
षोडश उपचार पूजा॥१६॥आवाहन स्थापनो
पाद्य सिंहासन होत।अर्घ्य और स्नान पुनि चंदन
पुष्प उद्योत॥१॥धूप दीप नैवेद्य कहि वहुरि आ
रती लेखि॥तांबूल सुप्रदक्षिणा नमस्कार सविसे
खि॥२॥श्रीभगवान के पार्षद॥ १६॥विष्वकसे
न अरु जय विजय नंद सुनंद विनीत॥भद्र सु-
भद्र अरु चण्ड पुनि है प्रचंड मुनि मीत॥१७॥
और कुमुद कुमुदाक्ष पुनि शील सुशील लहि जा
नि॥सह सुसेन षोडश भये पार्षद श्रीभगवान
४॥चंद्र षोडश कला॥१६॥अमृता कहत जु मा
नदा पुष्या पुष्टि सतुष्टि॥रति धृति शशिनी चंद्रि
का कांति जु तृष्णा पुष्टि॥५॥श्री कहियत अरु
प्रीति है भनत अंगदा नाम॥गनत पुनी है सकर
ल कविपूरण अमृत नाम॥६॥ब्राह्मण संस्कार
१६॥गर्भाधानरु पुंसवन सीमंतरु शुभ आद॥
नाम कर्म निष्कर्म पुनि जानहु बुद्धि अगाध॥
७॥अन्नप्राशन चौल कहि कर्ण वेद उपवीत॥
वेद रंभ दीक्षा वहुरि महाव्रतसु पुनीत॥८॥डा
ढी मुंडन मुंजिको त्यागन वहुरि विवाह॥संस्का
र षोडश कहे ब्राह्मण धर्म निवाह॥९॥षोडश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिंगार॥१६॥ प्रथम अंगशुचि एक विधि मज्जन हि
तिय बखानि॥ अमल बसन पहिरन तृतिय जावक
चारि सुजानि॥१७॥ पंचम कोप्र सवारिबो षष्टम भा
ग सिंदूर॥ भाल खोरि सप्तम कहत अष्टम चिबुकाति
लपूर॥१९॥ मेहदी कर पग रचन नव दशम अरग
जा अंग॥ एकादश षगा नग जडित बारह पुष्प प्रसं
ग॥१२॥ बासराग मुख तेरवों चौदह रंगिबो दंत॥
अधर राग मति पंचदश काजल षोडश भांत॥१३
॥७४६॥ इति*

॥ अथ सप्त दश वस्तु १७॥

पंच प्रान इंद्री दशो मन अरु बुद्धि सुजानु॥ तत्वस
प्त दश मिलि भयो लिंग देह पहिचानु॥१॥ लिंग
भंग जब लगि नही तब लगि जीव रहाइ॥ लिंग भं
ग जबही भयो तबही जाय बिलाइ॥२॥७४८॥ इति

अथ अष्टादश वस्तु १८

स्मृति नाम १८॥ मनु सु अत्रि अरु विष्णु पुनि औश
कहत हारीत॥ जागवल्कि उसना समुझि भनत यं
गिरा मीत॥१॥ जम वर्णत हैं सकल कवि आपस्तं
भ प्रमानु संवर्तहि समुझो हिये कात्यायनि जिय
जानु॥२॥ बहुरि बृहस्पति वर्णिये पारासर गुन र
व्यास॥ संख लिखित गौतम स्मृति दक्ष वसिष्ठ प्रका
श॥३॥ अष्टादश पुराण॥१८॥ ब्रह्म ब्रह्माण्ड वाव
न सरस ब्रह्म वैवर्त सुजान॥ मार्कंडाड भविष्य ये
राजस कहे पुराण॥४॥ नारद विष्णु वराह अरु
गरुड पद्म सुख सार॥ भगवत रूपी भागवत येसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विक निरधार॥५॥मीन कूर्म्म अरु लिंग शिव स्कंधराम
बिन विचार॥नामस शिवको अंगिरा हुनतहि मिटै स्वभा
व॥६॥पुरानन की श्लोक संख्या॥१८॥बावन ब्रह्म दश
दश सहस द्वादशहै ब्रह्मांड॥ब्रह्म वैवर्त्त सु दश सहस
पच पन पद्म अखंड॥७॥पंद्रह सहस सु चारि शत
मार्कंडेय सु पुरान॥साढे चौदह भविष्यहै तेइस वि
ष्णु बखान॥८॥पंच विंस नारद कहत सूकर चौविस
जानि॥उनइस गरुड बखानिये अठारह भगवत
मानि॥९॥मत्स्य सु चौदह सहसहै कूरम सत्रह होइ
लिंग एकादश कहत हैं चौविस रुद्र जु सोइ॥१०॥पा
वक पंद्रह सहस पुनि चारि सैकारा आनि स्कन्ध इ
क्यासी सहस अरु दूकसत कारत बखान॥११॥चारि
लाख रस सहस पुनि वेद सैकारा आद॥पुराण पुरा
ण श्लोक की कही व्यास मर्याद॥१२॥उप पुराण ना
म॥१३॥सनत कुमार हि जानि पुनि नारसिंह अरु
आदुर्वासा आश्चर्य गनि नारद कपिल प्रबंध॥१३
मानव अरु ब्रह्मांड कहि भार्गव गरुड बखान॥माहे
श्वर पुनि कालिका सावर सूर्य पुरान॥१४॥विष्णु
पुराण पराशरी पुनि संचय सर्वार्थ॥देवी भागवत
मिलि भये अष्टादश सब सार्थ॥१५॥महा भारत प
र्व॥१६॥आदि सभा अरु वन परव पुनि विराट उद्यो
ग॥भीष्म द्रोण अरु कर्ण शलि गदा सुप्तिक जो
ग॥१७॥स्त्री शोक अरु शांति पुनि अनुसासिका क
हि जानि॥अश्व मेध मौशल सहित महा प्रस्थान व
खानि॥१७॥स्वर्गारोहन अंतमें सबको है हरिवंस॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अष्टादश भारत परवकहै बुद्धि अवतंस॥१८॥ज्यो
तिष के आचार्य॥१९॥ विधिसुरगुरु जु वसिष्ट क-
हि अत्री मनु मुनिजानि॥ पुलस्तह लोमस कहत-
है वहुरि मरीची मानि॥१९॥कहै अंगिरा व्यास पु
नि नारद शौनक सोइ॥ भृगुरु च्यवन मांडर वहुरि
गर्गह कास्यप होइ॥२०॥पाराशर पुनि अंतमे क
है मुनीस वखानि॥ज्योतिष के आचार्य ये अष्टाद
श परिमान॥२१॥७६९॥ इति श्री तुलशी शब्दा
र्थ आदि प्रकाशे अष्टादश वस्तु विचार प्रथमोभे
दः॥१॥ अथ स्फटिक भेद॥२

गिरिजा सुति देरंव गजवदन विनायक जान॥लं२
वोदर इक दंतहै मातुर गण पति मान॥१॥गिरा
नामी ब्राह्मी वाणी भारती वाग सारदा होइ॥भाषि
त अति लंपति वचन वच व्योहार सुजोइ॥२॥लक्ष्मी
नाम॥लक्ष्मी कमलाहरि प्रिया सिंधसुता श्रीशातु
मा पद्मा पद्मालया रामा इंदिरा मातु॥३॥बुद्धि नाम-
धिषण प्रज्ञासे सुखी धीमति मनिषा मानि॥ प्रे
क्षा उप लब्धि चेतना सप्तबुद्धि चित जानि॥४॥ब्र
ह्मानाम॥ब्रह्म विधाता आत्मभू अजका स्वयंभू२
ज्येष्ठ॥पंकज भूपरजा पती परमेष्ठी सुरचेष्ट॥
५॥ दुहिनरु धाता चतुर मुख स्वर्ण गर्भ जगमान
प द्मासनरु विरंचि विधि वोधा पिता महान॥
६॥ इंद्र नाम॥इंद्र पुरंदर शक्रवृष वलाराति विबु
धेस॥वासव मघवा दृथश्रवा सुनासीर स्वर्गेस॥
॥७॥ जिष्णु विडौजा वज्रहा संक्रंदन मरुत्वान॥२

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूत्रामा अरु गोत्रभित लेष षर्भ सतमान॥८॥वज्री
हरिहय सहसदृग जंभ भेदि पाकारि॥सची पति पु
रहूत पुनि कौसिक नमुची हारि॥९॥कामदेव नाम
॥काम मनोभव मनमथन मदन मार द्रुमकेतु॥१
कंदर्प रति पति पंचसर पुष्प जनक जगहेतु॥१०।
संवर रिपु अस्मर वितन विषम वाण मनजात॥
आत्मभू कंदर्प पुनि प्रद्युम्न विख्यात॥११॥द्यौस
और परभात नामाथ्य दिवस दिनवासर अहन
पंच विख्यात॥अह मुख कल्प प्रत्यूषसी पंचतूष
परभात॥१२॥रात्री नाम॥रजनीनिसि जामिनितमी
छनदा छपा त्रिजाम॥निसि विभावरी सर्वरी रात्रि
एकादश नाम॥१३॥वज्र नाम॥दामिन छनदुति चं
चला तडित विद्यु थनजोत॥वज्र कुलिश पवि हादि
नी विदुर नाम कहि ओत॥१४॥समूह नाम॥गणसं
चय संघात चय ओघ वृंद समुदाय॥वार कुरंबक
डंब पुनि व्यूह निवह समवाय॥१५॥समूह तोम सं
दोह पुनि निकर वसर व्रज व्रात॥विंशति नाम स
मूह के कहे प्रगट विख्यात॥१६॥ओतार॥२४॥ना
म यथा ऋषे नाभाजी॥*॥जय जय मीन वराह व
मह नर हरि वलि वावन परसराम रघुवीर कृष्ण
कीरति जगपावन॥वोध कलंकी व्यास पृथु हरि
हंस मन्वंतर॥यज्ञ ऋषभ हय ग्रीव ध्रुवहि वरदेन
ध्यन्वंतर वद्रीपति दत्त कपिलदेव सनकादि वावा
हरण कारो चौवीसरूप लीला रची अग्र दास उरपद
धरो॥१७॥चौवीस ओतारन के जन्म स्थान॥मीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कूर्म्म धन्वंतरहि जान्म सिंध मुनि गाइ॥सनकादि
का वाराह मत्स हंस दत्ता पुर जाय॥१८॥नर नारा
यण स्वर्ग मे व्यास कालपी माहिं॥नर हरिचो मुल
तान मैं वावन प्रगट सु आहि॥१९॥अवध नाथ प्र
थु ऋषभ वो अवध पुरी मैं जानि॥कृष्ण चंद गो
कुल विषे हरि सुमेर तल मानि॥२०॥हय ग्रीव वं
दर विषे वोध गया के माहि॥मनु ध्रुव भए विदुर
मैं हत्त चित्र गिरि जाहि॥२१॥भरत जमुनिया ग्राम मैं
परसुराम अवतार॥नारायण सर कपिल मैं कलकी
संभल थार॥२२॥चौवीस एकादशी नाम॥उत्पन्ना
सफला वहुरि तृतिय जंवुकी नाम॥वहुरि दंदिरा१
जया पुनि विजया कहत सुवाम॥२३॥अंवरादि
का जानिये पाप मोचनी मान॥काम दुमिल का
कहत पुनि वारूथनी सुजान॥२४॥मोहनि अव
ला निर्जला जोगिनि मेनी सोइ॥चंडाल मोचनी
पुत्रदा जयानु पद्मा होइ॥२५॥अंगिरा अरु पापां
कुशा रंभ प्रवोधनि जान॥मोक्षिका अगहन शुक्ला
मैं एका दशी नाम प्रमान॥२६॥एकादशी व्रत वि
धान॥वेध दोष है चारि विधि व्रत एकादशि मोहि
स्पर्श अरु संगम कहत शल्य वेध सुनु ताहि॥२७॥
यथा॥षष्ठी पंच चालीस जो पूरव दशमी होइ॥*
तो निर्दोष एकादशी पलव तप्त रत सोइ॥२८॥है
पचास दशमी जवे संगम दोष कहाय॥पंच पन१
षष्ठिका शल्य है हत्यन वेध गनाय॥२९॥अर्धनि
शा जो उपजे राहु मसी दशमी विद्धा व्रत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

नको फलको लेत सुखवा ॥३०॥ तेहि वलतें सो पुष्टहै
करे धर्म को छेद ॥ जाते श्री भगवान को उपजत है
अति खेद ॥३१॥ तातें संतत संतजन हरि प्रसन्नहि
त जानि ॥ विद्धा तजिकों करतहै द्वादशि व्रत पर
मानि ॥३२॥ प्रथम दोष सत जुग विषे दूजो त्रेता
जानि ॥ तीजो द्वापर माहि गनि चौथो कलिहि
प्रमानि ॥३४॥ स्वल्प एकादशि को भए हीन द्वाद
शी जोइ ॥ उदय कालते रस मिलै त्रिसपर सोहै सो
इ ॥३४॥ ताको फलहै सहस गुन अव पारन वि
धि जानो होइ द्वादशी स्वल्प जो तामें पारन हान ॥
॥३५॥ अस जो द्वादशि दत्तकरि होइ त्रयोदशि प्रा
त ॥ तेहि के पहिले चरन में पारन सों अथ जात ॥
३६॥ आषाढ़ भाद्र पद कार्तिक रु शुक्ल द्वादशी मा
हि ॥ मित्र श्रवण रेवति भए पारन वर्जित आहि ।
॥ * ॥३७॥ अनुराधा को प्रथम पद दुतिय श्रव
नको जान ॥ अंति चरन रेवति तजो सुनु मनु व
चन प्रमान ॥३८॥ अस्व मेध शत तीर्थ जग पु
न्य समस्तहि पाइ ॥ एहि विधि करि एकादशी पा
तक देहु वहाइ ॥३९॥ इति श्री राम चंद्र स्य वंसा
वली ॥ * ॥ श्री अनादि अव्यक्त ते प्रगटे ब्रह्मा
जानि ॥ तिनके भए मरीचि सुत तिन सुत कस्य
पमानि ॥४०॥ सूर देव तिनके तनय वैवस्वत मनु-
राय ॥ तिन्हके सुत इक्ष्वाकु हैं जिन्हको कुहि वाह
य ॥४१॥ पु न विकुक्षि को वाण कहि अनरन्य भ
यो सुत जासु ॥ पृथु त्रिशंकु धुंध मारकों भये पुत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र नाम ॥५२॥ भये मान थाला तनय नाम सुसंधिक
हाय ॥ तिन्हके ध्रुवसंधी भये भरत असित सुख दाय
५३॥ सगर असमंजस जानिये अंसु मान जुदिलीप
भागीरथ ककुत्थ रघु हरि जानि अवनीप ॥५४॥
वाल्माष पाद संखरण समुक्ति वहुरि सुदर्शन जान
अग्निवर्ण सीघ्रग मरु प्रभुक नाम वखान ॥५५॥
अंवरीष जानहु नहुष पुनि ययाति नाभाग ॥ तिन्ह
के अज जिनके भये दशरथ सेवड भाग ॥५६॥ रा
मचंद्र लक्ष्मण भरत रिपुहरण से सुत पाय ॥ भएन
है नहि होहिगे जैसे दसरथराय ॥५७॥ वालकांड में
जिमि कह्यो वाल्मीक ऋषिराज ॥ ताहि रीति सोय
ह लिख्यो पढत वढै सुख ताज ॥५८॥ श्री रघुवर वें
शावली पढे सुनै जो कोइ ॥ न्हाइ गंग जिमि वंसके
पातक डारे धोय ॥५९॥ श्रीराम चंद्रस्य विवाहादि
राज पर्यंत का व्योरा ॥ ॥ व्याह भयो श्रीरामको वर्ष
पंच दश मान ॥ वारह वर्ष रहे अवध सतादस में व
न जान ॥५७॥ चैत्र शुक्ल दुतिया विषे चारवरष की
होइ ॥ प्रगटी सीता भूमि तें व्याह छठे जू सोइ ॥५८॥
माधव सितकी पंचमी तेहि दिन गृह तजि राम ॥
चित्र कूट द्वादश वरष जाइ कियो विश्राम ॥५९॥ ग्र
हे मास नव पहुंचिके पंचवटी सुखदानि ॥ असित
अष्टमी फागुकी सीता हर न सुजानि ॥५३॥ मार्ग
शुक्ल नौमी सुदिन दशम मास सुख कंद ॥ सुग्रीव पा
ई संपातितें हनु मलादि कपि वृंद ॥५४॥ दुआदशी
श्रीभानु सों कियो संभाषन जाइ ॥ इकम पूसवदी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लंक गढ़ फूकि चढ़े हरषाइ॥५५॥सप्तमि तिथि श्रीरा
म को दई खबर सब आइ॥अष्टमि ऊषा मध्य दिन
कियो पयान बजाइ॥५६॥सित परिवा को सिंधु त
ट पहुंचे सैन समेत॥मिल्यो विभीषण चौथ को
अति सुख मंगल हेत॥५७॥दशमी सेतारंभ दृढ
बंध त्रयो दश मान॥माघ कृष्ण द्वितिया विषे लं
का पहुचे जान॥५८॥द्वैज माघ सित आदि में चौ
दश कृष्ण वैशाष॥सत्तासी दिन लौं भयो युद्ध प्र
गट जगसाख॥५९॥मध्य पंचदश दिवस लौं सुख
ताई दुहु सैन॥बार बहत्तर जुद्ध अति कियो परम
बल ऐन॥६०॥मावस को जाणो गयो रावन जग
दुख दान॥शुक्ल द्वैज वैशाष को राज विभीषण ज
ना॥६१॥मिली जानकी तीज को चौथ चले चढ़ि वा
न॥पंचमि भारद्वाज को आश्रम पहुंचे आन॥६२
वर्ष चतुर्दश अवधि को बीते अवधिहि आइ॥छ
ठ को भरत दिवा मिले राज सप्तमी पाइ॥६३॥नौंदि
न चौदों मास लौं सियते रह्यो वियोग॥सहस वर्ष
इक संग रहे खान पान रस भोग॥६४॥इति पद्म
पुराणे रामाश्व मेधे द्वितिय श्री शब्दार्थ आदि प्रकाशे
स्फुटिका भेदे द्वितिय भेद २ ✻

अथान्हिक भेद ॥३॥

तरु छाया नदि कूप तट पथ जल भस्म मसान ॥
गोष्ठ दहन सुर सदन में मल मूत्रा दिन दान॥१॥
अंगुलसो दांतुन करै केवल लवन चुखाया माटी भ
षिके मास सम दोष पाइ विनसाय॥२॥पश्चिमा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दक्षिन रद किये धोवे मुख विख्यात॥ ताके पितरन
आवही स्नान सुनिः पाल जात॥ ३॥ सरिता स्रव
मन मुख करो कूप पूर्व मुख स्नान॥ रवि लखि व
ताल नहाइये गृह उत्तर मुख जान॥ ४॥ वहुते हि
ज जानहु सदा छत्री स्नान तडाग॥ वापी कूप सुवै
स्यहे शूद्र स्नान घट भाग॥ ५॥ निज घर न्हावे सी
त जल वहिर उष्ण जल जोइ॥ ताहि पुन्य नहिं र
न्हान को जाने विरला कोइ॥ स्नान करन को शक्ति
नहि तहां करहु इमि न्हान॥ ॥ भीजे वसन अ
गोछ तन यह कापिल स्नान॥ ७॥ कर्ण नयन सि
र रोगमें और कफामय मांहि॥ न्हाइ कंठ लौं मनु
ज औ सिर समान सो आहि॥ ८॥ श्रावण दिवै
मास में सरिता रज जुत होइ॥ समुद्र गामिनी व
रजि तहं स्नान कीजिये जोइ॥ ८॥ चतुर गुल
ते अधिक गह पाथर प्रति मन पूज॥ द्वादश अं
गुलतें अधिक धातुहुं कीं जु अपूज॥ १०॥ तीन व
र्ण पूजे शिला प्रतिमा शुद्ध प्रमान॥ महा देव को व
चन यह कोशव दास वखान॥ ११॥ भोजन पूजा
होम अरु दान प्रतिग्रह कर्म॥ कर रवि वाहिर जा
नुतें नकरु आचवन अर्म॥ १२॥ चेष्टा वृथा भली
नहीं अरु अंजुलि जल पान॥ अन्न फूकि नहिं
खाइये गोद रविव सवजान॥ १३॥ शब्द सहित न
हि पीजिये पय पायस घी वारि॥ अचमन हू
तिमि जानिये सुरा पान अनुहारि॥ १४॥ भोजन
समय युवाम दिशि जल घृत दहिने होइ॥ जल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मदिरा सो जानिये घृतसो रोगन सो होइ ॥१५॥ वाम पा
द पर हाथ धरि दक्षिन मुख जो खाय ॥ वमन लपे
टे सीसमें सो राक्षस होजाय ॥१६॥ कूकुर कुर्कट ख
पच अरु रजस्वला जो नारि ॥ खात लखे सो अन्न
तब त्याग जोग निर्धारि ॥१७॥ तेंदू वट कुम्भी बास
पीपर अरु कचनार ॥ अर्क पत्र महु खादुकों चान्द्रा
यण करिडार ॥१८॥ अग्नि पचायो अन्न जो विनाउ
दक के होय ॥ ताको लीजे फल सदृश दोष लेश नहिं
कोय ॥१९॥ गोरस घृत माखी सहत लवण साकर
वस्त्र ॥ हाथ दियो जो खादुतो दिन दुकखानन सस्त
२०॥ नाग वेलि दल मूलमें व्याधि अग्रमें पाप ॥ दू
दो दलहै आयुहर नाडी त्रुटित सन्ताप ॥२१॥ चूना
कंकर पान नस कथ्थ तेलै काढि ॥ दल सुपारी दू
रि करि नातरु दुखकी वाढि ॥२२॥ अष्ट उताने सो
दुये षोडश दहिनी ओर ॥ बत्तिस वाम स्वास कहि
भोजनांत सुखकोर ॥२३॥ पाग सीस करि सैन श्री
दक्षिण आयुर्वृद्धि स्वप्न बहुत पश्चिम दिशा वर्जित
धनद प्रसिद्धि ॥२४॥ पश्चिम सिरहि प्रवास में दक्षि
ण निसि ससुरार ॥ सैन शीघ्रही बराजिये बाढे अति
हित प्यार ॥ ॥२५॥ सुरमूरति गुरु अवनि पति विप्र
साधु सुख मूल ॥ मिलत अर्चिये मन सहित वस्तु
कहू फल फूल ॥२६॥ वृद्ध नरण शिष्य वर्ण जो
आवै अपने गेह ॥ अभ्यागत लखि पूजिये गथा
शक्ति करि नेह ॥२७॥ शशि कलंक भृगुलात हरि
वडवा अग्नि समुद्र ॥ वडे णादित्या गत नहीं प्रो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ष भूमि विष सद्॥२८॥लषि पर तिय इंद्री सिथिल प
रधन लरिव अति अंध॥खेल कर वा दिन मूक जो
ताहि नाहिं भव बंध॥२९॥षट श्रीगुरु अरु देवको
पंचा नृपहि रिपु चारि॥तीन मित्र द्वै भारजा सुत २
सिख एक विचारि॥३०॥वर्जित कर्म॥पाट लिखन
विकथन सयन भोजन निंदित कर्म॥दोउ संध्या प्र
भु भजन विनु करै तु होइ अधर्म॥३१॥अमा पू
र्णिमा द्वादशी संक्रांतिरु रविवार॥तुलसी तोडन वि
ष्णु शिर तोडन समहि निहार॥३२॥कुसुम काली
को खंडनहिं कबहु कीजिये भाय॥वृहाथालको
दोषहै कमल कुंद कट वाय॥३३॥छटी तैल पल
अष्टमी क्षौर चतुर्दशि माहि॥मावस मैथुन पुरुष
के आयु क्षीन करि आहि॥३४॥जूता भूषन वस
न स्रग पान पात्र उपवीत॥धरो और को मति धरो
यह सिष्ट न की रीत॥३५॥द्वै भाई द्वै बहिन अरु
भाई बहिन जो होइ॥इका मंडप में इन्हन को शु
भ काज नहिं होइ॥३६॥बांझरु ठोढी रोगिनी न
ई जनी जो धेनु॥इनको गोबर काममें लेत नही म
ति ऐनु॥३७॥पिता पुत्र भ्राता जुगम तीनि विप्र नौ
नारि॥मिश्रित है पर देस को चलो न चित्त विचारि
३८॥अजामेढ गो महिषमज अश्व दासहि सोंजा
ना॥एक है त्रय सर सप्त षट आरुभ औरु भेहे आन
३९॥मृत्यु मुकाने जानको कवि बुध सोम सुगोन
शनि रवि भौम जु जाइ है बहुरि जाइ है तोन॥४०
टूटे भाजन स्वाद अरु पगपै पग धरि सोया गेह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

बुहारे सांझको अशुभ काम रजोय ॥४०॥ शुद्ध शुद्ध
नर नारी दोऊ अशुचि सैन मांहि जब होइ ॥ उठे पु
रुष अप वित्रहै नारी अशुचि न जोइ ॥४२॥ पहि
ले चांडाली दुतिय ब्रह्म घातिनी मानि ॥ तीजे दि
न धोबिन कही चौथे शुद्ध सुजानि ॥४३॥ न्हाइ मृ
तिका ते बहुरि होइ तिया सो शुद्धि ॥ पटही तजे सुरो
गिनी तब नाहीं सु अशुद्धि ॥४४॥ रजस्वला फिरि
होय तिय अष्टा दश दिन माहिं अशुचि नहीं सो
जानिये यही शास्त्र की छांहि ॥४५॥ बाल जनक
पति नरगई वृद्धा पुत्र सरोष ॥ तीनो पन रक्षा करे
सो तिय रहै अदोष ॥४६॥ क्षुधा दुगुन धीरज छगु
न बुद्धि होइ गुन चारि ॥ काम आठ गुन दशगु
नी लीज जानि सब नारि ॥४७॥ उत्तम मध्यम अ
धम तिय जुवा वृद्ध कै बाल ॥ छिन विश्वासन की
जिये भाषत वचन रसाल ॥४८॥ कारी गरको हाथ
शुचि औषध शुचि कर वहाहि ॥ शिशु मुख लाल
न मांहि शुचि तिय मुख मैथुन आहि ॥४९॥ उप
वीती जबलो नहीं पाच वर्ष को बाल ॥ तबलों भ
क्षा भक्षको दोष नहीं जंजाल ॥५०॥ नौका जगत
रु मंच रथ तृन चय जय संघात ॥ भीत काष्ठ स्प
र्सको दोष नहीं है भ्रात ॥५१॥ ताम्र पात्र मे जो रख्यो
दधि घृत मधु अरु क्षीर ॥ भाजन अरु सो वस्तु हूं
नष्ट जानिये धीर ॥५२॥ कांस शुद्ध है गोदते ताम्र
अम लते शुद्ध ॥ रजते नारी शुद्ध है नदी वेगते बु
द्ध ॥५३॥ तोशक तकिया फूल के रंग बसन वर जोइ
अन पदे जल छीटि फिरि कर्म जोग सो होइ ॥+

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५४॥ वांस फोड़ मल्लाह नट धोबी और चमार॥ अन
वधान नाते चुवे वोरे आचमन सार॥ ५५॥ कहो॰
आच मन तल्पही रवि दर्शन हूं जान॥ छूनो फि
रि गोपि टेकोनेसे रहिने कान॥ ५६॥ छीका भूंट
काहि पातसों बोलि खोदिके दांत॥ थूकि वायुनीचे
कटे कान छर्द्द शुचि सांत॥ ५७॥ निर्जन वन निसि
चोर अरु व्याघ्र युक्त पथ माहिं॥ वस्त्र हाथ ले मू
त्र विट करेतो दूषन नांहि॥ ५८॥ दिवस वायु रवि
कर्ण निशि तारा गनन समीर॥ संध्या समय समीर
करि पावन संतत नीर॥ ५९॥ गो महिषी छागी द्वि
जा जने भूमि नवनीर॥ वीते दस निशि होत है शुद्ध
सुजानत धीर॥ ६०॥ पय पायस घृत तक्र मधु तेसे
ऊख विकार॥ शुद्ध भांड़मे होइ तो दोष नही निर्धा
र॥ ६१॥ द्विजके पद शुचि जानिये शुचि अजाश्व
मुख जानि॥ गऊकि पीठि पवित्र अरु तिय सम अं
। सुमानि॥ ६२॥ काल माहात्म्य॥ चंद्र ग्रहण शत
रवि सहत तुला मेष मेलाख॥ है अनंत व्यति पात
मे दानशुभ सब साख॥ ६३॥ तीनि पक्ष शशि॰
चार रवि ग्रहन पूर्व नहि खाय॥ छुटे गेहन तव
छाइके खाइ सिष्ट जन भाय॥ ६४॥ शिष्यहि हने च
तुर्दशी गुरहि अष्टमी धाय॥ हने अमावस दुहुन
को पति पद पाद नसाय॥ ६५॥ द्विजहित गोहित
वृत्ति हित प्राण विपति के मांह॥ तियमे अरु उप
हासमे अनृत अनृत नहि आहि॥ ६६॥ ८९८॥

इति श्री तुलशी शब्दार्थ आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशे आन्हिक इत्यादि कर्म तृतीय भेदः॥३॥ *

अथ सामुद्रिक भेद विचार॥४॥ *

सामुद्रिक भाषा कविन बरनयो करि विस्तार॥ तामैं मैं संक्षेप कछु लिखत बुद्धि अनुसार॥१॥ बावन अंगुल पुरुष वपु नृपति पुत्र जो होइ॥ आदरज ग दिनदिन बढ़ै मिहातजैन सोइ॥२॥ भाल लक्षण॥ ऊचौं पालक धनाढ्य नर दुखी जुनीचौ भाल अर्द्ध चन्द्रसो पालक शुभ जानि लेहु भूपाल॥३॥ मूलका रेखा लक्षन॥ एक रेखा माथे धनी जुगुल सु पंडित मानि॥ तीनि रेख भूपालहै चारि सु भोगीजानि॥४॥ पुनः॥ बीसवर्ष इक रेख वय जुगल सु चालिस होइ॥ तीनि रेखतें साठ गनि चारिसु अस्सी जोइ॥ थू॥ कंठ रेखा लक्षण॥ एक रेख गल आयु बहु जुगल रेख गुन वान॥ तीन रेख नायक धनी चारि रेख नृप जान॥६॥ हस्त रेखा लक्षण॥ जानर कर रेखा बहुत पावै बहु दुख सोइ॥ सामुद्रिक सो जानिये सबके लक्षण जोइ॥७॥ पहुंचा रेखा॥ पहुंचे रेखा एक धन दुतिये पंडित जान तीनि सु रेखा भनानर चारि दरिद्र बखान॥८॥ स्त्री नाम दूषण॥ वन फल सम बिना बीसतरु कैदेवी कैनाम॥ निम्बैरण इ सबैकारे तरुणन कैएनाम॥९॥ अन्य विचार पुरुष अट्ठाइस बालक्षण॥ कामक्रोध युत बिबाहत दुवारी अतिलोभ॥ लंपट लज्जा हीनगनि विद्यारहित अशोभ॥१०॥ आलस अतिनिंद्रा बहुत दुष्टदया करिहीन॥ नृमदरिद्री जानिये रा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गी सदामलीन॥११॥देत कुपात्रहि दानपुनि भर
ण दानदृढ़ नाहि॥भोगीसर्वन समुझाई कथु प्रा
त्मन कोमाहिं॥१२॥अतिअहार प्रिय जानिये अ
हंकार युतदेखु महा कुलहरण नरनवो अङ्ग
दूस लेखु॥१३॥पुनः वत्तिस सुलक्षण॥सुलक्षण
अरु शील गुण सत्य पराक्रम जानु॥सुचित आ
त्म अभ्यास गनि वरविचार परिमानु॥१४॥सालत
ज्ञान ज्ञानीपरम पूरण परतिय त्याग॥मानी पु
नि लोकोपगनि औदासत्व विभाग॥१५॥विद्यापु
ष्टि वखानिये प्रियवादी शुभअंग॥आत्मकाम
सूक्षम वहुत गुणपरि पूरणअंग॥१६॥मातुपि
ता गुरु भक्तहै मनवच कर्महि जान॥रूपकरण
जित इंद्रिओ दाताधर्म निधान॥१७॥सुरपूजन
निद्रा अलप स्वल्प अहारी होइ॥येवत्तिस लक्ष
णन युत विरले जगमे कोइ॥१८॥श्रीरामचंद्रजी
के उभय चरणमे अडतालिस चिन्ह उमामहेश
संवादे॥शिवजी वोले प्रेमते श्रीगौरी परसंग॥
वरणो राघो चरणके चिन्हनको शुभअंग॥१९॥
सुरमुनि सज्जन भक्तजन जावे मंगल ध्यान॥
विनायोग जपतपरत वत पावत पदनिर्वाण॥२०
दक्षिण पदके मध्यमे उर्द्ध रेख है स्वच्छ॥वांम प
ग सरजू नदी चिन्हदेखि परतच्छ॥२१॥तेदोऊ
पगचिन्हकों प्रगट वखानो देखि॥ताकों अंतर
लक्षते मनविचार करिलेखि॥२२॥स्वस्तिक वहु
त्रिकोण श्रीहल मूसल अहिजान॥वाणवर औ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अष्टदल पंकजको पहिचान॥१३॥कल्पवृक्ष अं
कुश ध्वजा मुकुट चक्रको देख॥सिंहासनयमदं
ड औ चामर छत्रहि पेख॥२४॥रथऔ सुंदरव
ज्रहेयव अंगुष्ठसु वृद्धि॥ऊर्द्ध रेखको वाम दि
शि एलक्षण परसिद्धि॥२५॥शुभसोहै नरचि
न्हऔ वनमाला अभिराम॥ये चौवीसो चिन्हयु
त लक्षदक्ष परगाम॥२६॥गोपद पृथ्वी कुंभऔ
विजय पताका लक्ष॥जंबूफल शशिकाला औ
शंखछत्र कोण प्रत्यक्ष॥२७॥लीनकोण शुभग
दा पुनि जीवा तमतिल विंद॥सरजू दक्षिण२
भागमें याचिन्हनकोवंद॥२८॥शक्तिसुधा शर
त्रिवलि औ मीनपूर्ण विधुविंब॥वीणावंसीध
नुषको लक्षणेन प्रतिविंब॥२९॥तूण मरालस
चंद्रिका अंकुश परसोय॥रामवाम पदचिन्ह
शुभ एचौवीसो होय॥३०॥श्रीजानकी चरण
चिन्ह॥जेजे दक्षिणराम पग चिन्हलखावैस्व
च्छ॥तेतेसीता वामपद देखिपरै परतच्छ॥३१
जेई जेई रामको वामचरण हैं चिन्ह॥तेई तेई२
सीयको दक्षिणपद परविन्ह॥श्रीकृष्ण चरण
चिन्ह॥छप्पै॥ऊर्ध्वरेखा छत्र चक्रवय वामलक्ष्व
जावर॥अंकुश कुलिश सुचारु सथीये चारिजं
बुधर॥अष्टकोण दश एकालखण दक्षिण पग
जानो वाम पाद आकाश शंख वरथनुष पिछा
नो॥गोपद त्रिकोण षटचार शशिमीन आठ
वरचिन्हदो॥श्रीराधा वरसमाको ध्यावत निज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंगलनये॥श्रीराधाचरण चिन्ह॥छप्पै॥पुष्प
लतायव वलध्वजा ऊरद्ध रेखावर॥छत्र चंवर
विधुकालश चाप अंकुश दहिने धर॥कुंडल
वेदी शंखगदा वरछी रथमीना॥वामचरणके
चिन्ह सप्तएकहत प्रवीना॥ऐसेदस मुनि चि
न्हयुत राधेपद वंदित अमर॥सुमिरत अघहर
अनघवर नंदसुवन आनंदकार॥३४॥३४
३४॥३४॥८॰३३॥ * ॥

इतिश्री तुलसी शब्दार्थ आदि प्रकाशे सामु
द्रिकेचतुर्थभेदः ४॥*॥

अथवैद्यक विचार ५॥अवैद्यक वरणन का
रो हितजिहि पित्तकापावाइ॥उत्पत्ति लक्षण
शमन पुनि तिहुंकी लिखत बनाइ॥१॥पित्तउ
त्पत्ति॥कटुक तिक्ताकहु खाइ वो भूख प्यास
कौ साथ॥बहुश्रम करिभोजन करै कैमदिरा
आराध॥२॥ज्येष्ठदुपहरी मौतपे कैवैठै दिग
आगि॥आश्विन कार्तिक जेठ अरु चैत्रउठै पित
जागि॥३॥ताको लक्षण॥व्याकुल चित्त सूखे
अधर मुखकटु वो तपजाहि॥जरनि मूर छाजा
निये पित्त सरस तनताहि॥४॥शीतल परवह्नम
न चलै रोगिहि पूछि स्वभाव॥जानपित्तउप
चारकरु हरपितु सुख यशपाव॥५॥ताकोउप
चार॥रातिमाने पंखाकरै सीरे पानीन्हाय॥ लै
सवास मीठोभषै पित्ततुरित जरिजाय॥६॥का
फ उत्पत्ति॥खाटोमीठो तिलदही कै मारवनजो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोस्वादु॥सोवैफागुन चैतदिन दूनो कफ अधिको
हु॥७॥ताकोलक्षण॥नींदनाश मुख मधुर कल आ
लस भारीहोइ॥अंदकौ सोदुखु कंठमें जानिलै
हु कफजोइ॥८॥ताकोउपचार॥कटु वाकसैलो
चरपरो दिनप्रति खावैखाहु॥भावलेहु वौकौका
रो तातोपानी न्हाइ॥९॥वायुउत्पत्ति॥चिंता अ
रु वधिवो कौरे नैनदिना हरहरान॥वौउपास भय
भीतवौ वौरहवो कछुखान॥१०॥वहुक आयक
हुवो भरवै निशिजागि सीतहि खाइ॥पौषमाघ
पावस अषन अरु अषाढ़ हैवाइ॥११॥लक्षणजी
वबूडिवो पीरतन नींद भूख क्षयहोइ॥अंगासि
रो तरु वोजोरे वायजानिये सोइ॥१२॥ताकोउप
चार॥मर्दन कीजो तैलतिल तातोपानीन्हाय॥
तनसेवो मदिरा पियै यातेवाय नसाय॥१३॥

॥ ९५६ इतिश्री तुलसीशब्दार्थ
आदि प्रकाशे वैदक विचारे पंचमो भेदः ५

अथकाल ज्ञानविचार भेदः ६

कर्मबंध विनुछुटैजो मृत्युआनि नियराय॥तिहि
क्षण चहिये चेतचित प्रभुसन मुखको जाय१
तातेजाको योगपद सिद्धिहोइ नहिंहोइ॥ताहि
जानिये जोगहै मृत्युकाल निजसोइ॥२॥या-
ते विविध अरिष्ट सब भाषत मुनिदैकान॥जा
कोजाने होइनिज मृत्युकाल कोज्ञान॥३॥सुर
पषपुनि शशिछाय अरु भुजअरुंधति तार-
वरस सरस जीवैनसो जोनलखै नरनारि॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिनुकार रविबिनु तेजजोलरवे अग्निको ज्वाल
ताको ग्यारह मासतें अधिकान जीवन काल॥
५॥जोदेखे मलमूत्र निज कानवार जलरंगकोइ
आश्विन को सुपने सुदश मासजिये नरसोइ॥
६॥प्रेतपिशाचा दिकालखे सुवरन वरणोहस्ता
जीवेनहि नवमासतें अधिकारु पुरुष प्रनस्त॥
७॥वाशानन जाकोथूल अरु थूलदूरी होय॥
प्रकृति पलटे जासुवसु मासजिये नरसोय॥८॥
अनकी एडीपांवकी जानवको मथिवीच॥का-
टे स्वानलहै सोई सातमास में मीच॥९॥गीध
रकावा उलूका जिहि शिरपर परे सुदेखि॥जी-
वेनहि छह मासतें सोनर अधिकी लेखि॥१०॥
मारे जावो काकाकुल को वानर अरु जासु॥छा-
यानकी औरसी सोजीवे चौमास॥११॥इंद्र ध
नुष मयदिशि लखे अरुविनु वादर बीज॥मास
दोय को तीनिमें तासुपुरुष की छीज॥१२॥का
नवहै दुर्गंध जिहि औरगंध करिनास॥दंतजी
भ रंग श्यामला तीनिपाख विनाश॥१३॥घीव
तेल जलमेंलखे अपने देशिर जोइ॥एक मास
ते अधिक नहिं जीवन ताकोहोइ॥१४॥दुन्दी
सब निजनिज विषे जोअपने नहिंलेइ॥मा
सअन्त अन्तका तिन्हें आयुअन्त करिदेइ॥१५
दर्पणको प्रति बिम्बमें निजमुख लखेनजोइ
ताहूकी दूकमासमें अन्तआयुको होइ॥१६॥
रोमहर्ष मतिवंध अरु जीभमूल जिहि थूल॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

डीठपरे इकपारवतें अधिकान जीवन मूल ॥१७॥
जावेंतनकी गन्धजब सूतक गन्ध समहोइ ॥
अर्द्धमासते अधिकसों पुरुष नजीवे सोइ॥१८
निर्जल सरिता भस्मभरु श्यामसर्प्प बहुजोइ
स्वपने देखेमरण तिहि एकादश दिनहोइ॥१९
जाहिन्हान कीनेतुरित सूखेसरस कपोल॥२०
मिटे नहिजलपिये दशदिन मरण सुबोल॥
२०॥भूतजासुकी डीठिकों हनेघोस असरेन ॥
सातरातते अधिक पुनि जीवन तासु बनैन॥
२१॥आथो वपुशीतल रहै आथोतातो जासु
औरसुने नहिं कानते मरण सातदिन तासु॥
२२॥श्यामवसन ओढ़ेथरे दंडलोह कोहाथ।
जोदेखे यों सुपनमें मरण तीनदिन साथ॥२३
कवित्त घनाक्षरी॥असन कियेते त्योहींतुरित
क्षुधित होयदसन कराल नर सपने सतावई॥
टेढ़ीहोइ जाइनाक कैथोंकान नीचोंऊंचों कै
थो एकोवायें नैनआंसू ढरकावई॥कैथोंजाइ
दक्षिण दिशाकों आदरास भयहोवो असवार
ऐसे सुपने लखावई॥पलटै सुभावकै प्रकृति
विपरीति होइ ऐसोक्षीण आयु सों मरण सघ
पावई॥२४॥दोहा॥योगीज्ञानी औरजे महत
पुरुष परवीन॥मरण कालजान्यो चहैं लहैंचे
त चितयीन॥२५॥प्राण त्यागन विधि॥भोरदु
पहरेके परे दिनमें अथवा रैन॥लखैअरिष्टहि
चितदै योगी जे बुधिरैन॥२६॥अंतर बाहिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लक्षतें अंतकाल कीजैना॥यमनियमादिक्या पु
नहि राखि अधुरलें नैना॥२७॥डीठिनाकोवो
आनपर राखिआपकल वालाग॥इंद्रिन रोकिवि
कल्प तजि औरंधि नवद्वार॥२८॥सुखवपु
निश्चल चित्तकरि सिद्ध पद्मासन साधि॥ना
मसों प्राणायाम करि साधै शुद्ध समाधि॥२९
वचकरि मनकरि प्राणकों मननजाय उरया
र॥तीनिकाल नवखोंका अरु आदिनतीनि आ-
धार॥३०॥वेदतीनि अरु शुद्धित्रय तीनि देव
ता सार॥देहीमात्रा तीनिको येसब हरन अ
धार॥३१॥सोहंहै परब्रह्म करशब्द ब्रह्मनिर्धार
परम जोति परमातमा स्वर्ग पर ओंकार॥३२
शुचि अथवा अनशुचि जापैजोयह जापदिनरा
ता॥ताहिपाप लागैनहीं जैसेजलज लजात॥
३३॥पारग अपानहि संधिको दंमदंत दृढ़या-
पि॥हृदया कुंज पैठेपिमन मूलमंत्र आलापि
३४॥ओंकारको धनुष करि गुरुगम गुरुगलिहि
ठाना॥आत्मरूप संधीलहित दशमेद्वार निशान
३५॥हैलक्ष मोसों तावकुल परमात्मा मेंलीना॥
जोईपरम अकाशहै समाचित्त आनंद पीन॥
३६॥ऐसेन्यारो देहको यहीअवस्था माहिं॥
सोईमुक्त विदेह में योगीरवि भवछाहिं॥३७
इतिहट प्रदीपे॥अथगीतायां शुभाशुभ मृत्यु
अग्निजोति दिनशुक्ल षट उत्तरायन कोमासा
जानजु ज्ञानीयाम में लहत ब्रह्ममें वास॥३८॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूमानशा दाहरण अग्नि क्षीपक्ष जीहाइ॥ शीशमंड
ल योगीलहै वहुरि आइहै सोइ॥३८॥इतिपुनः॥
शुभमृत्यु॥तीर्थाटन सन्मुख समर परहितु हेतजु
मरण॥वा विकोविद मत देखिवकै यहशुभ मृत्युसु
वरण॥४०॥अ काल मृत्यु॥अग्निदहनजलवूडि
वो सर्पडसन अरु स्वान रूखगिरन वृषमारनो
सिंहथरन परिमान॥४१॥वृकारवायोजोहोतुहै
औरखाय विषकोय॥आप घाता दिक समुभि
ये मृत्यु अकाल सुहोइ॥४२॥पुनः मृत्यु सदृश
३॥वृद्धसमय तियको मरण पुत्रहस्त धनजान
असन वधूको वसवसन तीनहु मृत्युसमान॥४३
पुनः॥जीर्णअन्न पतिधोस भख अरुजोवन
गत तीय॥शूरपानो युद्धते मृतक तुल्यहैजीया
४४॥पुनः॥नदीपार जाकी दारवी नारिकरकसा
दूर अहिगाहिवो अभ्यास जिहि ताको मृत्युन
दूर॥४५॥*॥पुनः३॥जीर्णवृक्ष शुभछंहह हत
जीर्णभवन हतवास॥जीर्णकूपकोनारहत मृत्युती
नकोपास॥४६॥पुनः ४॥मृत्युडोलिवो रातिको मृ
त्युभूप तियप्रीति॥मृत्युविप्रको दोषहै मृत्युनारि
प रतीति॥४७॥पुनः४॥गृहनि दुष्टअरु मित्रस
द उत्तर देइ जोमृत्यु।सर्पसहित गृहमैं रहन चार
मृत्यु येसत्य॥४८॥पुनः४॥तरुचढ़िवो तरिवो स
रित औरअजीरण खान॥शृंगीविष पावक नि
काट एषट मृत्युसमान॥४९॥ ९८५ *
इतिश्री तुलसी शब्दार्थ आदि प्रकाशे कालज्ञा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नादिको षष्ठो भेदः ६॥ अथ गणित विधि भेदः ७

जोगन नीहीपर धर्यो प्रथम क

र्म दूहि माहि॥ नाने संख्या ग-

णितहूं काछू कहन सुनु नाहि॥ २॥ गुण नरु

भाजन जानिये सबलेखा को मूल॥ नाने ह्वैही

धरनह्यां लेखधारि अनुकूल॥ ३॥ हिमी जामु

न सेवहू का गणित पारसी माहिं। साहदीका नि

हिनाम धरि प्रगट कारन दूहि दाहिं॥ ३॥ साहदी

का जानं॥ जोड देइकै अंकावहु वहुरि जो च्चिये

नाहि॥ इकादश अकथान सहसको कारविचार

काछु नाहि॥ ४॥ सबरका मनसों काटिकै नौनौ

वचैजु सेष॥ नाहि मिलावो दीकसों मिलैतोस

त्य सुलेख॥ ५॥ अंकस्थान संख्या॥ एकक दश

शत सहसगनि अयुत लक्ष प्रयुतोर॥ कोटिस अ

र्बुद अब्जभनि खर्व निखर्व सुदोर है॥ महापद्म

संखक जलधि अंतिज मध्य परार्ध॥ अष्टाद

शए सुक्रम कारि दश दश गुणहै सार्ध ७। *

१०००००००००००००००००००० संकलन विधि॥

अंकाथान क्रमजोरिवो कहै संकलन सोइ॥ प्र

टि करिवो जो अंकाने अंक को कालन होइ॥ ५

८॥ उदाहरण॥ द्वैअरु दश बत्तीस पुनि सातथा

ट शतत्तीन॥ जोरि अंक सबफाल कारो सहसमा

हिं तेहीन॥ ८॥ न्यासः जोरने पाए ३३७ या

को हजारने घटाए बाकीरहे ६६३ संकलन

की साहदीका॥ द्वैअरु दशके तीन बत्तिस को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पांच सबभये आठ॥ अरदो सयतिरानवेको चौ
दह सबमिलाय बादूस नौनौ नष्ट २ | १००० | ३
बारेसों बाकीरहे चारसोई तीनसय २ | | ९७
मैतीस कीदीका सोनौनो निकारने | ३३७ | ३२
सोंबाकी चार रहतहैं दोनोंमिलि २ | | २९३

गए जान्योविहीका ढीकहै ब्योकलनकी साह
ढीका हजारको दशजानिको तीनसय मैतीसको
नौबाद देनेसों चारबाकी निकाले रहे छहसो
ईछह सयतिरसठ में नौबाद देने सों छह बचेहैं
गुणनि विधि॥ पू॥ जासों गुणिगये सोगुणाक जो
गुणिगये सोगुणाय॥ गुणायो अंकनों गुननि पाल
लहिये पूरे गुणाय॥ १०॥ उदाहरण॥ पांचतीनि
इक अंकको बारह सोंगुण मीत॥ यथायानध
रि जोरिपुनि लेहु गुणान विधिजीत॥ ११॥ प्रथ
म विधिसोरठा॥ गुणो गुणाक करिभाइ गुणाय
अंतको अंकको॥ पुनिगुणा काहि सरकाइ शेष
अंक इक इक गुणो॥ १२॥ यथा | १ २
ऐसेधरि गुणायो याविधि जोरे तें | १ ३ ५
पाए द्वितीय विधि॥ दोहा॥ तित
नेखंड करोगुणाक जाहिसरलता पाइ॥ पृथक
पृथक सबसों गुणो पिरसब देहु मिलाइ॥ १३

| १ २
| २२ ३ ५
| २२ ६ ०
| ३५
| १

यथा॥ बारह गुणाकको सूथीविधि
जानिदे खंडकरे॥ १०१२ एकसय पै
तिसको दैदोर धरि पहिले दशते गु
णयो १३ ५० पिरदेसों गुणायो २७०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

येदोनोंको समस्थान ऐसे थरि मिला एते भए ॥
१६२० तृतीय विधि ॥ भागलिये जासों गुणक
शुद्ध होइ तिहिलेइ ॥ पहिले तासों गुणयगुणि
लब्धहि सोगुणि देइ ॥ १४ ॥ यथा बारह गुणक
में तीनसों भागल यो लब्ध भए ४ पहिले एक
सैपैयतीसको तीनसों गुणयो भए ४०५ याको
फिरि चारिसों गुणयो भए १६२० तेई चतुर्थ वि
धि ॥ इष्टहि युतको ऊनकरि गुणकहि गुणय
गुणइ ॥ गुणयो अंकसों करहु पुनि युत वर्जि
त तिहिनाइ ॥ १५ ॥ न्यासयुत करिवेको गुणक
में आठ बढ़ाए भए २० तासोंगुण गुणयो २७००
पुनि आठसों गुणयो भए १०८० याको वासों
निकरि डारयोरहे तेई १६२० न्यास घटाइवे
को बारह गुणकसों द्वै ऊनकिये रहे दश ता
सों गुण गुणयो फिरि द्वै सोगुणयो दोनोंसम २
स्थान थरि जोरि दए भए तेई १६२० पंचमवि
धि बारहु क्षेत्र चतुरस्र इक होइ अंक तिहिठो
र तिनने कोठा तहंकारो थरहु अंक दुहुं ओर
१६ ॥ इक थरको द्वैघर करो प्रथम इकाई जानि
लिखो दहाई दुतियमें अंकवाम गति मानि ॥
यथा गुणक कोठरी जोरेते भए तेई १६२० या
कीसाहदीक गुणकमें बारह को तानही गिन
तीमें आए अंकगुणय में एकसय पैतीसको नौ
भये जोकहु नौसों अधिक होते तो नौको तष्ट
करि बाकीको परस्पर गुणाते तहां नौको तीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

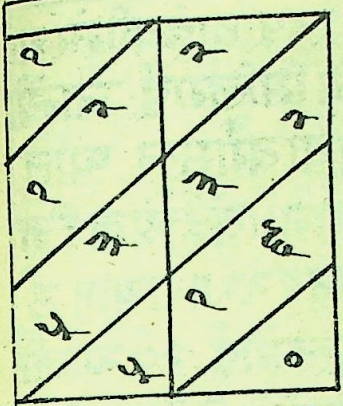
२
२
२

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की नौसंख्या अरुभाजकफल १३५ ताहूंकी संख्या नौसोईहै भाज्यकी संख्यातासों मिलिगई जान्यो कीहीका मुद्रहै इति अथवर्ग वा वर्गमूल ध्यान दोइसम अंकको वर्गकहावै जान॥दहैअंक जिहि समगुरायो वर्गमूल पहिचान॥२२॥यथा॥ उनतिसको वर्ग ८४१ अरुवर्ग मूलसोई २९ याकी साहदीका उनतिसमें नौवाद देनेसों बचेहैं है सो-दोनो उनतिसके दैदैकोपरस्पर गुरायो भएचारसोई आठसय दूकातालिसमें से नौवाद देनेसों चारवाकी रहतहै दोनोहीका मिलगए याहीभाति साहदीकाकी विधि घन अरुघन मूलहू में जोदैवार सम अंकसों गुरायो जातहै जैसेदैको घन ८ अरुमूल २ अरुतीनको घन २७ मूल ३ जानना इति मनआदिको भावसों सेर आदिको ज्ञान॥दोहा॥जैरुप येको एकमन करोअष्टगुण ताहि॥सोईदाम प्रमाणहै सेरभरे परचाहि॥२९ अथसेरे चौगुण करो पौवेदुगुण जानि॥आध पावसोइ दामहै छटांक अर्द्ध प्रमाण॥२४ चौ मनको जोभावहै दूनेकरि लिहिलेहु॥दूकाआने के दामको सवदा वीसगनेहु॥२५॥होइ टवाई मोलजो मनको तौ दूहि रीत॥ताहिसवाई सेर को दामपैसही मीत॥२६॥सेरको भावसों पैसेभरका ज्ञानजैरुपयेका सेर दूकाचौगुण ताहिकरेहु॥सोईदाम प्रमाणहै पैसेभरको देहु॥२७॥अस्सीभरके सेरकी विधियह काहीसुजान॥न्यूनार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

थिकाजो होइ तो दोनोंको तिहिमाहि॥ पैसेभरको
सेर परमान सों भागलेहु तिहिमाहि॥ पैसेभरको
मोलको आनेजानहु ताहि॥ २९॥ उदाहरण॥
जैसे अठारह गंडीसेरसों पांचरुपैयेसेर कोईव
स्तुहै पांचदूने दशसेरको अर्द्धनो दशमें भगले
नेसो एकआना अरुएवा आनेको नवांश मि
ल्योऐसे १।१।९। पैसेभरको मोल तोलेसो रत्ती
को मोलको ज्ञान जैसेरुपये तोला विकैवस्तुसुन
हुसज्ञान॥ षष्टम आनेतासुको मोलरत्तीको जान
३०॥ आननको रोज सों वर्ष द्रव्य ज्ञान॥ जैसे आ
ने रोजहै नौगुण करिय सुज्ञान॥ अर्द्ध पंचसों २
गुणिगत करि वर्षरुपैय मान॥ ३१॥ पुनः॥ जैआ
नेहै नित्यको वीसगुणे करितांहि॥ द्वैआने थरि
सर्वपर वर्षरुपैये चाहि॥ ३२॥ नित्यको सेरसों व
र्षको मनगत ज्ञान॥ अन्नादिक जैसेर नित नौ
गुण करि तिहि देव॥ मनसंख्यासों होतहै वर्षा
सन सुनुभेव॥ ३३॥ पुनः॥ वर्षद्रव्यसों एकादिन
को मानज्ञान॥ वर्षद्रव्यसों दामदुक लेइ नवम
करि दूरिसेषरहै तिहिदाम गनि कारलेषाभरि
पूर ॥ ३४॥ मासिकसो एकादिनको मानज्ञान॥
लीजो मासिक द्रव्यसों आधाना इकदाम॥ दाम
तिहाई दूरिकरि लहु इकादिन बुधिधाम॥ ३५॥
अनार वीजज्ञानं दाडिम पक्वाक गूरही कीजो
तिगुने ताहि॥ ताको छगुणे चोगुणे वीजकाहे
गुणिताहि॥ ३६॥ नीबू नारंगी वीजज्ञानं नीबू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरु नारंजकी लीकगनो निर्धार॥ समदुगुणो
त्रिगुणो विषम तामें बीजविचार॥ ३७॥ खरबू
जा तरबूज पेहटा बीजज्ञान खरबूजे तरबूज
अरु पेहटे परजै लीक॥ अट्ठासी सो गुणित
करि बीजजानु त्रिहिठीक॥ ३८॥ जुगसिंधु अ
क्षोहनी प्रमाण॥ अयुत मतंगक अयुतरथ र
ओर अयुत दशसूर॥ अयुत सैकरा अश्व पु
नि छत्तिस लाख भटभूर॥ ३९॥ चाहिय व
हुत उदाहरण तवसमुझैं सज्ञान॥ तातो थो
रो सोलिख्यो लेखवाको परमान॥ ४०॥ १०॥ ३५॥
इतिश्री तुलसी शब्दार्थ आदि प्रकाशे
गणित विचारे सप्तमो भेदः ७॥ *
अथ ज्योतिष विचार॥ सुमिरि रामघन श्याम
उर धरेधनुष वरवाण॥ अबज्योतिषके सिंधु
को वरणत बूंदसमान॥ १॥ अचरज अज कम
लज करत कामलज अजते खर्व॥ सिंधुबूंद
अरु बून्दन सिंधु सुगम सुख सर्व्व॥ २॥ *
ज्योतिष जाको रूपहै रेखनि मेषरु दंड॥ ति-
थि दिन योग नक्षत्रशिर क्षत्रमंड ब्रह्मंड॥ ३॥
प्रथम तिथि नामसंज्ञा॥ नन्दा भद्रा अरु जया
रिक्तापूर्णा होइ॥ पांचों संज्ञा तिथिनकी क्र
मसो फिरिफिरि जोइ॥ ४॥ नक्षत्र नाम॥ २७॥
अश्वनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिर जा
न॥ आर्द्राओर पुनर्वसु पुष्यश्लेषा नाम॥ ५
मघा पूर्व्वफाल्गुन गनिय उत्तरा फाल्गुन औ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आर॥हस्त चित्रा स्वाति तीन पुनर्वसु विशाख शिरमा
ह॥६॥ अनुराधा ज्येष्ठा अपर मूलापूर्व्वाषाढ़॥७
उत्राषाढ़ श्रवण पुनि कहत धनिष्ठा वाढ़॥७।
शतभिष पूर्वाभाद्र पद उत्रभाद्रपद जान॥ अन्त
रेवती नखतस सताइस परिमान॥८॥नक्षत्रति
थिकी शुभाशुभ घटी॥ तिथिनक्षत्रके अन्तकीती
नघटी कहिदेत॥वर्जनीय शुभकाममें इनतें रहे
सचेत॥९॥नक्षत्र स्त्री पुरुष नपुंसक जान॥आ
द्रीत्ते दशस्वातिलों नखत जानु सकलीय॥चारि
नपुंसक कहत पुनि तेरह पुरुष गनीय॥१०॥२
पंचक भेदः॥अन्त धनिष्ठा अर्द्धसो और नख
त गणिवेद॥पंचक ताको जानिये इनतें काज
निषेद॥११॥पंचक वर्जित कार्य॥पाटन छानन
काष्ठतृण संचन मृतक दाह॥सेजबुनन दक्षि
ण दिशा भूलिन चलिये राह॥१२॥यात्रिकान
क्षत्र ८॥अश्वनि पुष्य पुनर्वसू हस्त धनिष्ठा२
जानि॥श्रवण मित्र मृगशिर बहुरि रेवति नव
शुभमानि॥१३॥मध्यम यात्रिक १३॥मूलरोहि
णी शतभिषा तीन उत्तरा जान॥ गुनपूर्व्वा जे
ष्ठा बहुरि मध्यम गमन बखान॥१४॥यात्राव
र्जित ८॥अश्लेषा आर्द्रामघा स्वाति सहित शति
कासु॥अरविशाख चित्राभरणि वर्जित अष्टप्र
कासु॥१५॥योगनाम॥प्रथम योग विष्कुम्भ पु
नि प्रीति आयुष मान॥सौभाग्यस शोभन सु
अति गंड सुकर्म बखान॥१६॥धृतिशूलस पुनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गंडहै वृष ध्रुव व्याघात॥ हर्षवज्र पुनि सिद्ध कहि
व्यती पात विख्यात॥१७॥ वरियान कहि परिघ
शिव सिद्धि कहै पुनि साध्य॥ शुभ शुक्ल वरब्रह्म
गण इन्द्र वैधृति व्याध्य॥१८॥ इनमें अशुभ ८
वज्र विकुम्भ गंड अति गंड परिघ पुनि शूल॥
व्यतीपात व्याघात नव योग वैधृत मूल॥१९॥ इ
नकी त्याज्य घटी॥ तीन तीन रस ६ रस ६ समुद्रि
तीस पांच पुनि नन्द ९॥ शेष दुहुनको सर्वत्र शुव
आदिक नव भद्र॥२०॥ भद्रा विचार॥ शुक्लपक्ष १
तिथि आदिमें अष्टमि पूर्णोगन्त॥ चौथ इकाद
शीके विषे भद्रा तिथिको अन्त॥२१॥ कृष्णपक्ष १
पाछे रहे तीजरु दशमी सोइ॥ पहिले चौदश स
प्तमी भद्रा वास जु होइ॥२२॥ भद्रास्थान ज्ञान॥ वृ
श्चिक सिंहरु मीन घट भद्रा पृथ्वी वास॥ अज वृ
ष कर्क मकर स्वरग शेष पताल निवास॥२३॥
भद्रास्वरूप ज्ञान॥ भद्रा रवि गुरु देवता सोम शु
क्र मानुष्य॥ शनि मंगल पक्षी वाहो बुध खरजा
नहु मुष्य॥२४॥ देव काज पुरवै सदा मनुज सुख
रवहि समेत॥ खग्रहै काज विलंबर्द खर अति अ
शुभहि देत॥२५॥ भद्रा दिशा वास नाम ज्ञान॥ पू
र्वादिक दिशिमें बसत रसंख्यक तिथिमाहि॥
इंद्र नाग नग तिथि निगम दिशा सद्र गुणताहि
२६॥ भद्रा हंसी नंदनी मिश्री सुमुखी नाम कह
त कराली वैष्णवी रौद्री दुर्मुख वाम॥२७॥ भद्रा
में क्रतव्य कार्य॥ नृपदर्शन अरयुद्ध भय नदी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

तरण बिषकाम॥ मरण बन्धन नवगवन ऋतु
स्नान रतिवाम॥२८॥ संकट वैद्य बुलावनो उच्चाट
न पसुकाज॥ भद्रामध्यि कीन्हे सुखद कहे स
कल द्विजराज॥२९॥ योगिनी विचार॥ परिवा
नवमी योगिनी पूर्वचढ़ी गजलक्ष॥ तीजएका
दशिअग्निमें वाहन अजा प्रतक्ष॥३०॥ पंचमि
ने रसि व्याघ्रचढ़ि दक्षिणमें तिहिवास॥ चौथ
द्वादशी खरचढ़ी नैऋत कोनिवास॥३१॥ षष्ठी
चौदशी पश्चिमें वृषभ सुवाहन साज॥ पूनोस
प्रमि माडिनी वाहन वाहि वराज॥३२॥ हैजरा
दशमी उत्तरहि अश्वसु वाहन जान॥ आठमा
वस स्वानचढ़ि वासकोरे ईशान॥३३॥ ताकोशु
भाशुभ। वायेपृष्ठे योगिनी सुखसंपति शुभजा
न॥ दृव्यनसावे दाहिनी सन्मुख लेकुजु प्राण॥
३४॥ कालविचार॥ रविउत्तर वाइव शशी भौम
पतीची मानि॥ बुधनैऋत दक्षिण गुरु शुक्र
अग्नि त्रियजानि॥३५॥ शनिपूरव दिशि वाह
तहें सातवार दिशसात॥ काल दाहिने शुभम
हा सन्मुखअति उत्पात॥ सर्वांकविचार॥ तिथिवा
र भनिजनामको अक्षर देइमिलाय॥ दूनीतिगु
णी चौगुणी तीनिकोरे समुदाइ॥३७॥ षष्टसप्त
पुनिअष्टसों भागलेइ धीमान॥ अंकावन्चे तौ
शुभमहा अशुभ शून्यफल जान॥३८॥ प्रथम
शून्यमें हानिपुनि दुतिये दारिद होइ॥ तृति
येजानहु मृत्यु दृढ़ सर्वनाश करसोइ॥३९॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुनः दिनविचार॥ चैत्रमास सौं कीजिये दूनेमा
सविचार॥ परिवासो तिथिको गनो एतवारसो
वार॥४०॥ सबमिलाय के सातसो तष्टकरहु स
ज्ञान॥ शेषवचै सोजानिये दिनको नामप्रमा
ण॥४१॥ तोटकछन्द॥ श्रीवालह आनन्दजा
न पुनिकाल वांटकामान है धर्मतप सुनुभ्रा
त स्योविजय नन्दन मान॥४२॥ दोहा॥ जा
दिन शुभकारज करो तादिन जोदिन पावता
को अर्थ विचारिको तवतामें मनलाव॥४३॥ ता
राविचार॥ जन्मस संपति विपति पुनि क्षेमपा
प शुभहोइ॥ कष्टमित्र अति मित्रये नवतारा २
जियजोइ॥४४॥ जन्मविपति अरुकष्ट पुनिजो
दिन तारापाप॥ तादिन शुभकारज कियेहोय
महा सन्ताप॥४५॥ ताकोप्रगट ज्ञान॥ जन्मजरव
त तेलैगनो काजनखत लौं आनि॥ भागलेइ न
वको तहां वचै सुतारा जानि॥४६॥ पुनः नौवा
हन जन्मनखत चौगुणा करो अरुजोरो तिथिवा
र॥ भागलिये नौकोवचै वाहन सोइविचार॥४७
खरतुरंग हस्तीकहत मेषशृगाल जुहोइ॥ सिं
हकावा अरु मोरपुनि हंसन वों नामसोइ॥४८
अभिजित महूर्त॥ शंकुयात्राविधि॥ नखषोडस
अरु पंच दश चौदह तेरह जान॥ वारह वारह
सूर्यते छाया शंकु समान॥४९॥ चलते खर
पद पथम धरि गवन करे जोवोइ॥ विघ्ननआ
दे निकट तिहि सिद्धकार्य सबहोइ॥५०॥ शु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रविचार॥ एकग्राम विपदा करै तीर्थाटनमें जान
व्याह दोषनहिं मुन्नाको कहत सकल श्री मान॥
५१॥ मुन्ना दोषनिवारण॥ रेवतिते मृगशीर्ष लौं
मुन्नाअंश जबहोइ॥ यामें कीजे काज शुभ तासु
दोष नहिंकोइ॥ ५२॥ संक्रांति विचार॥ यात्रा
अतिही दूरिकी कियो चहै नरजौन॥ ताहि मेष
की सिंहकी धनकी शुभसंक्रौन॥ ५३॥ यात्रास
मय लग्नविचार॥ दहिने सन्मुख लग्नजो होइ
सिद्धि सबकाज॥ बांए मध्यम जानिये पृष्ठेम
हा अकाज॥ ५४॥ जौन लग्नमें रविलपै ताको
यहै विचार॥ पूर्व अग्निताम चलै सोह्वै अति
हीरबार॥ ५५॥ चंद्रलग्न इत्यादि गुण॥ तिथि इ
कगुण चौगुण नखत वार आठगुण जानि॥
सोरह गुणहै करणको बत्तिस योगवषान॥
५६॥ शत शशितारा साठहै लग्नसहस है सोइ।
यातेयात्राके विषे लग्नचंद्र मुखहोइ॥ ५७॥ द्व
दश राशिका चंद्रधात रामसत सई॥ शशिशर
नव दुइ छदश गुण मुनिफल वसुहर भानु॥
मेषादिका क्रमते गनहि धातचंद्र जियजानु
५८॥ पुनः स्त्री चंद्रधात॥ मेषादिक तियराशि-
को चंद्रजन्म वसुसात॥ नंदशास्त्र त्रयवेदहै द
शशिव शररवि धात॥ ५९॥ पुनः यात्रा समय
शुभाशुभ चंद्र॥ सन्मुख लाभद चंद्रमा दक्षिण
शुभसुख जान॥ पीछे शोक संतापहै बाए धनह
र मान॥ ६०॥ पुनः दूजो तीजो पांचवो सप्तम द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शवो जोइ ॥ एकादशये शुभकाहे मध्यम नक्षत्र
नोइ ॥६१॥ षष्ठजन्म अरु नवमजो मध्यम जा
नहु मीत ॥ अष्टम चौथो बारहों सबरा सिनको
भीत ॥६२॥ बारहवो चंद्र इतनी ठौर शुभ ॥ गर्भा
धानरु नृपतिलक वृतारंभ उपवीत ॥ व्याह स
हित शशिबारहों बुधजन कहत पुनीत ॥६३॥
चंद्रअंग वा सस्थान ॥ जन्मतीसरो पांचवों इन
को वासोमाथ ॥ दूजो सप्तम उरविषे दशम इ
कादश हाथ ॥ एतीनो अति शुभकाहे षट नव
मध्यम पृष्ठ ॥ अष्टम चौथो बरवों चरण विषे
षनि क्रिष्ट ॥६४॥ पुनः चंद्रत्रिलोक वास ॥ तिथि
पंच गुणवो चंद्रकी जोगत राशि मिलाय ॥ ती
निभाग सों ताहि हरु बचैसुथा नगनाय ॥६६॥
युगपताल इकस्वर्गमे मृत्यमृत्यु के लोक ॥ स्व
र्गमृत्यु शुभजानिये गरुपतालसु शोक ॥६७
चंद्र वर्गा मेखरु इष्त्रिका सिंह शशि रत्नायुद्ध क
रहोइ ॥ वृषीमुला पुनि कर्कजो श्वेत सिद्ध
ऐसोइ ॥६८॥ मिथुन मीनधन पीतहै लक्ष्मी
को दातार ॥ कन्यामकरसु कुंभकाहि कृष्ण मृ
त्युनिर्धार ॥६९॥ चंद्रक्षीन पुष्ट ॥ वदि पांचे तें
होत शशि सुदिपांचे लौं क्षीन ॥ तारावल तब
लीजिये वर्णहि गणवा प्रवीन ॥७०॥ पूर्वादि
क दिशाको यात्रिको नक्षत्र इत्यादि ॥ पूर्व अग्नि
के चलनको तिथिये शुभकरि जान ॥ दशमीदु
तिया पंचमी सप्तमि तेरस मान ॥७१॥ रविकुजो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरु भृगुवार एकादशी अष्टमी जानि॥ याकी अग्नि
नि पूर्वमार्ग कहि मृगसु धनिष्ठा चीन॥ ७२॥
याको दिशा शूल॥ दिशाशूल शनिसोमहे नव
मी परिवा जानि॥ ज्येष्ठा भरणी श्रवण पुनि
पूर्व अग्नि परिमान॥ ७३॥ दक्षिण नैऋतको र
यात्रिक॥ दुतिया दशमी सप्तमी शुक्रचंद शनि र
भौम॥ हस्तश्रवण मृगदक्षिणे पुनर्वसू पाहोन
७४॥ याको दिशा शूल॥ तेरस परिवा पंचमी सु
रगुरु वारविचार॥ अश्विनि पंचक सकलए शू
लजानि निर्धार॥ ७५॥ पश्चिम वायवको यात्रिक
पश्चिम वायव कोणको द्वितिया तीजवखान
दशमि एकादशि पंचमी तेरस ये तिथि जान
७६॥ सोमशुक्र गुरुवारए मृगशिर अर्द्ध पुनीत
अनुराधा द्वितिजानिये शुभकारक सुनुभीत
७७॥ याको दिशाशूल॥ षष्ठि चतुर्दशि भौमर
वि अश्विनि पुष्यविचार॥ पश्चिम वायव दिश
नको दिशाशूल उरधार॥ ७८॥ उत्तर दिशानको
यात्रिक॥ तीज दुकादशि पंचमी सप्तमि तेरसि
होइ॥ सुरगुरु कवि शनिवारए अश्विनिजा
नहु लोइ॥ ७९॥ याको दिशा शूल॥ मैत्रपुष्य पू
षाद्वितिपरहल शुभसुनुमूलारविकुज बुध है
सप्तमी हस्त उफाषाति कूल॥ ८०॥ सप्तवारनको
दिशाशूल निवारण॥ नागवेलि भरिवदर्पनहि
लरिवमूली मधुचार॥ दधिमिरचा तिलतेल ये
क्रमहि वारउपचार॥ ८१॥ मध्यान्होत्तर निर्दोष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यतीपात वैधृति वहुरि जनम नखत कुजविष्ट॥
परतर नाराषष्ट ये मध्यान्हो नरशिष्ट॥८२॥यात्रा
समय विचारणीय चारा प्रथम मुहूरत सगुन पु
नि मनउछाह द्विजवाक॥उत्तर उत्तर ये प्रबल
मुनीचारकी हाक॥८३॥भरद्वाज गुरु अंगिरा
मानाथ येचारि॥मुहूर्तादि क्रमसे कहें विबुध्व
हैं निर्धारि॥८४॥चारोवर्णकी प्रस्थान वस्तु॥वा
ह्मणको उपवीतहै आयुध क्षत्रीजान॥वैश्यहि
भूषण कहतहैं शूद्रहि वस्त्र वखान॥८५॥दिन
दृष्टकाल ज्ञान॥शंकु अंगुली तीनकी छाया शंकु
मिलाय॥तासों चौसठ कोहरे दृष्टकाल मिलि र
जाय॥८६॥लब्धघटी पुनि शेषकी सातगुणी
करिदेहु॥पुनिताही सोभागले लब्धपला गनि
लेहु॥८७॥गतघटिका मध्यान्हको भीतर जप
र शेष॥दृष्टकाल सूर्या शलरवि जानहु लग्नवि
शेष॥८८॥रात्रिनक्षत्र उदय ज्ञान॥विशाष ज्ये
ष्ठा रेवती श्लेषा पूषामित्र॥मस्तक ऊपर होहिं जो
अष्टम उदय नक्षत्र॥८९॥मूलमृगशिरा सीस
पर नवम उदय तिहिजान॥शेषमाहिं सप्तमग
नो इहिविधि उदय प्रमाण॥९०॥जब प्रवासतो
अइकौ गयो चाहिये गेह॥रिक्ताकुहू सु अष्ट
मी त्यागि और तिथिलेह॥९१॥व्यतीपात यम
वैधृती विष्टिघात द्विजराज॥त्यागिविप्र सो बुद्धि
ये करप्रवेस शुभसाज॥९२॥अशुभअर्ककुज
ऋक्ष शुभ चित्रारोहिणी होइ॥मैत्रउत्तरा तीनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ अथ दीपचक्र वा चौतिस्थान पर प हुचने के शुभाशुभ नक्षत्र इत्यादि

अ	र	ध	चं	अर्थलाभः	धर्म	अर्थ	काम	मोक्ष	*
अ	र	का	चं	कार्यसिद्धि	अ	भ	क	रो	०
अ	र	मो	चं	राजाभूमिलाभ	पु	पु	आ	मृ	*
अ	र	अ	चं	हानि	श्ले	म	मू	उ	०
ध	र	अ	चं	कुशुल्य	वि	स्वा	चि	ह	*
ध	र	का	चं	विग्रह	अ	मघे	मू	पू	०
ध	र	मो	चं	राजाश्वासिनी	ध	अ	भ	उ	*
ध	र	ध	चं	लाभ	मृ	पू	उ	रे	०
का	र	मो	चं	कुशुल्य					
का	र	अ	चं	कार्यसिद्धि					
का	र	ध	चं	लाभ					
का	र	का	चं	हानि					
मो	र	अ	चं	कार्यनाशः					
मो	र	ध	चं	लाभः					
मो	र	का	चं	अर्थहानि					
मो	र	मो	चं	भय					

मृगशिरा स्वाति जानहु सो य ॥ ८३ ॥ मध्यम आभि जित प्रातमिषा हस्त अश्वनी जान ॥ स्वाति पुष्य दिनि श्रवन में पुनिहै सुरित पयान ॥ ८४ ॥ शेष बचेते सब अशुभ लगनजो थिरशु भ जान ॥ हिरवभाव मध्यम वाहै चरअति अशु भ बखान ॥ ८५ ॥ लगनशुद्ध अरु चंद्रबल देखि विचारे एह ॥ गवन जाहु अरु लगनमें पहुंचि य नाहीं गेह ॥ ८६ ॥ परयल निजगृहते चलें मासनवम दिननेष्ट ॥ पहुंचे योंनहि पहुंचिये पहुंचे नाहीं श्रेष्ट ॥ ८७ ॥ त्रिनवो नए भूषण प हिरवे के नक्षत्र ॥ स्वाति विशाखा रेवती अनुरा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धा रचार॥ हस्त धनिष्ठा अश्वनी चित्रा आदवि
चार॥९८॥ पुनः पुरुषा भूषण॥ आठ कहे जेना
रिके तेसब गनि दूहिहोर॥ तीनि उत्तरा रोहिणी
पुष्य पुनर्वसु और॥९९॥ ✻

नवीन वस्त्र पहिरवेको चक्र

अ	बहुवस्त्रप्राप्ति	म	मृत्यु	मू	सर्वदा आदर
भ	वस्त्रनाश:	पू	राज्यभय	पू	रोगप्राप्ति
कृ	वस्त्रअग्निभय	उ	द्रव्यलाभ	उ	मिष्टान्नप्राप्ति
रो	द्रव्यलाभ	ह	कार्यसिद्धि	अ	नयनरोग
मृ	मूषकभक्ष	चि	अग्निसेमृत्यु	ध	धान्यप्राप्ति
आ	मृत्यु	स्वा	मिष्टान्नप्राप्ति	श	विषभय
पु	द्रव्यलाभ	वि	लोकवल्लभ	पू	जलभय
पु	द्रव्यलाभ	अ	मित्रप्राप्ति	उ	द्रव्यप्राप्ति
श्ले	वस्त्रहानि	ज्ये	वस्त्रहानि	रे	रत्नलाभ

त्रिपुष्कर योग॥ भद्रातिथि अरु क्रूर दिन विष
मराशि उडुअंत॥ योग त्रिपुष्कर लाभवय त्रिगु
ण कहत बुधिवंत॥१००॥ पर्य्यंक बुनादूबे को
शुभाशुभ॥ पित्रपक्ष श्रावण भरणि भादो पौ
ष सु ज्येष्ठ॥ बुधकुज शनि पंचक अशुभ ने
जकरहु जनिवेष्ठ॥१०१॥ दितिमृग अर्यम पु
ष्यकरि धात्रिविश्व हयमित्र॥ मासशेष दिन
शुभमहा मध्यम नरवत्र विचित्र॥१०२॥ अथ
द्वादशराशि नाम॥ मेषवृषभ अरुमिथुन कहिक
र्क सिंह कह चीन॥ कन्यातुल वृश्चिक जुधनु म
कर कुंभ अरुमीन॥१०३॥ प्रथम सीस मुखबा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हृउर उदर औरबादि जान ॥ वमन गुह्य अरु जानु
पुनि जंघ चरण पहिचान ॥१०४॥ जाही दौरक
दौरनह परैकारे अति सुक्ख सौम्यगह कातहू परै
अधिक बढ़ावै सुक्ख ॥१०५॥ राशिवर्ण ॥ रक्तारुणे-
न अरु हरित पुनि पाटल पांडु विचित्र ॥ कृष्ण
पीतपिंगलक बुर वसु स्वच्छ सुनु मित्र ॥१०६॥
मेषादिकको रंगसु द्वादश विधिसों जान ॥ चर
स्थिरद्विस्वभाव ॥ चरद्वस्थिर दुस्वभाव पुनि दूका
दूका कर्म सुमान ॥१०७॥ लग्नस्त्री पुरुष ॥ मेषमि
थुन अरुसिंह धनु तुलाकुंभ नर जान ॥ वृषभ
कर्क कन्या अली मकर मीन तियमान ॥१०८
अथ लग्नवासस्थान ॥ मेषपूर्व दक्षिण जु वृष
मिथुनहि पश्चिम जान ॥ कर्क उत्तरहि समुझि
ये फिरदूहि क्रमसों मान ॥१०९॥ काल्यांल
ग्न प्रमाण ॥ मेषमीनकी त्रयघटी पल दूका
लालिस जान ॥ चारिघटी तेरह पला वृषअरु
कुंभ प्रमाण ॥११०॥ मिथुन मकरकी जानिये
घटीपांच पलचार ॥ कर्कअरु धनकी पांचघ
टि पलावयालिस सार ॥१११॥ सिंहरु वृश्चिक
पांचघटि पैतालिस पलजान ॥ पांचघटी पै
तीसपल कन्यातुली बखान ॥११२॥ लग्नस्व
रूप ॥ मेषहु वृष मृगपति सबै आधो धनको
अंत ॥ अर्द्धमकर पद प्रथम है चारिपाद को
तंत ॥११३॥ कुंभमीन सर्वांग अरु मकर सार्द्ध
जलजंत ॥ वृश्चिक कर्क उभय इन्हे अगिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिंत गुरुगावंत ॥१२४॥तुला मिथुन कन्या सक
ल धनअंग अर्थ गनंत ॥नरस्वरूप उरमें धर
नु जिन्हे धरे सवसंत ॥१२५॥लग्नस्वभाव॥ल
ग्नमेषधन सिंहरु तीनो अग्नि सुभाव॥वृष
कन्या मकरहि वाहन वुधजन छिति कोभा
व॥मिथुन तुला अरु कुंभ दुहि पृथ्वीतत्व या
रविचार॥मीनकर्क वृश्चिक तिनहु नीरनिपु
णनिर्धार॥१२७॥लग्न सवल॥सौम्यग्रहजा
को लग्नेवे ताहीमें होय॥निश्चय करिकेजा
निये सवल लग्नहे सोय॥१२८॥पहिले घरमें
नर लग्न सप्तम अग्नि स्वभाव॥दशमे घरचौ
पद सवल चौथेनीर वताव॥१२९॥रैनलग्नचौ
पद सवल अग्नि सुभाव जु सांझ॥जाकीजल
की प्रकृति है सवल सकारे मांझ॥१३०॥लग्न
उदय॥मकर मेषवृष कर्कधनु उदय पृष्ठते२
तासु॥लग्नपंच सुख संचहित ज्योतिष लि
खत प्रकासु ॥१३१॥मिथुन सिंहकन्या तुलावृ
श्चिक कुंभषट गोन॥रैनदिना आकाश मेंउद
य सीसजे होत॥१३२॥उदय मीनकोलग्नको
उभय ओरते लक्ष॥वंशकार ज्योतिष विषे२
याको कियो प्रत्यक्ष॥१३३॥नवग्रह राशि ज्ञान॥
अश्विनी भरणी कृतिका पायेमेष॥१॥कृति
कानां चत्वारःपादाः रोहिणी मृगशिरा द्वौ वृष २
मृगशिरा अर्द्धं आर्द्रा पुनर्वसु पादत्रयं मिथुन
३॥पुनर्वसु पादमेकं पुष्यश्लेषाश्चे कर्क॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मघान्च पूर्वा फाल्गुनी उत्रापाद्ये सिंह॥५॥उत्रा
नांत्रय :पादाः हस्तश्चित्रार्द्धे कन्या॥६॥चित्रार्द्धे
स्वाती विशाषा पादत्रयं तुला॥७॥विशाषा पाद
मकं अनुराधा ज्येष्ठाने वृश्चिक॥८॥मूलंच पू
र्वाषाढ़ उत्रापाद्ये धनु॥९॥उत्रानांत्रय :पादा श्र
वण धनिष्ठार्द्धे मकर॥१०॥धनिष्ठार्द्धे शतभिषा
पूर्वभाद्रपद पादत्रयं कुम्भ॥११॥पूर्वभाद्रपद १
पादमकं उत्रभाद्रपद रेवत्याने मीन॥१२॥१२५
स्यषराशि ज्ञान॥चूचेचोला अश्विनी १ लीलू
लेलो भरणी २ आदूउरा कृत्तिका ३ ओवावीवू
रोहिणी ४ वेवोकाकी मृगशिरा ५ कूथडंछ २
आर्द्रा ६ कोकोहाही पुनर्वसु ७ हुहेहोडा पुष्य
८ डीडूडेडो श्लेषा ९ मसिमूमे मघा १० मोटा
टीटू पूर्वाफाल्गुनी ११ टेटोपापी उत्राफाल्गुनी
१२ पूषाणाढा हस्त १३ पेपोराती चित्रा १४॥
रूरेरोता स्वाती १५ तीतूतेतो विशाषा १६ नानीनूने
अनुराधा १७ नोयायीयू ज्येष्ठा १८ येयोभाभी
मूल १९ भूधाफाढ़ा पूर्वाषाढ़ २० भेभोजाजि
उत्राषाढ़ २१ जूजेजोष अभिजित् २२ खीखू
खेखो श्रवण २३ गगीगुगे धनिष्ठा २४ गोस
सीसू शतभिष २५ सेसोदादि पूर्वभाद्रपद २६
दूथाझञा उत्रभाद्रपद २७ देदोचाची रेवती॥
२८॥१२५॥पुनः नषराशि कवित्त॥प्रथमहि
आलामेष ऊवावृष जानि लीजेकाछहे मि
थुन डाहाकर्क वषानिये॥माटासिंह पाढाक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न्या रामानुला जानिलेहु नोजाकाहि दक्षिवास
कवि उरआनिये॥पाढा भाथाथन मनमे वि
चारिगन खद्योसी हूहे मकार गोसाकुम्भहीको
जानिये॥दन्चादृथामीन सुनिलीजिये प्रवीण
राशिवारहके नामवाहे ए प्रमाण मानिये॥
१२६॥नामविचार॥दोहा॥रण विवाह सेवाव
निज नामराशि परधान॥गृहविचार अरु
व्याहसुभ यात्राजनम वखान॥१२७॥द्वादश
गृहजन्म कुण्डली नाम॥तनथन सहजसु
हृद सुतन रिपुजाया अरमृत्यु॥धर्मकर्म
अरआयु वय जन्मकुण्डली कृत्यु॥१२८॥
पुनः केन्द्रादि नामः॥तन चौथो सप्तम दसम
चारोकेन्द्र वखान॥पंचम नवमोंहे भवन
इनहि त्रिकोण सुजान॥१२९॥तीजो अष्ट
मग्यारवों अरदुखो धरलेखि॥इनको उप
चै काहतहें गंथन मतको देखि॥१३०॥ता
कोस्पष्टविचार॥पहिले घरसों जानिये तन
कोवर्ण अनूप॥आवर्दाको भेदअरसुख दु
ख सबल सरूप॥१३१॥दूजे घरसों जानिये
धनप्रापति जोहोइ॥और वनिजवो वस्तुको
धनजोरिवो सोइ॥१३२॥तीजो परिजन देश
को भाई वहिनि विचार॥और चपलता सूर
ता चाकर चतुराइ॥१३३॥चौथेघरसों जा
निये भेदमित्र अरमात॥वागरवेत वाहन अ
धन सुभो सुखको वात॥१३४॥पंचम घरसों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

जानिये भेदभाव संतान॥ नौमसंन वाणी वि
बुध बुधिविद्या मनगान॥१३५॥ षष्टम रिपु
भय दृष्टिदुख भ्रातमातको ओर॥ लरिवोवा
रिवो मीतको वरद भैंसको ढोर॥१३६॥ सप्त
म बनिज वियाज अरु लरिवो रिपुसों जा
निफिर विदेश सुख आवुवो दूरा फल
लिय आनि॥१३७॥ अष्टम बरसो जानिये जि
यवो यथाविचार॥ गईवस्तु फिरि पावुवो कारि
वो रिपुसों रार॥१३८॥ संपदु रोगों जीयवो औ
रमृत्यु पहिचान॥ नीकेह्वैवो रोगते गहिरेज
लमें न्हान॥१३९॥ नौमें घर सों जानिये धरम
यज्ञ पुनिदान॥ महलायत चुउठावुवो कारि
वो वृथानिवान॥१४०॥ दशमें घरसों राजवि
थि तातभेद अरुमीत॥ सयाल वात आका-
शकी मेघवर्षिवो चीत॥१४१॥ भवन ग्यार
वों लाभको विधावसन सुमाल॥ हाथी घोड़ा
नाजअति आवहो अरुवाल॥१४२॥ द्वादशवों
घर खरचको वंदिभेद हूं जान॥ औरवामें खे
तीसबे सुखआनंद पहिचान॥१४३॥ नव ग्र
ह नाम॥ सूर्य चंद मंगल गनो बुध गुरु शु
क्र सुनाम॥ शनिरु राहु अरु केतुए नवग्रह
केशुभ नाम॥१४४॥ ग्रह राशि स्वामी॥ मेषरु
वृश्चिक भौमपति वृषतुल शुक्रहि जानु॥ मि
थुनरु कन्या बुधहि गनि धनुमीन गुरुमानु
१४५॥ मकर कुंभस्वामी शनी सूर्य सिंहको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होय॥कर्क राशिपति चंद्रमा कन्या रुह गनो
य॥१५६॥ग्रहवास दिशा॥सूर्य जयी पूरब दि
शा शुक्र शनि को कोण॥दक्षिण दिशि मंग
ल वसत नेत्र रुह जु भौन॥१५७॥पश्चिम
दिशि शनि जानिये वायव शशि को वास॥उ
त्तर दिसिमें बुध वसत गुरु ईशान निवास॥
१५८॥ग्रह सौम्य क्रूर॥सूर्य शनि मंगल स
हित राहु केतु ग्रह क्रूर॥बुद्ध अंगिरा शुक्र गुरु
चंद्र सौम्य सुख पूर॥१५९॥ग्रह स्त्री पुरुष नपुं
सक॥राहु केतु गुरु भौम रवि पाचों पुरुष बखा
न॥नारि शशि शुक्र है शनि बुध हीज प्रमा
ण॥१५०॥ग्रह जाति॥विप्र बृहस्पति शुक्र है २
छत्रि भौम रवि जानु॥चंद्र वैश्य बुध शुद्र कहि
शनि अंत्यज परिमानु॥१५१॥ग्रह रंग॥रक्त
श्याम श्री सूर्य है गौर चंद्रमा नाम॥रक्त गौर मं
गल समुझि बुध दुर्वादल श्याम॥१५२॥गौर
पीत गुरु भृगु सुसचि कृष्ण शनि अरु जान॥
कारो रंग है राहु को धूम्र केतु कह मान॥१५३
ग्रह वेस प्रमाण॥बुध शिशु मंगल तरुण श
शि शुक्र मध्य वयमानि॥रवि शनि सुर गुरु
तीनि ए कहिय वृद्ध सुख खानि॥१५४॥श-
शि की चारो वेस मे अपने गुण कारि देहि॥
जन्म कुण्डली शुभ अशुभ क्रम चारो फल
देहि॥१५५॥ग्रह त्रिगुण॥रवि शशि गुरु स
तीन ग्रह सतोगुणी गुणचित्त॥शुक्र बुद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुधगरा। कहत सूरज दिन प्रमाना॥१५६॥
राहु केतु शनि भूमिसुत तमोगुणी लिहिजा
न॥जासोंमिलै सुभाव नर सोताको बलवाना
१५७॥रविसंजोग ग्रह परतहै सो निर्बल पहि
चान॥सबल रहतहै एकबुध जानत नरबुधि
वान॥१५८॥ग्रह ऊंच नीचस्थान॥अज वृ
षमृग कन्या कारक मीनतुला एजान॥सातो
ग्रहको ऊंचथल नीचजु सप्तम मान॥१५९॥
ग्रह उच्चांश॥दसत्रय अष्टादश तिथि पांच
सताइस बीस॥राहुमिथुन अरु केतु धन त्र
यत्रय अंश गनीश॥१६०॥पुनः॥जोग ग्रहसों
ग्रह दूसरे तीजे बैठे कोय॥कैचौथे दशमे भव
न ग्यारे बारे होय॥१६१॥मित्रहोय जिन घरन
में तौदूनो हितजान॥सहज होइ जोग्रह वि
षे वैरीहोत प्रमाण॥१६२॥ग्रह दृष्टि॥त्रिद
शत्रिभुज चतुरष्ट ग्रह त्रामसों देखत आहि
शनिगुरु मंगल एकाद्वै तीनि चरण जुलखा
हि॥१६३॥सबग्रह सप्तम देखही चहूं चरण
सोंजान॥प्रथम घरनको सोतिहूं पूरण दृष्टि

ग्रह	सू. चं. मं. बु.	शु.	बृ.	मं.
१चरण	३१०	०	३१०	३१०
२चं.	९५	९५	०	९५
३चं.	४८	४८	४८	०
४चं.	७	७	७२ ३	४८
*	०	*	०	*

प्रमाण॥१६५॥यथा
चक्रम्॥ग्रह सबलं
उच्चस्थल ग्रह आप
ने सोम्यग्रह संगजो
य॥मित्रदृष्टि संयु
क्तहै ताको सबल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गनेय॥१६५॥पुनः शशि मंगल शनि सबल निशि
सूर्य्य शुक्र दिनमाँझ॥बुद्ध सबल दिनरैन हूँ और
स्कारे साँझ॥१६६॥पुनः राहु केतु शनि सूर्य्य कु
ज सबल पाख अँधियार शशि भृगु बुध गुरु स
बल शनि सदा पक्ष उँजियार॥१६७॥पुनः चंद्र
शुक्र गुरु सबल हैं पुरुष लग्न मैं जान और स
बै बलवंत हैं नारिन माहिं सुमान॥१६८॥पुनः
गुरु बुध तन घर मैं सबल शशि भृगु चौथे मि
शनिचर सप्तम सूर्य्य कुज दसमैं जान कुचित्त
१६९॥बुधकावहू जौ बरौहै अतिसय सबल ब
लवान॥यामैं अंतर नहिं कछू अपने मन अनु
मान॥१७०॥ग्रहराशि भोग॥मेषत वृषकन्या म
कर सिंहलग्न दिनकूर॥दूनपाँचौ मैं रहतहैं
महादिवस दुकतीस॥१७१॥तुलधन कुम्भि
कुंभअरु मीनमाँझ दिनतीस॥उनतिस दिनव
सि मकरमैं मिथुन मध्यवतीस॥१७२॥संक्रां
ती जोराशिकी सूर्यउदय तिहिहोइ॥शनिवोता
ही राशिलौं लग्न जानिये सोइ॥१७३॥दिवसहोय
अरुपहर दुक सोमरहत दुकरास॥पैंतालिस
दिन हीसवै मंगल को है वास॥१७४॥बीसदि
वस पंद्रह घरी बुधको जानु निवास॥गुरुको
तेरह मासहै शुक्रहै दुकमास॥१७५॥दोयव
र्ष षटमासलौं राजत शनिदुक राश॥काहूत अ
ठारह मासलौं राहुकेतुको वास॥१७६॥ग्रहभु
भाशुभस्थान॥रविमंगल तीजे सुखद अरु अ

CC-0.1n Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छठम दुखदान॥नवमैं दशमैं ग्यारवैं दूनमैं अति सु
खदान॥७७॥शशिगुरु बुधभृगु प्रथमहै तीजे
चौथे नीक॥अरनौमैं दूं सप्तमें दशम एकादश
ठीक॥१७८॥शनितीजे षट ग्यारवैं और बारवैं ले॥
खि॥जीवोफल को देतहैं दूनघर मांहिविशेखि॥
१७९॥प्रश्नली ग्रह भेद॥जन्मलग्न शशिहोइ जोर
विऊंचो बलवान॥तौजिहि घरमैं सुलभयो सोघर
सुन्दर जान॥१८०॥होइ सोम ऊंचोसकल तौघर दू
टोहोइ॥भौमसकल जोहोइतो जयोसु कावहू सोय
१८१॥बुधजुहोइ ऊंचोसकल भवन चित्रवहुजा
न॥जोगुरु ऊंचोघर नयो शुक्रजु नीकोठान॥
१८२॥जोशनि ऊंचोहोइतो भवन पुरानो आहि॥
अब प्रश्नलिका भवनको द्वारभेद सुनुताहि॥
१८३॥गृहद्वार॥तुलाकर्क अरुमेष मैं जन्मजा
सुनिरधार॥कैवृश्चिक कैकुम्भतो पूरव दिशि
गृहद्वार॥१८४॥धनरु मिथुन कन्याथवा मी
नजन्मजो पुत्र॥तोवा गृहको द्वारतुम निश्चै
जानोउत्र॥१८५॥जन्मलग्न वृषमैंसु जिहिता
को पश्चिम द्वार॥मकर सिंहमधि होइतो द
क्षिण दिशा विचार॥१८६॥पर्य्यंका॥जहवाहु
नूरग्रह परे जन्मकुण्डली जान॥परसूता
की खाटकौं दूटीतहां बखान॥१८७॥नारीश
न॥लनधरते गृहगनि जितने शशिलौं जैनानि
हारि॥जन्मसमय सोजानिये परसूता ढिग
नारि॥१८८॥पुनः सप्तम घरतें सोमलौं जित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नेहीं नहहोइ॥तिनहिं तिय पहिचानिये
गृह आंगन कीसोइ॥१८९॥दीप ज्ञान॥जन्म
कुंडली मांहचंद्रशशि कर्कामवार जियजान॥अ
रुसंग बुधकै शनिपरै दीपक जरयो नदान १९०
सोमहोइ थिरलग्न तौ दीपक आरमांहि॥भा
नुहोय जो लग्नथिर दियाहाथ मैं आहि ॥
१९१॥जोरवि वैठोजानिये लग्नमध्य दुखभा
व॥तौ दीपक छिनहाथमैं छिनमथि ताक
वलाव॥१९२॥वातीवा तेल ज्ञानं॥जन्मकाल
को जो लगन वीत्यो जितनी देखि॥उतनीही
वातीजरी दियामध्य चितलेखि॥१९३॥नि
रिखो पीत जिहिलग्नमें जितनो वीत्योजा
न॥उतनो दीपक मध्यही तेलतरे पहिचा
न॥१९४॥वालवर्णज्ञानं॥चंद्रहोय तनभव
न कै देखत तनको सोय॥तौगोरो उजाल व
दन अतिसुन्दर सुत होइ॥१९५॥जौ शनि
देखै तनभवन कैतहं वसै सुजान॥तौकारो
रंग अंगको श्यामध्यान उर आन॥१९६॥ शु
क्रशनिकै बुध शुक्रकै लखैहोहि तनमांहि
कैसप्तम बुज तासुपितु पुनिकोइ सुत होय
नाहि॥१९७॥जारज योग॥राहुकेतु शनिशु
क्रजो रविसंग एकहि ठौर॥तौनिश्चैवा वा
लको पिताजोनु कोइ और॥१९८॥पुनः आ
ठैंचौथ चतुर्दशी शनिमंगल रविवार॥तीनि
उजारा क्रमहिसौं जारज योग विचार॥१९९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

पुनः स्वामी दूजे भवनकौं लखैवेन दूजेगेह॥तौ
तियने सोसुत जन्यो करिदूजे सोनेह॥२०० ॥
जारज भंग॥जौगुरु देखे लग्नको लग्न मध्यवै
होय॥अथवा गुरुको वर्गको उनहि दुजेको सो
य॥१॥षटमूल नक्षत्र॥अश्विनी श्लेषामघा
रेवति ज्येष्ठामूल॥षटनक्षत्र ए मूलके बाल
कौंप्रतिकूल॥२॥अरिष्ट योग॥जौ रविलग्न
ह सप्तमें शनिकै मंगल जान॥तौवासुतकौंम
दुकौं रोगकष्ट बहुमान॥३॥रवि मंगलतैं सप्त
में शशिजौ बैठे आय॥तौवासुतकी मातुकौं
हीजेकष्ट बताय॥४॥जौलग्न घरतैं सप्तमें श
निकै मंगल जान॥तौवा सुतके बापकौं वाहु
क रोगपहिचान॥५॥शनि अरु मंगल युग
लके घरैबीच जौभानु॥मरैतात वा बालको
कैभाता पहिचानु॥६॥शनिमंगल रविसंग
घरैकौरखे तिहिदष॥तौवासुतकी मातुकौं
होयकष्ट अतिनिष्ट॥७॥शनिमंगल तनकौं
लखे कैयुगह्वै तनगेह॥तौसुत अपने ज
नकौ रोगसंगही लेह॥८॥जाके शशिषट
आठवें भवन मध्यही होय॥क्रूरग्रह जो है
खड़ मरैछनका मैं सोय॥९॥सौम्यग्रह कव
हूंलखे शशिकौ इनघर जान॥तिहि बालका
की मातुकौं कष्टवर्ष मैंमान॥१०॥क्रूरसौम्य
जो युगल मिलि शशिकौं देखैआइ॥तौवा
को चौथेवरष दीजे मरण बताय॥११॥पुनः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सौम्यग्रह कोऊ भवन छठे आठमें होइ भावक सोमर
कै शनिलखै जियेमास इक सोइ॥२२॥ लग्नकौ
स्वामी सप्तमें परै संग शशिजानु॥ तौ वासुनकौ जी
यो वर्षएक परिमानु॥२३॥ होइ सोम लग्नग्रह इ
क सप्तम चरमेकोनु॥ कै मंगल कै राहु शनि जियै
वर्ष एक चौनु॥२४॥ भयो ग्रहन जिन दिनन मैं उ
नदिनको शशिजान॥ तिहिसंग क्रूरग्रह कोऊ परै
भवन लग्नआन॥२५॥ अरुकै वाके षष्ठमें बैठो मंग
लहोइ॥ सुतजननी दोनोमरै वर्षएकमें सोइ॥२६॥
पुनः होइ ग्रहन जिनदिनन मैं उनदिनको जो
भानु॥ परै सोम के संगही मध्यभवन लग्नआनु
२७॥ अरुमंगल अष्टम भवन बैठो होइ विचार
वहसुत थोरे दिननमें मरै जानु निरधार॥२८॥
पुनः रविमंगल शशि पुत्र जो चारौ लग्न घर जान
कै अष्टम कै वार वै कैनौमें पहिचान॥२९॥ कहै भौ
ति जाकेजुग्रह इनघर बैठे दीख॥ वा बालक को
मरण को जनम कालही लेख॥३०॥ सुजोग॥
जोउजि थोरे पक्षमें जन्मरैन को होइ॥ तिसशशि
के औगुण कछू ताहिन व्यापै कोइ॥ गुरुबुधशु
क्रजु कैंद्रमें अथवा होइ त्रिकोण॥ सबदोषनको
नाशई जातकफल शुभभौन॥३१॥ तामैंजोरज
नीशकौ रविदेखत जोहोइ॥ द्रव्यऔरधनवंत अ
ति कहै ज्योतिषी लोइ॥३२॥ बुधभृगु सुरगुरु कैं
दृगत एकौनिज ग्रह पाइ॥ अथवा जोहै उच्चग्रह
विघ्न ताहि दिखाइ॥३४॥ रविज सुलाघट मकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को तिनतिसरे दिनुग्रह गति अरिष्ट होइ रहै
अरोगी देह॥२५॥अनफा सुनफा दुरुधुरा योग॥अ
नफा विधुते बारहैं सुनुफा दूजे होइ॥दोऊ ग्रह में
दुरुधुरा रविविनु ग्रहजोकोइ॥२६॥सुखीधनी अन
फा विषे सुनफा बुद्धिनिधान॥शीलवंत ज्ञानीम
हा योगदुरुधुरा जान॥२७॥केमद्रुम योग॥शशिते
दूजे बारहैं होइनहीं ग्रहकोइ॥केमद्रुम ताकेवि
षे महादरिद्री होइ॥२८॥वेसीवोसी उभय चरीयो
ग॥वेसीरविते बारहैं वोसीदूजे जान॥उभय च री
है इहुनतें कोशशि विनग्रह आन॥२९॥बलवि
द्या धनवंत अति वेसीको फलजान॥दआधर्मअ
रु ज्ञानयुत्त वोसिहि कोरे बखान॥३०॥उभयच
री दिनुशीतकर परेजोग जिहिकोर॥सदावर्षे
हयद्वारपैं फिरैलोग बहुघेर॥३१॥कंटकद्रुमयो
ग॥रविते दूजे बारहैं कोइग्रह जुनहोइ॥कंटक
द्रुमतासों कहत मूर्खदरिद्री सोइ॥३२॥गजकेंध
योग॥स्वामी दशमें धामको नवमाधिप केसाथ
कोंद्रकोण दूजेपरे होइवाजि गजनाथ॥३३॥
छत्रयोग॥लनधन सप्तम तीसरे ग्यारह बारह
जान॥सगरे ग्रहइन षटचरन छत्रयोग तिहि
मान॥३४॥छत्रयोग जाकेपरे जन्मकुंडली आइ
तोवाकों सबकुटुंबनैं दीजैअधिक बनाइ॥३५॥
राजयोग॥स्वमीतनको सबलहै कोंद्रस्थान जुहो
इ॥कैपंचम एकादशो जियेवर्ष शतसोइ॥३६॥
औरहोइ धनवान अति सुंदर वदन सुजान॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुष्टदेह सोहोइ अति सबकाहू परधान॥३७॥ब
हैभांति कीलग्नमें गमन वारे परदेश॥तावोवा
रज जानिये पूजैगौरि महेश॥३८॥जोवावहू दूहि
लग्नमें वैठै भूपतिराज॥तोजानो वहुवर्षलौं वारे
राज शुभसाज॥३९॥पुनः शुक्रजु दूजे भवनमें
अरुनवमें गुरुहोइ॥रहैराहु षष्ठम भवन निश्च
य राजासोइ॥४०॥पुनः आयुधर्म मैं गुरुपरैरा
जाको परधान॥वहुसेना निनसंग रहै वोजानो
धनवान॥४१॥पुनसौम्य ग्रह पंचम नवम राहु
अरु षटमान॥कैद्वादश मैंजानितिहि भूपति
को परधान॥४१॥ग्रहउच्च फलं॥एकउच्च सुख
होइअति द्वैसौंवहु परिवार॥तीनिउच्चसौं भूमिप
ति महा महीपति चार॥४३॥पुनः पांचषष्ठ
जो उच्चहै पिरैचक्र जगमाहिं॥विनाराम अवला

यथा श्रीरामजन्मलग्न॥

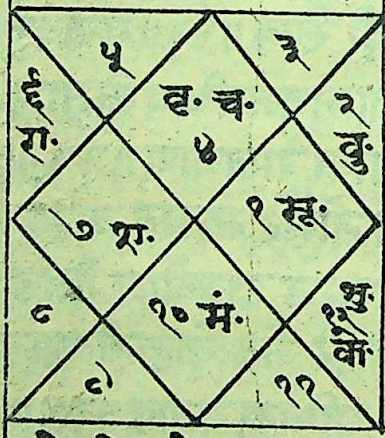

यथा श्रीकृष्णजन्मलग्न

रको होइयोग यहनाहिं॥४४॥पुनः तीनिउच्च हि
मकर सहित एकलग्न म हंकोइ॥द्वैनिजगृह
को जानिये विनाकृष्ण नहिसोइ॥४५॥स्त्रीयो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग॥जितने सप्तम भवन मैं पापग्रह पहिचान॥ति
तनीही तिय ब्याहिवो ल्यावे सोनर जान॥४६पुन
मंगल तन घरमैं परे वो चौथे घरमांहि॥वो वारै
षट आठवें जियेत्रिया तिहिनाहिं॥४७॥परैकव
हु इक धाम मैं त्रयग्रह संगसुभानु॥अंश एक
मैं होइजो होइ बावरो जानु॥४८॥पुनःस्वामी पं
चम भवनको परैं आइ संगभानु॥जुगल अंश
होइ एकसे तऊ बावरो मानु॥४९॥दरिद्रयोग त
नते दूजे भवनको पति जो द्वादश होइ॥वो द्वादश
को दूसरे दारिद्री नरसोइ॥५०॥चेरायोग॥तीनिहे
य ग्रह नीचको काहो भेद पहिचान॥निरखे वो व
ह बालको चेरादास बखान॥५१॥एकग्रह पति
योग॥रविते मंगल दूसरे के द्वादशमैं होइ॥तो जा
नो धनवान नर और सूरमा सोइ॥५२॥जो रविते
बुध दूसरे के द्वादश में देखि॥तो वह नरहरि चर
णको राखे ध्यान विशेषि॥५३॥सूरजते गुरु दू
सरे वो द्वादश में वास॥तो जानो विद्या बहुत रहै
महीपति पास॥५४॥शुक्रजु रविते दूसरे के द्वाद
शमें जान॥मगन रहै निशिदिन सदा होइ बहुत
धनवान॥५५॥जो रविते शनि दूसरे के द्वादश में
चिन्ह॥सेवक चेरा भ्रात अति और होइ बहुमि
न्ह॥५६॥द्वै ग्रह पति योग॥जो रवि शशि द्वै ग्र
हपरे जाहिं एकही धाम॥तो वह नर पहिचानि
ये करे कजाकी काम॥५७॥रवि मंगल इक
धाम जो सम निर्दई जान॥*॥रवि बुध वै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दि एकघर होइ महा धनवान॥५८॥ रविगुरु जाको
एकघर महाधनी नरसोइ॥ त्रियाकरै अतिहेतु ति
हि औरमित्र बहु जोइ॥५९॥ सूर्यभृगुइकघर प
रै चपल सूरमा होइ॥ परै एक घर भानु शशि घर
रवै मानिक सोइ॥६०॥ शशिमंगल एकघर परै
होइ चुगुल नरलेरिव॥ शशिबुध बैठे एकघर
नामेबुद्धि विशेषि॥६१॥ एकठौर शशिगुरु परै
अधिक कुटुंब तिहिहोइ॥ चंद्र शुक्र जो एकघर
है नृपमंत्री सोइ॥६२॥ चंद्र शनीचर एकघर वृद्ध
तिया रतिजान। बैठे परकी गोद में हयगय पाल
क मान॥६३॥ मंगलबुध एकगेह तो विधवा को
पतिजान॥ मंगलगुरु इकधाम तो बोलै वचन प्र
मान॥६४॥ मंगल भृगु जो एकघर प्रमदा में नि
तचित॥ मंगलशनि इकधाम तो होइ न कबहूं वि
त॥६५॥ बुधगुरु जो एकघर परै चंचल सत्यस
भाव॥ नारी होइ पतिव्रता अपने मनको राव॥*
*॥६६॥ बुद्ध भृगु जो एकघर परै वानी मिष्टवखा
न॥ होइ बुद्ध शनि एकघर करै सदा कालवान॥
६७॥ गुरु भृगु है जिहि एकघर होइ सु विद्यावान॥
गुरु शनि बैठे एकठां सैनापति बलवान॥६८॥
भृगु शनि जो इकधाम को द्यूतकर्म चितधारि॥
मल्लयुद्ध पतिजानिये करै बहुत हि ननारि॥*
६९॥ जेमैं ग्रह इकठौर ही परै जानिये मित्त॥ य
हे भांति फल सबन को धरो आपने चित्त॥७०॥
अथ सूर्य द्वादश भाव फलम्॥ परै भानु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

तन भवन में होय बालपन दुख ॥ और स्त्री
पुत्रतें कबहुं न पावै सुख ॥७१॥ परे भानु दूजे
भवन पावै सुतसौं चैन ॥ अस्तन लांवो दूव-
रो बहुधन राते नैन ॥७२॥ बसै सदा परदेश
में विकट जु पंथ कठोर ॥ रैनदिना चित मां
माही रहै सोच अरु भोर ॥७३॥ तीजे घर जो
रवि परै जिये न कोऊ भ्रात ॥ त्रिया पुत्रतें सु-
ख रहै बुद्धिवान सुभगात ॥७४॥ चपल गवन
धनमान अति चहै पराई नारि ॥ बहुत परा
क्रम जानिये विद्यावान विचारि ॥७५॥ चौथे
घर जो रवि परै ज्ञानमान सौं ज्ञान ॥ त्रिया स-
हित आनंद रहै बहुविद्या धनवान ॥७६॥*
और सुरमा होइ बहु निम्बे जीतै रार ॥ कोरे प्री
ति भूपतिसंवे व्यापय अन्तर बार ॥७७॥ परे
भानु घर पांचमें सुतसौं रहै वियोग ॥ कर्म धर्म
थोरो करै रहै देह में रोग ॥७८॥ और सभा चा
तुर अधिक तीक्ष्ण बुधि बलवान ॥ जानै वि
द्या तंत्र की और यंत्र पहिचान ॥८१॥ परे भानु
घर षष्ठमें दुर्बल तन तिहि जान ॥ बुद्धिवान सु
हर वदन धर्मवान यशवान ॥८०॥ कोरे हेत व
हु कुटंब सौं परम भक्ति हरि होइ ॥ त्रिया आ-
पनी सौंरमें और मात गनि सोइ ॥८१॥ सप्तम
घर जो रवि परै कोरे सु परतिय भोग ॥ महा अ
हंकारी कापिरा घरतिय सहै वियोग ॥८२॥
अष्टम घर जो रवि परै लांवो तन बहुरोग ॥ और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दि एकघर होइ महा धनवान॥५८॥ रविगुरु जाके एकघर महाधनी नरसोइ॥ त्रियाकरै अतिहेतु तिहि औरमित्र बहु जोइ॥५९॥ सूर्यभृगु इकघर पर दैचपल सूरमा होइ॥ परै एक घर भानु शशि घर खै मानिक सोइ॥६०॥ शशिमंगल एकघर परै होइ चुगुल नरलेरिव॥ शशिबुध बैठे एकघर नामेबुद्धि विशेषि॥६१॥ एकठौर शशिगुरु परै अधिक कुटुंब तिहिहोइ॥ चंद्र शुक्र जो एकघर है नृपमंत्री सोइ॥६२॥ चंद्र शनीचर एकघर वृद्ध तिया रतिजान। बैठे परकी गोद में हयगय पालक मान॥६३॥ मंगलबुध एकगेह तो विधवा को पतिजान॥ मंगलगुरु इकधाम तो बोलै वचन प्रमाण॥६४॥ मंगल भृगु जो एकघर प्रमदा में नितचित॥ मंगलशनि इकधाम तो होइ न कबहूं वित्त॥६५॥ बुधगुरु जो एकघर परै चंचल सत्यसुभाव॥ नारी होइ पतिव्रता अपने मनको राव॥* *॥६६॥ बुद्ध भृगु जो एकघर परै वानी मिष्ठ वखान॥ होइ बुद्ध शनि एकघर करै सदा कालवान॥६७॥ गुरु भृगु है जिहि एकघर होइ सु विद्यावान॥ गुरु शनि बैठे एकठां सैनापति बलवान॥६८॥ भृगु शनि जो इकधाम को द्यूतकर्म चितधारि॥ मल्लयुद्ध पतिजानिये करै बहुत हि ननारि॥* ६९॥ जैसैं ग्रह इकठौर ही परै जानिये मित्त॥ यहै भांति फल सबन को धरो आपने चित्त॥७०॥ अथ सूर्य द्वादश भाव फलम्॥ परै भानु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

तन भवन मैं होय बालपन दुखव॥ औरौ दूसी
पुत्रतैं कबहुं न पावै सुकव॥७१॥ परै भानु दूजे
भवन पावै सुतसौं चैन॥ अरुतन लांवो दूव-
रो बहुधन राखैनैन॥७२॥ बसैसदा परदेश
मैं विकट जु पंथ कठोर॥ रैनदिना चिंत मां
माही रहै सोच अरु भोर॥७३॥ तीजेघर जौ
रविपरै जिये नकोऊ भ्रात॥ त्रिया पुत्रतैं सु-
ख रहै बुद्धिवान सुभगात॥७४॥ चपल गवन
धनमान अति चहै पराई नारि॥ बहुत परा
क्रम जानिये विद्यावान बिचारि॥७५॥ चौथे
घर जौ रविपरै ज्ञानमान सौं ज्ञान॥ त्रिया स-
हित आनंद रहै बहुविद्या धनवान॥७६॥*
और सूरमा होइ बहु निश्चै जीतै रार॥ कौरेप्री
ति भूपतिसंवे व्यापय अन्तर वार॥७७॥ परै
भानुघर पांचमैं सुतसौं रहैवियोग॥ कर्मधर्म
थोरोकरै रहैदेह मैं रोग॥७८॥ औरसभा चा
तुर अधिक तीक्ष्ण बुधि बलवान॥ जानैवि
द्या तंत्रकी औरयंत्र पहिचान॥८९॥ परैभानु
घर षष्ठमैं दुर्बलतन तिहिजान॥ बुद्धिवान सुं
दर वदन धर्मवान यशवान॥८०॥ कौरहेत व
हु कुटंब सौं परम भक्ति हरिहोइ॥ त्रिया आ-
पनी सौंरमैं औरमात गनिसोइ॥८१॥ सप्तम
घर जौ रविपरै कौरेसु परतिय भोग॥ महा अ
हंकारी कापिरा घरतिय सहै वियोग॥८२॥
अष्टम घरजौ रविपरै लांवोतन बहुरोग॥ कौरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाकरी नीचकी रहैसदाको सोग॥८४॥नवमें घर
जो भानुहै धर्मवान नरजान॥वहुधन अतिसुं
दर जती वडी आयुवल वान॥८५॥वालापनमें
होइ वहु रोगवाष अरदुखख॥तरुण अव-
स्था होइ जव पावै तनतें सुखख॥८६॥दशमें
घरजो रविपरै वहुसुख लघु आहार॥गरव
वालपन वृद्धमें होइ विरत्ता विचार॥८७॥भव
नग्यारवे रविपरै रहै महीपति पास॥बुद्धिमा
न अति दूवरो वहुधन सेवक दास॥८८॥कारै
प्रीति नर कुटुंव सौं तियसौं राखैहेत॥एकाचि
त कवहूं नहीं जोतिष विदकहि देत॥८९॥द्व
दशम घरमें रविपरै वहुत दया वुधिवान॥ने
त्रसेग दुखदेहमें पावैकष्ट निदान॥९०॥चंद्र
भाव फल॥तनघरमें जो चंद्रमा सुंदर शशिस
म जान॥तियसौं राखै हेतवहु महाधनी नर
मान॥९१॥क्रूरग्रह संगचंद्र जो होइ भवनत
न जाहि॥मूरख कार रखालीसदा दारिद्री गनि
ताहि॥९२॥जौदूजे घर शशिपरै अति सुंदर
मुखजान॥वुद्धिवान वहुधन चतुर औरहो
इ यसवान॥९३॥होइसुधा कारनीचको कै
शनि घरको होइ॥कै तिहि देखै क्रूरग्रह तौ
आधो फलसोइ॥९४॥जो तीजे घर शशिपरै
तियराखै वहुहेत॥सवै वस्तुसौं सुखरहै विद्या
मित्रसमेत॥९५॥अवल होइ शशि जानिये
जियैन कोऊं भ्रात॥और मूढ अति होइसो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

कहैन जानैवान॥९६॥चौथमवन शशि त्रिया
हित और बहुत सुखमान॥हयहस्ती संयुत्तर
है अवलसु अर्द्ध बखान॥२७॥पंचम घर श
शि मूढ अति तियसुतको सुखहोइ॥प्रथम
हि कन्या होइ तिहि अवल दरिद्री सोइ॥
९८॥शशि षष्ठम गृहमें परे बोलै वचन दु
रुक्त॥दयाहीन शत्रु अधिक रोगी आलस
युक्त॥९९॥सप्तम घरशशि जानिये बहु
धन सुंदर देह॥पावै सुंदरि नारिको राखै
तासों नेह॥१००॥अवल होइशशि सप्तमें
सदारोग तनजान॥अरुनाकी रोगीत्रिया
ज्योतिष कारत बखान॥१॥परैसोम तन आ
ठवें रोगी चोरबखान॥चित्त मांझ उद्वेग र
निल दारिद्री अति जान॥२॥नौमें घरजोशशि
परै होयमहा धनवान॥राखैतियसों हे
तअति धर्मवान बहुजान॥३॥परै नवम
घर अवल शशि होइमूढ अज्ञान॥रीतिहा
थ सदारहै महादरिद्र बखान॥४॥होइ सो
म दशमें भवन बुद्धिवंत जियजान॥रहैति
या सुखसों सदा बहुअनंद धनवान॥५॥
अवल होइनिशिको पती जोमधि दशमें
गेह॥रहैरैन दिन शोकमें और दूबरी देह
ईपरैसोम घरग्यारवे धनसेवकबहुजान॥अवल दव
राद्दह अति मूर्ख दरिद्री मान॥७॥द्वादशमें घर शशि मूर्ख
धर्मी और निरोग॥अवल दरिद्री शोक अरु स्वकअति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंरोग॥८॥ भौमफलं॥ तनघरमें मंगल परैलहै
बालपन दुकख॥ तनकारो अरु दूबरो होइ न त
नको सुकख॥९॥ चुगुल चपल अरु सम अति
कपटकी देह सुभाय॥ नारी नासुन जीवई सुनो
मित्र चितलाय॥१०॥ क्रियाकर्म निजनारिको
करै आपने हाथ॥ तैसेहू तियनिज पुरुष कौं
बिछुरै है दुकसाथ॥११॥ धनेश्वर मंगल परैहै
दरिद्र अरु दुकख॥ कर्जदार निशिदिन रहै कब
हुंन पावै सुकख॥१२॥ औरहै परदेशमें दुबरो
तनपहि चान॥ खेलीवो काहूज करै सदागमन
चितदान॥१३॥ तीजोभवन मंगल परै करै सदा
सुखभोग होइ कबहुं जो नीचको रहैरैन दिन
सोग॥१४॥ चौथोघर कुज भौमवहु वाहनको
अतिदुकख॥ रहैसदा परदेश में लहैन कबहू
सुकख॥१५॥ परैभौम घर पांचवें जियैन सुत
तिहि कोइ॥ सबल होइ जो भौमलहै जियैस
कासुत सोइ॥१६॥ मंगल षष्ठम भवन जो सु
खधन सुत अस्थान॥ परैभौम कबहूं अबल
होइ सुद मीजान॥१७॥ सप्तम घर मंगल प
रै तियचिंता नितचित्त॥ अबल होइ जो नारि
सों रहैवियोगी नित्त॥१८॥ अष्टम घर मंगल
परै होइ चित्त लघुदान॥ सुतचिंता निशिदि
न रहै मरैश्रेष्ठ अस्थान॥१९॥ नौमेंघर मंग
ल परै जानहु हिंसक योग॥ तनदुबरो बुधि
वंत अति बहुधन सुत अरुभोग॥२०॥ दशा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

में चर मंगल परे करैतहा उपकारी दूजवान जस
हयुत कुलमें श्रेष्ठ विचार॥२१॥परे भौम चगय
रवैं करम बान जियजान॥करैतात अरु मातु र
की सेवा अति पहिचान॥२२॥द्वादश में चरभौ
मजो करे मित्रसो द्वेष॥तेजहीन अरु औषधयु
खर्चे द्रव्यविशेष॥२३॥बुधफल॥परे बुधभ
न भवनमें मिष्ट वचन जियजान॥करैहु ब
हु कुटुम्बसों धरमवान बुधिवान॥२४॥दूजे
चरगुरु कोप्रिया काव्यकुशल अतिजान॥र
कांतियुक्त धनवान अति विमल शील गुण
वान॥२५॥बुधबैठे तीजे भवन करैसुख स
बुदान॥होत बहुत सेवक तिया धनयौवन प
हिचान॥२६॥चौथे चरजो बुधपरे न्यायगानमें
प्रीत॥धन सुधान्य विद्या बहुत अटन करैब
हुमीत॥२७॥जो कबहूं संगरहु के रविसुत के
बुजहोइ॥तोवानर के जानिये जिये भागनहि
कोइ॥२८॥बुधबैठे पंचम भवन चातुर कविप
हिचान॥बहुत पुत्र सुखमें रहै सदारैन दिन
मान॥२९॥परेजु बुध षष्ठम भवन तिहिवो
रिपु बहुजान॥आलस युतव्याकुल सदा ज्यो
तिष करैबखान॥३०॥सप्तम चरमें बुधपरे पा
वैं सुन्दरि नारि॥शीलवंत मतवाला अरु सदा
विभव तिहिधाम॥३१॥अष्टम चरबुध आयु
बहु औरराज सनमान॥पावैसोनर मृत्युको का
शी गंग सुथान॥३२॥नौमें चरबुध पुत्रबहु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परउपकारी होइ॥ सदाहर्ष मोही रहै महा धनीन
रसोइ॥ २३॥ दशमें घरमें बुधपरै बहुत पुरुष अ
रहान॥ सेवामें अति चित्त रहै तात मात की जा
न॥ २४॥ बुधजु परै एकादशमें तियसों अति हि
तसाज॥ सदा रहै आनंद युत बहुविद्या अरु ला
भ॥ २५॥ बुधजु परै द्वादशे चाहै परधन नारि॥
मलिन धूर्त निर्दय महा पंडित चाहै विचारि॥
२६॥ गुरु फल॥ लग्नगृहमें जो गुरु परै बहुविद्या
धनवान॥ कोरहित भूपति सबै अति उदार बुद्धि
मान॥ २७॥ गुरु दूजे गृहमें परै मान रहै दिन
न॥ पावै बहुधन अरु वहै अहंकार को बैन॥ २
तीजे घरमें गुरु परै अति बलशालि तिहि जाना प्री
तिन राखै कुटुंबसों महा कापिरा धनवान॥
२९॥ चौथे घर जो गुरु परै होइ त्रिया सुलक्षण
सदा रहै आनन्दमें देखैका बहुन दुक्ख॥ ४०॥ पं
चम घरमें गुरु परै त्रिया पुत्र बहु होइ॥ मोटा
तन बुधिवान अति सदा जानिये सोइ॥ ४१॥
षष्ठम घर जो गुरु परै ताके रिपु बहु जान॥
अबल होइ तो देहमें रोग कष्ट पहिचान॥
४२॥ सप्तम घर जो गुरु परै अति आनन्द र
निधान॥ मिष्टवचन चाहै त्रिया बुद्धि वान र
धन वान॥ ४३॥ अष्टम घर जो गुरु परै र
चाकार हीन मलीन॥ आलस युत सु रहै स
दा निर्विवेक तनक्षीन॥ ४४॥ नौमें घर जो गुरु
परै होइ महा धनवान॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावे हित वहु कुटुम्बरो करैपुराण अतिदान ४५
औरलहै पदवी वडी वर्मवान धनवान॥सदा
रहै आनन्दमें होइ महा वलवान॥४६॥दसमे
घरजो गुरुपरै राजचिन्ह युतजान॥उत्तम वाह
न कुटुम्ब वहु दयाधर्म यशवान॥४७॥परै
गुरु घरग्यारवें सामर्थी अतिसोइ॥वस्त्ररत्न वा
हन अधिक राजकृपा सोहोइ॥४८॥परैगुरु द्व
र वारमें रहैरोग दिनरैन॥दानपुण्यथोरो करै २
भूठो बोलैवैन॥४९॥शुक्र फल॥परैशुक्र जा
मूर्तिमें करैपुराय वहुदान॥हंसतो मुख चित
हेत वहु विद्यायशु धनवान॥५०॥शुक्रजु दू
जे घरपरै तियसों रावैहेत॥अनचिन्त्यो पावै
दरव बुद्धिवान वहुचेत॥५१॥तीजेघरजो भृ
गुपरै होइ कृसित धनहीन॥अप्रिय काल भा
षैसदा कामीमहा मलीन॥५२॥शुक्रजु चौथे
घरपरै होइत्रिया वहपुत्र॥रहैभक्ति गुरुदेव
में औरहोइ वहुमित्र॥५३॥परैशुक्र पंचम
भवन काव्यकला रुचिहोइ॥चतुर धनी अ
तिजानिये पहिले कन्या होइ॥५४॥परैछ
ठैघर शुक्रजो करैनीच की वात॥होहिं श
त्रु वाको अधिक जगत माँहिं सुनुभ्रात॥५५
सप्तम घरजो भृगुपरै होइत्रिया सुतसुख
वहुधनआनन्दमें रहै देखै कवहु नदुख॥
५६॥अष्टम घरजो शुक्रको अति प्रसन्न सु
खजान॥तियसुतकी चिन्तासदा अतिनिरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का बलवान॥५७॥नौमेंघर जिहि पुत्रहै भा
ग्यवान पहिचान॥निशिदिन रहै अनन्दमें ध
र्मवान चितजान॥५८॥दशमें घरजो पुत्रा
नो रहैसुखी दिनरैन॥तियसुतसों अतिप्रीति
नित महाधनी मनचैन॥५९॥एकादशवैघर
परे नृत्यगान रुचिहोइ॥द्रव्यागमन सदारहै
धर्मवान नरसोइ॥६०॥द्वादशमें घरभृगु परे
रहै सुचित्त मलीन॥क्रोधीअतिहि विरोध
युत कामीसत्य विहीन॥६१॥शनि पाल॥श
नितनमें घर जोपरे लग्नतुलाकोमीन॥होयनृ
पति जगमें विदित वोकुल दीप प्रवीण॥६२
मकार कुम्भमें धनबहुत अन्यराशिमेंदुकख
तनमें रोग सदारहै कबहुन देखैसुकख॥६३॥
परेशनीचर दूसरे देशांतरमें जाय॥तोपावैअ
ति दुकखसों नातरु दुखी सुभाय॥६४॥परे श
नीचर तीसरे होयनाद्य नृपमान॥पालेबहु
जन कोंसदा विक्रम युत बलवान॥६५॥परे
भवन चौथेशनी सदादरिद्री जान॥अरुकुशी
ल दुर्बल महा पित्तवायु भयमान॥६६॥परे
शनीचर पांचमें महामूढ मतिजान॥वित्तही
नरोगी सदा पुत्रसौख्य को हानि॥६७॥परे
शनिश्चर षष्टमें कोई शत्रुनहोइ॥पुष्टअं
ग बलवान नित रहैजु मुखमें सोय॥६८॥
परेशनीचर सप्तमें तियको दुखबहुजान॥
हीनवृत्ति बलहीन पुनि मकार कुम्भसुखमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६९॥परैशनीचर अष्टमैं कष्टतन आलस युक्त
होइवायु इत्यादि रुज असंतोष विमुक्त॥७०
परैशनीचर नवम मैं धर्मकर्म मतिहीन॥का
मशक्ति नहि तनविषै रहैजु सदामलीन॥
७१॥दशमैं परशनि उच्चको बुद्धिवान धनवा
न॥औरनीच को होइ जो दारिद्री तिहिजान॥
७२॥परैशनीचर ग्यारवैं लहैसभामैं मान॥हो
इशनीचर नीचकौं तौ आधो फलजान॥७३
परैशनीचर बारवैं ध्यानराखै चित्त॥नीचसं
ग मैं नितरहैं कबहु होइ नहिवित्त॥७४॥राहु
केतु फल॥तनघरमैं कबहूंपरै राहुकेतु सुनु
मित्त॥रहैरोग तनमैंसदा असदारिद्र नितचि
त्त॥७५॥राहुकेतु दूजेभवन होइन धनतिहि
जान॥विपति सांझनिशि दिनरहैं कबहुनसु
ख पहिचान॥७६॥राहुकेतु तीजेपरैं जियैनको
ऊंभाग॥नाशैसकल अरिष्टकौं पावैबहु सुखभा
ग॥७७॥राहुकेतु चौथेपरै होइद्रव्यको दुक्ख
औरभ्रात सुतमातको कबहुन देखैसुक्ख
७८॥राहुकेतुपञ्चमभवनजियैनसुत पहिचान॥
परैराहुजो उच्चको होइ महाधनवान॥७९॥
राहुकेतु षष्टम परैजियैन रिपुतिहि कोइ
पावै पदवी उच्चकी द्रव्यमान अतिहोइ॥८०
राहुकेतु सप्तमपरै रहैसदा रुजमाहि॥पुराय
दानथोरो करै जियैत्रिया तिहिनाहि॥८१॥
राहुकेतु अष्टम परैरोग बान पहिचान॥चप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लहोय अति सूरमा बुद्धिवान धनवान॥८२॥
राहुकेतु नवमें परै होइ चुगुल अति जान॥क
रैनहीं सबजन्ममें कबहुं पुराय असदान॥८३
राहुकेतु दशमें परै रहैनिधन दिनरैन॥धरैचि
त परद्रव्यमें कबहुन पावैचैन॥८४॥राहुकेतु
एकादशे गजघोडा बहुमान॥होइराहु कब
हूं अबल तौ ऐसोनहिं जान॥८५॥राहुकेतु द्व
दशवारहें परैकरै लघुदान॥खरचै धनइकाठौ
रहीं उपकारी पहिचानि॥८६॥परैराहु तीजे
छठें औरग्यारवें जान॥होइमकरकन्या कार
क वृषभमेष शुभमान॥८७॥इति विंशोत्त
रीदशा प्रमाण ज्ञानं॥आदि कृत्तिका तैंगनो
जन्म नखत है सोइ॥तपकिये नवको वचै
दशा सुग्रह कीहोइ॥८८॥सूर्यचंद्र मंगल
कहत राहुबृहस्पति जान॥शनिबुधकेतुशु
क्रनव विंशोत्तरी प्रमाण॥८९॥षट दश
सप्तर अष्टदश षोडश जानु सुजान॥उन
इश सत्रह सात पुनि बीसवर्ष परमान॥९
योगिनी दशानाम फल ज्ञानं॥निजनक्षत्र
गनि आदितें तामें तीनि मिलाइ॥आठ भा
गसों ताहिहरु वचैसु दशा गनाइ॥९१॥प्र
थम मंगला पिंगला धान्या भ्रामरि होइ
भद्रिकाजु उल्का बहुरि सिद्ध संकटा जो
इ॥९२॥इकाइ तीनसु चारि पर षष्ठ सप्त व
सुजान॥मंगलादि आठहु दशा छत्तिश वर्ष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

प्रमाण॥९३॥चंद्रसूर्य गुरुभौम बुध रविज शुक्र
शनिराहु॥क्रमसौं इनकी वेदशा स्वामिसदृश फ
लचाहु॥९४॥मंगला॥हयगज रत्नसु वस्त्रबहु
मिलैसुदिन संतसंग॥दशामंगला शुभकारी समु
भाहु वृद्धि उनंग॥९५॥पिंगला॥३॥अतिउदास
मनरोगलन वृत्तिहीन कछुहोइ॥दशापिंगला
हितनसौं होइवियोगी सोइ॥९६॥धान्या॥३पू
रेसकाल अभीष्ट मनस्वजन नृपति अनुराग
दशासु धान्या शुभमहा आवत भागसुभाग
९७॥भ्रामरी ४॥ज्ञानहानि परदेश भ्रम धरम
हानि मनपीर॥दशाभ्रामरी भ्रममहा ज्ञानहु
सकाल सुथीर॥९८॥भद्रिका ५॥विविधि मनो
रथ नारिशुभ बहुधन जमावहु मान॥दशाभ
द्रिका मध्यये मिलैवस्तु शुभजान॥९९॥उ
ल्का ६॥शस्त्रघात नृपदंड अरु चौरघातशिखि
घात॥उल्कामें येजानिये सकाल कठिनउत्पात
४००॥सिद्धा ७॥भूपमान धनलाभ सुख जोषि
त प्रेमप्रसिद्ध॥शास्त्रज्ञान रतिराम पद सिद्धासर्व
त्र प्रसिद्ध संवादा ८॥मिथ्यादोषविरोध गृहमृत्यु
बंधुधन हानि॥कार्यनाश संकट महा दशासं
कटाजान॥३॥ यावी अंतर दशाक्रम॥दशा म
ध्यअंतर दशा जबजिहि जाहि करेहु॥तावौं
नाही अंकसौं गुणाइक सुनादेहु॥३॥वर्षल
ग्न प्रवेश ज्ञाने॥वीतेवर्ष सवाइ बारि दिनसं
ख्या सोहोइ॥अर्द्धसु घटिका जानिये ऊपोढ़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पलगानिसौंइ॥५॥जन्मसमैं कौ दिनघटी पलमैं देहु मिलाइ॥सप्तमप्त हरिकौलहां वर्चैशेषैं जोभाइ॥५॥जौनलग्न ह्वै तिहिसमय वर्षलग्न सौं मानि॥जैसेग्रह जामैंपरैं कहो शुभाशुभ जानि ६॥मुंथा ज्ञान॥जन्मलग्न गतवर्ष युत द्वादश भोगविचार॥शेषमाहिं मुंथा समुझि मेषादिक निर्धार ७॥मुंथाफल॥नवमें दशमें एकादशे पांचतीन दैएक॥इतनेमें सुखशेष महजानहुदुकखअनेक॥८॥मुंथाह्वै जिहिधाम मेंस्वामीवा शुभहोइ॥कैदेखैकैसंग रहै अशुभनव्यापैकोइ॥९॥वर्षेश ज्ञान॥वर्षजन्मदोउ लग्नपति मुंथापति पुनिजान॥त्रयराशिक दिनरैन पति इनमें जोबलवान॥१०॥वर्षलग्न को पुनि लखै तिहिजानो वर्षेश॥बलसमान फलदेतहै प्रकृति प्रमाण हमेश ११त्रय राशि पति॥सूर्य शुक्र शनि शुक्र गुरु चंद्र सौम्य कुजसाथ॥मन्दभौम गुरुचंद्रस मेषादिक दिननाथ १२॥जीवइंदु बुध भौमरवि शुक्रमन्द भृगुजानि॥मन्दभौम गुरुचन्द्र शनि त्रयराशिक पति ज्ञान॥१३॥यथाचक्र॥दिनपतिवानिशिपति२

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
दिन	सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं
रात्रि	वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं

ज्ञान॥सूर्यहोइ जिहिराशिमें पतिताकोदिन दिश॥चन्द्रराशि पतिरात्रिपति वर्षकालकौंधी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्र॥१५॥मुद्रा दशा ग्रहनि॥ जन्मलग्न लौं गनत है
कातिकातैं सुजान॥वीतिवर्षहि जोरिकै भाग
जु नवकौं ठौन॥१५॥अष्टादश अरुतीस पुनि
इकइस चौवन होइ अडतालिस सत्तावनरुका
हन इकावन लौंइ॥१६॥इक्किस साढ़ै सहित
भए वर्षदिवस परिमान॥आचंकू राजी शवू
कोसु नवग्रह जान॥१७ इति॥अथवास्तु षोडशग्र
हनाम भेद॥पूर्व ध्रुवाइक जानिये दैदक्षिणको
होइ॥पश्चिम चारिसु कहतहैं आठउत्तर दिशि
सोइ॥१८॥पूर्वआदिचारिहु दिशा दुगही जिहि
जिहिठौर॥ ध्रुवासबनिको जोरिकै एकामिलावो
और॥१९॥जोदुगही कहुँहोइ नहि चहू दिशामे
मीत॥तौएकहि तहँजानिये पहिलेनामपुनीत॥
२०॥ध्रुवसुधान्य जयनन्द खर कांतिमनोरम
जानि॥सुमुखवरु दुर्मुख उग्रपुनि रिपुदनु वि
तदमान॥२१॥नाशगंद विपुल विजय एई
षोडशनाम॥द्वारहिते पूरव समुझि जानिकुठौं
म सुठाम॥२२॥पंचनवम दश सुद्पुनि तेरह
चौदह हीन॥शेषसुफल ग्रहजानिये षष्ठमि
त्र फलचीन॥२३॥अथगृह द्वारफलम्॥अ
ष्टभाग तिहिदिशि करो द्वारगेह जहँहोइ॥द
हिने दिशितैं जानिये ताहिफाला फलजोइ॥
२४॥दोइतीनि अरुचार फल पूरवदिशि है
नीक॥दक्षिण माहीं एकही चौथोभाग सुठीक
२५॥पश्चिम महँदैशुभ कहे चौथो पंचम जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

ना॥उत्तर तीजो चौथ पुनि पंचम शुभ त्रय मान २६
अथ कूप फलं॥उत्तर अरु ईशान पुनि पूरब पश्चिम
सुकख॥शेष पंच दिशि में भए कूप करै अति दुकख २७

अथ द्वार अरु कूप चक्रम्

| ईशान | | |

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशिवरवानि॥ जलचर भक्षण अलिविना सिंह राशि वसमानि॥ ३१॥ और नको व्योहारतैं वैर मित्रता जोइ॥ वरकन्याको मित्रलखि व्याह किये सुखहोइ॥ ३२॥ गण॥ वरकन्याको नखततैं गनौ परस्पर अंक॥ नौको भाग दियेवचै तीनिपांच मुनिशंक॥ ३३॥ अथ योनि चक्रम्॥ प्रथम दुति

अश्व	सिंह	मेष	नेउर	मृग	मंजार	गाय
अश्वि	धा पू भा	पू क्ष	उषा आभ	ज्ये अ	पुन श्लो	वि चि
महिष	गज	कपि	सर्प	स्वान	मूषक	गऊ
स्वा ह	रे भ	अ पूषा	मृ री	मू आ	म पूफा	उभा उफा

यको शत्रुहै क्रमसौं करि निर्धार॥ अश्व महिष अरु सिंह गज इहि विधि करौ विचार॥ ३३॥ मन हमैत्री चक्रम्॥ ५॥ वरकन्याको राशिपति होहिं

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
मित्र	मं बृ चं	सू बु	चं सू बृ	शु सू	चं सू मं	बु श	शु बु
सम	बु	मं बृ शु श	शु श	मं बृ श	श	मं बृ	बृ
शत्रु	शु श	०	बु	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं

मित्र समजोइ॥ दोनोकौं शुभजानिये दुःख अमित्र गनोइ॥ ॥ ३४॥ गण चक्रम्॥ वरकन्या दुवाग

राक्षसगण	म	श्लो	ध	जे	मू	क्ष	चि	वि	श
मनुष्यगण	पूफा	पूषा	पूभा	ऊफा	ऊषा	उभा	भ	री	अ
देवतागण	अ	मृ	पु	पु	रे	स्वा	ह	अश्वि	पू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रा सरस मध्यम मानुष देव ॥ कालह देव राक्षस
कौरे मृत्यु असुर नरभेव ॥ ३५ ॥ भकूट ॥ ७ ॥ षष्ठ
सु अष्टम मृत्युगनि नवपंचम सुनहानि ॥ द्वै
द्वादश दारिद्र कहि दुहुन राशितैं जानि ॥ ३६
वर्ग वर्ग गणयोनि पुनि अरुभकूट जौदुष्ट
ग्रहमैत्री शुभहोइतौ सकाल जानि अति पुष्ट
३७ ॥ नाडीचक्रम् ॥ ८ ॥ इकनाडी जो दुहुनकी

१नाडी	अ	आ	पु	उ	ह	ज्ये	मू	श	पू	०
२नाडी	भ	मृ	पू	पू	चि	अ	पू	ध	उ	०
३नाडी	कृ	रो	श्ले	म	स्वा	वि	उ	अ	रे	०

कै विधवा कैवाँझ ॥ द्वैनाडी सौं जानिये सदारहै
सुखमाँझ ॥ ३९ ॥ इति अष्ट प्रकारणम् ॥ पुनः अ
ष्टवर्ग ॥ गरुड़ स्वान मंजार हरि सर्प मूख करि
मेष ॥ अटक चतप यश वर्गादिग पंचम शत्रु
गरोश ॥ ३९ ॥ विवाहको नक्षत्र शुभ ॥ रोहिणि
स्वाती रेवती अनुराधा अरुमूल ॥ तीनि उत्तरा
मृगशिरा मघाहस्त अनुकूल ॥ ४० ॥ विवाह-
के शुभमास ॥ माघव्याह जानारिको धनवंतीहै
सोइ ॥ व्याह होइ जो फागुमें सदा सुहागिनिहो
इ ॥ ४१ ॥ व्याहहोइ जावामकौं जेठ और वैशाष ॥
सोपीतम प्यारीतिया कहै सकाल बुध भाष ॥
४२ ॥ जाकौंव्याह असाढ़में वाढ़ै बहु परिवार ॥
पाँचमास शुभ व्याहको मुनिजन कहत पुका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रा॥४३॥इति विवाह विधि॥ अथ प्रश्न विचार॥वा
हुसलोभा लाभको जियन मरणको वीस॥सुखदु
खको अडतीस है गमना गमन छतीस॥४४॥ज
य पराजय चौतीस गन वषावर्ष वतीस॥तीसभ
या भय जानिये दुहिविधि भुवा गनीस॥४५
फल अक्षर में जोरिको भागतीन सौलेहु॥उत्त
म मध्यम अधम पुनि क्रमसौं फलकहिदे
हु॥४६॥पुत्रीपुत्र विचार॥गुरविन नामाक्षर
विषे तिथिहि मिलै इकाहीन॥विषम पुत्रस
म पुत्रिका नवको भाग प्रवीन॥४७॥पुनः
चौदह सौं नामाक्षरहि गुणि अटाइ इकादेहु॥
नौसौंहरिको समविषम पुत्रीपुत्र गनेहु॥४८
पुनः नामाक्षर गुरविनि मिलै तिथिनक्षत्र
अरुवार॥हरिको त्रयसौं समविषम पुत्रीपुत्र
विचार॥४९॥पुनः प्रश्न लग्नतें विषम में
शनितौ पुत्रवखान॥समममहि कन्या जानिये
दुहि विधि जानु प्रमाण॥५०॥आनंद दूत्या
दि अट्ठाइसो योग॥वाहो अट्ठाइस योगजो न
खत वार मिलिहोइ॥उत्राषाढतरेरहै अभि
जित जानहु सोइ॥५१॥चारिघटी षाढांतकी
श्रवण चरण इकजान॥दुहिविधि अभि
जित नखतकी वनदुस घटी प्रमाण॥५२॥
अश्विनि मृगशिर जानिये अश्लेषा पुनि ह
स्त॥मित्र उत्तराषाढ़ पुनि शतभिष वार प्रस
स्त॥५३॥प्रथम योग आनंदहै कालदंड पुनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जान॥धूमरु धाता सौम्यकहि ध्वांक्षकेतु पहि
चान॥५४॥श्री वत्स वज्र मुद्गर कहत मित्र
छत्र पुनिजान॥मानस पद्मजु लंबउतपात
मृत्यु किलकान॥५५॥सिद्ध शुभ अमृत व
हुरि मूशल गदमातंग॥राक्षस चर अस्थिरग
नो परवर्द्धन केसंग॥५६॥इनमें तेरह योगकी
घटी त्याज्य सुनुताहि॥ध्वांक्षवज्र मुद्गरस्त्र
य पांच पांच तजुयाहि॥५७॥चारि पद्म अ-
रु लंबकी गदमुनि धूम्रजु एक॥कान मुश
ल द्वै द्वै घटी त्यागहु सहित विवेक॥५८॥रा
क्षस मृत्यु त्यात पुनि कालदंड एचारि॥त्या-
गन योग समस्त गनि शेष पंचम दशसार॥

६० अथसाठों सम्वत्नाम

प्रभव विभव अरु शुक्ल प्रमोद प्रजापति जान॥
अंगिरा श्रीमुख भावपुनि जुवाजु धाता मान॥
ईश्वर अरु बहुधान्य कहि प्रमार्थि विक्रम होइ
वृषचित्र भानुसु भानपुनि तारणपार्थिव जोइ
६२॥व्ययलौं वीसभरजुए ब्रह्मा वीसी जान॥
सर्वजित सर्वधारीजु पुनि विरोधिवि कृत मा
न॥६३॥खरनंदन अरु विजय पुनि जय मन्म
थ दुर्मुख्य॥हेमलंब सुविलंब पुनिजानु विका
रीमुख्य॥६४॥सर्वरिप्लव पुनि शुभसु कृत शो
भन क्रोधीजानु॥विश्वावसु अरुपरा भव वि
षाणवीसिपरमानु॥६५॥प्लवंगरु कीलक सौम्य
कहि साधारण पुनिजान॥विरोधिकृत परि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथसुयोग कुयोग चक्रम्॥

वारनाम	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
मृत्युयोग	नंदा	भद्रा	नन्दा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा
दग्धनक्षत्र	भ	चि	उषा	ध	उषा	जे	रे
करकच अथमयोग	१२ ७	११	१०	९ १	८	७	६
दग्धयोग	१२	११	५	३	६	८	९
विषयोग	४	६	७	२	८	९	७
हुताशयोग	१२	६	७	८	९	१०	११
यमघंटयोग	म	वि	आ	मू	कृ	रो	ह
सिद्धयोग	ह.मू. उ.३ अ.पू.	अ.रो. मृ. पू.उ.	उ.भा. अ. कृ.स्वे.	रो.अ. ह.कृ. मृ.	पु.रे. अ.अ. अ.पू.	रे.पु. अ.अ. अ.	अश्वि. स्वा.

धाविकहि प्रमार्थि आनंद मान॥६६॥राक्षस नल पिंगल वहुरि काल युक्त पुनिहोइ॥ सिद्धार्थ रौद्र दुर्मति वहुरि दुंदुभि कहे सवकोइ ६७॥रुधिरोद्गारी कहत रक्ताक्षसुक्रोधनजान॥ क्षयलगि वीसी रुद्र की नामसाद परिमान॥६८॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

चरण	१	२	३	४	उपचार
म	९	११	१०	८	ब्राह्मणभोजन
भ	१०	६०	५०	३०	छायादान
क	९	१२	११	२८	ब्राह्मणभोजन
रो	०	९	२८	३०	कुमारीभोजन
मृ	३०	९	२०	२१	गोदान
आ	०	१८	०	०	वृषदान
पु	७	१४	२१	३०	नवग्रहपूजन
पु	७	७	२०	२१	पीतवस्त्रदान
श्ले	०	०	६०	०	स्वर्णसर्पदान
म	१५	७	२०	२८	श्वेतवस्त्रदान
पू	०	१५	०	१६	गोदान
उ	७	१२	७	६	सुवर्णदान
ह	१५	७	१५	७	गोश्वेतदान
चि	११	९	९	१६	वृषदान
स्वा	६०	१७	३०	०	लालगोदान
वि	१५	१८	१६	१४	श्यामवृषदान
अ	६	१२	२०	३०	छायादान
जे	९	५	९	१६	पीतवस्त्रदान
मू	०	९	१५	७	छायादान
पू	०	१५	१४	०	सुवर्णदान
उ	३०	३१	२४	१४	ब्राह्मणभोजन
अ	१५	२०	६०	४५	सप्तधान्यदान
भ	६०	२४	७	१६	गोदान
ध	१५	१६	२८	२५	छडीखडाऊउपरनादान
शा	०	०	८	१६	स्वर्णपात्रदान
पू	०	१६	५०	९	श्वेतवस्त्रदान
उ	१५	७	५	४	स्वर्णजात दान
रे	१५	२०	१६	१६	वृषदान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूति राजा वा मंत्री मेरा॥ वैद्य कुल परिवा समय
सूर्योदय जो वार॥ राजा ताहि वखानिये फलप्र
कृति अनुसार॥६९॥ सूर्यहोइ जब मेष को ता
हि समय दिनसोइ॥ मंत्री नाको जानिवो कहो
शुभाशुभ जोइ॥७०॥ वायु परिक्षा॥ आषाढ़ी पू
नो दिना वायु परीक्षा जानु॥ तामें अग्निरु दक्षि
णहु नैऋत अशुभ वखानु॥७१॥ संक्रांती शु
भाशुभ॥ संक्रमते संक्रमन जो वारसका दैतीन
परैतो जानो शुभसमय सलनो अन्नहि चीन॥
७२॥ चारि पांचमें महंग अति सप्त अष्ट दुर्भिक्ष।
पीडित जगको नरहै मिलैन अन्न सदृक्ष॥७३
छीक शुभाशुभ विचार॥ सैनरु आसन दानपुनि
हभोजन अचारि॥ छीकहि दुर्लभ जानिये पंडि
त कहैं विचारि॥७४॥ लाभशोक अरु हानि पुनि
प्रियसंगम शुभ भोज्य॥ संपति कलह धनागम
न अष्टादश फलज्येष्ठ्य॥७५॥ प्रथम पहर पू
र्वादिगनि दूजे आनी जान॥ पिरदूहि कामते स
र्वदिशि छींक शुभाशुभ मान॥७६॥ सर्वकालमें
शुभकही अर्द्धऊर्द्ध जो होइ॥ ब्रह्महोका वाहि
छीवाको भाषत पंडित लोइ॥७७॥ सप्तवार
नमें कर्तव्य कार्य॥ अभिषेकरु मंगल गवन पौ
षिवावाहन जान॥ औषाधि सेवा औरु गनि र
विको दूतने काज॥७८॥ संषरु मुक्तानार क
षि रूपा भूषण फूल॥ यन्त्रनारि वयगानन
रु सोमवार अनुकूल॥७९॥ चोरी बंधन अग्नि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Sarayu Trust.

विष विग्रह संधि प्रवाल ॥ धातु रवानि शुभ भौम
दिन बसन पहिरवो लाल ॥ ७० ॥ सिल्पि वाद
रगाघात अस संग्रह नित्यसु गान इतने का
ज शुभ कहि बुद्धवार को ज्ञान ॥ ८१ ॥ पौष्टिक
मंगल यन्त्र नृप वाहन कंचन नारि ॥ रत्नवि
भूषण तमलाला गुरुको शुभद विचारि ॥
८२ ॥ वाजन भूषण भूमिहय गोवारि रत्न दुका
न ॥ नारि अन्न कंचन रुरवद भृगुको नृत्य गान
८३ ॥ लोहा सीसा पापविष मिथ्या वास्तु प्रवे
श ॥ हठ थर नाथिर काम शुभ शनिको ज्ञान
विशेष ॥ ८४ ॥ इति ॥ अथ शिवोक्त मूहूर्त ॥ वा
रयोग नक्षत्र तिथि कारी चंद्रबल काल मूल
योगिनी सकल ए त्यागु सर्व जंजाल ॥ ८५ ॥

शिवालिखित अब लोकिको नि
श्चय मनमे राखि ॥ किये कार्य
सब होहि सिद्ध पंडित जनको
साखि ॥ ८६ ॥ आश्विन कार्तिक
अगहन नरु पौषएक क्रमजा
न ॥ ज्येष्ठ आषाढरु एवा पुनि
पौष तृतीय बखान ॥ ८७ ॥ मा
हेंदुरु अमृत कहत वक्र शून्यपु
निहोइ ॥ विजय शोभन विल
ब कहि चौथे मरण मनोइ ॥
८८ ॥ ४८ ॥ ६ ॥ २५ ॥
१७ * १७ * १७ * १७ *

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अश्विन कार्तिक मार्गशीर्ष पौषानाक्रम

रवि	भू. अ. व. अ. भू. भू.	रवौ	व. भू. अ. भू. व. मा.
दिवा	२ ६ ८ ८ २ ४		५ ४ २ ६ २ २
चं	अ. भू. अ. व.	रा.	व. अ. व. अ. व.
	४ ४ ६ १६		६ ८ ८ २ ६
मं	अ. भू. अ. व. मा. भू. अ.	रा.	अ. व. भू. अ. व. मा. अ. भू.
	८ २ ६ ४ २ ४ ४		२ ४ २ ६ ४ ४ ४ ५
बु	अ. व. अ. भू. व. मा. भू. अ.	रा.	भू. अ. मा. व. भू. अ.
	८ ६ ४ २ ४ २ ४ ४		२ ६ ४ ४ ४ १०
बृ	मा. भू. अ. व. अ. व. भू.	रा.	भू. मा. व. अ. भू. अ. भू.
	२ ६ ८ ८ २ २ २		४ ४ ८ ४ २ ४ २
शु	अ. व. अ. व. अ. भू. अ.	रा.	अ. व. अ. भू. अ. भू. अ.
	२ २ ६ ६ ८ २ ४		२ ४ ८ २ ८ २ ४
श	मा. भू. अ. भू. व. भू. अ. भू.	रा.	व. भू. अ. भू. अ. मा. अ.
	२ ६ ८ २ २ ४ ४ २		४ २ ६ ४ ८ २ ४

ज्येष्ठ आषाढ योगाम:

रवि	भू. अ. व. अ. व. अ. भू.	रवौ	अ. भू. व. मा. व. भू.
दिवा	४ ६ ४ ६ ४ ४ २		४ ४ ४ ६ ८ ४
चं	व. अ. भू. व. मा.	रा.	व. अ. व. अ. व.
	८ ४ ६ ६ ६		६ ८ ८ २ ६
मं	अ. व. अ. व. भू. व.	रा.	मा. अ. भू. अ. व. मा. भू. व.
	२ २ ८ ६ ६ ६		६ २ २ ४ ४ ४ ४ ४
बु	अ. मा. अ. व. अ. भू. व.	रा.	व. अ. भू. मा. अ. भू. व.
	२ २ २ ६ ४ २ १२		२ २ २ ६ ४ २ १२
बृ	अ. व. भू. व. भू. अ.	रा.	व. अ. व. अ. व. अ.
	८ ६ ४ ६ २ ४		२ ८ ६ ६ ६ २
शु	अ. व. अ. व. अ. भू. अ.	रा.	व. अ. भू. मा. व. अ. भू. अ.
	२ २ ६ ६ ८ २ ४		४ ४ ४ २ २ ६ ४ ४
श	भू. व. भू. अ. भू. मा. व.	रा.	भू. व. अ. व. अ. भू. मा.
	४ ४ ४ ८ २ ४ ४		२ ४ ६ ४ ४ ४ ६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मध	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	श्रावण	भादुपद	स्थ	श्राम
रवि	मा॰	श्र॰	व॰	शू॰	मा॰	रवी	शू॰	मा॰	श्र॰	व॰	शू॰	मा॰	श्र॰
शिवा	२	८	१०	८	२		२	४	४	६	६	२	८
चं	श्र॰	शू॰	श्र॰	शू॰	श्र॰	रा॰	शू॰	श्र॰	व॰	मा॰	श्र॰	शू॰	श्र॰
	८	८	८	२	४		२	४	८	२	४	४	८
मं	व॰	शू॰	श्र॰	व॰	शू॰	श्र॰	शू॰	रा॰	श्र॰	शू॰	श्र॰	व॰	मा॰	श्र॰	शू॰	श्र॰
	८	२	६	४	२	४	४		२	४	२	६	४	४	४	२	२
बु	श्र॰	व॰	मा॰	शू॰	शू॰	श्र॰	रा॰	शू॰	श्र॰	मा॰	व॰	शू॰	श्र॰
	४	६	४	२	४	१०		२	६	४	४	४	१०
बृ	मा॰	शू॰	श्र॰	शू॰	श्र॰	शू॰	रा॰	शू॰	मा॰	व॰	श्र॰	शू॰	श्र॰	शू॰
	२	६	८	४	६	२	२	४	४	८	४	४	४	२
शु	शू॰	श्र॰	व॰	श्र॰	शू॰	रा॰	व॰	शू॰	श्र॰	व॰	श्र॰	मा॰	श्र॰
	२	१६	८	२	२		४	२	६	४	८	२	४
शा	शू॰	व॰	शू॰	श्र॰	शू॰	व॰	शू॰	श्र॰	रा॰	शू॰	व॰	श्र॰	व॰	शू॰	श्र॰
	४	४	२	८	२	२	४	४		२	४	६	४	४	२	४	४

इति श्री तुलसी शब्दार्थ आदि प्रकाशे ज्योति षविचार अष्टम भेदः॥

अथ पिंगल विधि नवम भेदः॥ ९॥ पिंगल भाषा शेषको कविन सुगम सोकीन्ह॥ गा-कोसारस सहज सुख छंद नको नाम चीन्ह॥ रामायण तुलसी भणित छंद भयो दृग जान वरण वृत्ति षट सप्त पुनि मात्रा वृत्ति प्रमान २॥ तिनके लक्षण गण रहित पिंगल मति अनुसार॥ कहो प्रगट हियमें धरे सज्जन सु मति सुधार॥ ३॥ गुरु लघु दृत्यादि विचार॥ आदि ऊ ए ऐ स औ औ अं अः गुरु जान॥ शेषनी नि आदु सुलघु गुरु लघु को पहिचान॥ ४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संयोगी के आदिगुरु दीरघ बिंदु समेत ॥ इकेल
घु इनते भिन्नजो लघुगुरु अंतहि देत ॥ ५ ॥
तीनि वरण बिनु गरणनहीं गरणबिनु छंदन
होइ ॥ यातें गरण गुण नामवपु वरनो सुनि
ये सोइ ॥ ६ ॥ वक्र चिन्ह गुरु वरणकोऽवा
ला जासुकी होइ ॥ सरल रेख लघु चिन्ह
कहि इक काल जाकी होइ ॥ ७ ॥ अथ ग
णगरण स्वामी फलसहित उदाहरण ॥ क
वित्त ॥ वरणतहैं मगरणनि त्रिगुरु ऽऽऽ छि
त श्री अनेक सही आदि लघु ।ऽऽ सोमग
ण जलहद्धि मान बीचस्वा लघु ऽ।ऽ सौमौ
र गरण अगिनि होइ गुरु अंत ॥ ऽ सगरण प
वनसो भये निदान जामै लघु अंत ऽऽ। सो
इंद्र गरण नगन शून्य जहां गुरु मध्य ।ऽ।
सो जगण रवि पीडै प्राण आदि गुरु ऽ ॥
भगणको स्वामी यशि यश फल नगण
त्रिलघु जाको देत वर बुद्धि दान ॥ ८ ॥ त्रिगु
ण विचार ॥ दोहा ॥ मगण नगण को मित्र गु
न यगण भगण को दास ॥ उदासीन जत
जानिये रसरिपु कोशो दास ॥ ९ ॥ कवित्त ॥
मित्रतें जो होइ मित्र बाढै बहु बुद्धि रिद्ध २
मित्रतें जो दास त्राण बुद्धते नजानिये ॥ २
मित्रतें उदास गण होम गीत दुःख उहै २
मित्रतें जो शत्रु होइ मित्र बंधु हानिये ॥ दा
सतें जो मित्रगण काजसिद्ध को यश दास दा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सौं जो दास सब जीव वस मानियै॥ दासतैं उ
दास होत धननाश आस पास दासतैं जो
शत्रु मित्र शत्रुसौं वखानियै॥ १०॥ जानियै उ
दासतैं जो मित्रगण मुच्छ फल प्रवाद उदा-
सतै जो दास प्रभुलादयै॥ छोदू जो उदासतैं
उदासतौन पाला पाल जो उदास होतै शत्रु
तौन सुख पादयै॥ शत्रुतैं जो मित्रगण ता-
हितो अफल गनु शत्रुतै जो दास आस व
निता नसादयै॥ शत्रुतै उदास कुल नाशहोय
कोशो दास शत्रुतै जो शत्रुनाशनायकोगा
दयै॥ ११॥ वरण वृत्त छंदे आदौ अनुष्टुप्छं
दलक्षण॥ दोहा॥ नियम नहीं जहं चौथिलौं
पंचम लघुगुरु षष्ठ॥ सप्तम लघुयुग युग्म
को पद्यहोय वर्णाष्ठ॥ १२॥ यथा॥ वर्णाना
मर्थ संघानां इत्यादि १ द्वितीय मार्दूल वि
क्रीडितल॰॥ प्रथम तीनिलै छोदू गुरु षष्ठ
अष्ट तिमि मान॥ एका दशशो तीनि पुनि
षोडशमैं युग जान॥ १३॥ विरति होय जहं
वारहै पुनि सातएं प्रमाण॥ सार दूल वि
क्रीडि लहि कवि जन करहिं वखान॥ १४
यथा॥ यन्माया वसवर्ति विश्व मखिलं इत्य
दि २ तृतीय वसंततिलकाल॰॥ प्रथम दु
तीय चतुर्थ पुनि अष्टम हूं गुरु छोदू॥ एका
दश अंतिम युगल तिलका कहिये सोदू॥
यथा॥ नाना पुराण निगमा गम इत्यादि ३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

चतुर्थ प्रमाणि कालं॥ लघु गुरु वर्ण जानिये॥
प्रमाणि का प्रमाणिये॥ वर्ण आठ प्रानिये॥
हयाल रामजानिये॥२६॥ यथा॥ नमामि भक्त
वत्सलं॥ इत्यादि॥ याही को नगस्वरूप पिंगल कहते
कहते हैं॥ ४॥ पंचमें तोटक कालं॥ सगण जहँ चा
रि रु तोटक कहै॥ इक पाछु सोरह मात्र कहै॥
वर्ण निधिराम कृपाल भजो॥ फिरते भव
को भय भारत जो॥२७॥ यथा॥ जयराम रमा
मनं समनं॥ इत्यादि॥ षष्ठम भुजंग प्रयात स्व
रो चार चारी पगन्ना सुहाये॥ ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।
ऽऽ इटो द्वादश वर्ण चार सुपाए॥ असी मत्त
चौपाय कीजे समाजो भुजंग प्रयातो भनैना
गराजो॥२८॥ यथा॥ नमामीश मीशान निर्वा
ण रूपं॥ इत्यादि॥ ६॥ मात्रा छन्द छंदे प्रथम दो
ल॥ विषम वर्ण तेरह कला रमाशिव गुरु
लघु अंत॥ सोदोहा भुज श्याम घन रामजा
नकी कंत॥२९॥ तेइस विधिसों जानिये पु
नि दूखित काहु सोइ॥ पहिले तीजे चरणमें
जाके जगण जु होइ॥३०॥ दुतिय सोरठा
ल॥ उलटि दोहरा पाय पढ़ि ऐसोई सोरठा
भजिले कौशल राय सीतावर सुंदर सुखद
३१॥ तृतीय चौपाई ल॥ पन्द्रह कै सोरह
कल राखु तासु नाम चौपाई भाखु भजि
ये सुन्दर रामसुजान॥ सीतापति कृपाल भग
वान॥३२॥ याकी पादा कुल काहू कहत हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

३ चतुर्थ हरिगीत ल०॥ वाल प्रथम सोरह व
हुरि वारह रगण जामैं अंतहै ॥१॥ हरिगीत
नाम सुछन्द सुन्दर वीस वसु वाल मांनहै
२८॥ भजिराम रघुवर जानकी वरदीन दु
खहर दासके॥ सवसोच मोचन कमल लोच
न चरण शरणो तासुके ॥२३॥ यथा॥ मं
गल करनि कलिमल हरनि इत्यादि ज्ञे
यं॥४॥ पंचम चौपयाल॥ पद्य महिंदह दीजे
पुनिवसु कीजे वारह वहुरि विचारो॥ मन्ना
नहं तीसै उत्तम दीसै चरण अंतयुग धारो॥
जयजय घनश्यामा सुन्दर रामा कृपासिंधु
सुखकारी॥ मैशरण निहारी तुम अघहारी
करहु सहाय हमारी॥२४॥ यथा॥ भयप्रगट
कृपाला दीन दयाला इति ५ षष्ठमैं त्रिभंगी
ल०॥ दश वसु वरह छंदपर विरति विहित वर
सकल वाला वचीत्त धरो सो छंदत्रिभंगी तुकदु
क रेगी छविरंगी गुरु अंतकारो॥ भजिश्या
म लालामैं हरिछवि धामैं पूरण कामैं ना
मैजू॥ मोहैं सुखकारी अवध विहारी वलवलेहगोप
मैजू॥२५॥ यथा॥ परसत पदपावन शोकनश
शावन इति ६ सप्तम तोमर छंद ल०॥ संग
णानु द्वैज गणानु ॥१॥१॥१॥ वरछंद तोमर
जानु॥ भजिराम सुन्दर श्यामास्तुवधामजै
अभिराम॥२६॥ यथा॥ जयराम शोभाधा
म॥ इत्यादि ज्ञेयं ७ इति तेरह छंदपिंगल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुसारे॥दोहा॥ दूसरे [illegible] ग्रंथ को
ओ कबिन प्रबंध॥ तिहि विस्तार विचारि बहु
ग्रंथ प्रचार निबंध॥२७॥ दूहा प्रयोजन गरण
अगरण और सुगुण को काहि॥ एकै गुण र
घुबीर गुण त्रिगुण जपत है जाहि॥२८॥
ताहि गुनै सोई सुराति गिरा गुणी गण राम
अरु रोषहु सुमिरत सदा मनवच कर्म
सुभाय॥२९॥ भायन तैंसे भजत हैं तजत
मोह मन मान॥ सजत सकल सुख सुय
ग जग तिनको कहा बिमान॥३०॥ मान
मही मर्याद जग जौबन रूप अनूप॥ भज
न बिना भूषित मन लंका भूप अनुरूप॥
३१॥ रूप गयो यौवन जनम बडेवंश सवि
सास॥ विद्या भजन सुगंधि बिनु कुसुमनि र
गंध पलास॥३२॥ विद्या भजन बिबेक बिनु
काहा भयो बरवंश॥ विद्या सजन प्रभावते हो
त बुवंस प्रसंस॥३३॥ विद्या सोई सरसहै
जह बिप्र पत्ति बिबेक॥ सो बिबेक रघुना
थ को भजन बिधान अनेक॥३४॥ धनवि
हीन जन हीन नहिं धन कायो थिर होइ
विद्या भजन बिहीन मति हीन जानिये
सोइ॥३५॥ गुसाईं गुरुता वंशकी मन गु
रिग लीजे राम॥ पूजै सब वसुदेव कों वासु
देव के नाम॥३६॥ कविता नृपता दुहुन मैं
देखो बडो विशेष॥ नृपता नृपको देशमें का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विना देश विदेश ॥ ३७ ॥ रसहीरत जलबु
द्द घट पूरण जान प्रकार ॥ त्योंही विद्या ध
र्म धन बाढ़त लगैन वार ॥ ३८ ॥ १५ ॥ ५५
इति नव भेद ९

इति श्रीमत्सवाल सत्कवि संग्रह समूह सं
चित मति हुलसी श्री मत्तुलसी शब्दार्थ प्र
काशजन जय गोपाल दास विलास प्रथमः
प्रकाशः

॥ इतिश्री तुलसी शब्दार्थ प्रकाश संपूर्ण ॥

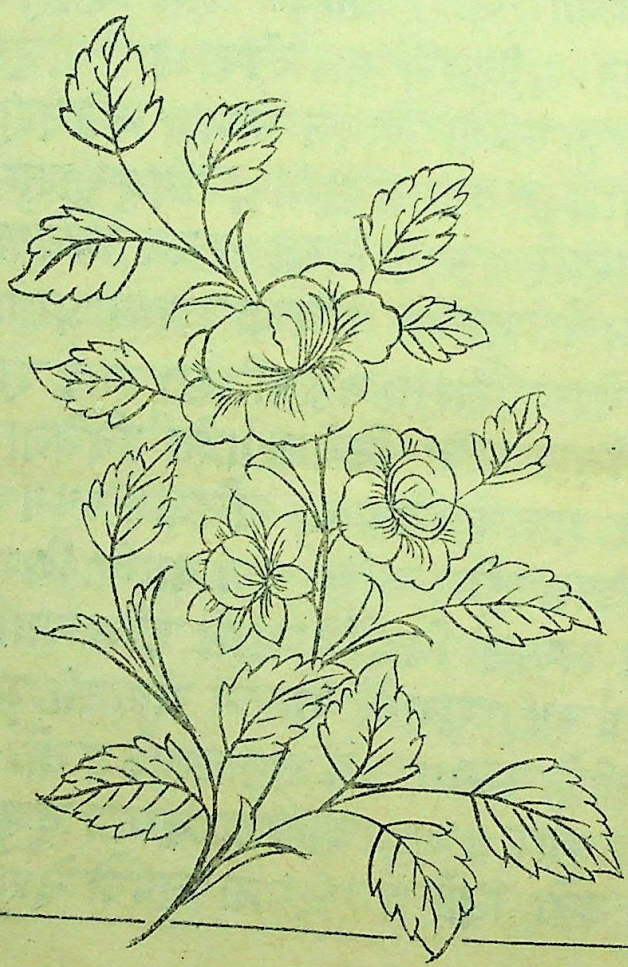

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust